

बि दे ह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मानक बिदेह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक



बि दे ह बिदेह *Vi deha*
बिदेह <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम मैथिली
पारिषद ई पत्रिका *Vi deha 1st Maithili*
Fortnightly ejournal नर अंक देखबैक लेन गुन
सबके बिदेह के देखे । Always refresh the
pages for viewing new issue of
VI DEHA. Read in your own script
Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur mukhi T
elugu Tami I Kannada Malayalam Hindi

ई अंकमे अछि:-

१. संगीदकीय संदेश

२. गद्य

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

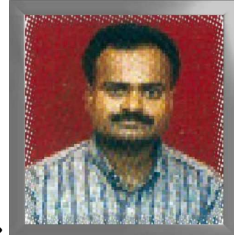
मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



२.१. जगदीश प्रसाद मंडलक दीर्घकथा- हाँसी



२.२. बाजुदेव मंडलक उंगुत्तास हमार ठैल- गङ्गा
थेगस आगु



२.३. डा. कैलाश हमार मिश्र- गंदर्वय्या अकाम



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X



२.४.१. अनुलेख- सगर बाति दीप ज्वल, आन्दोलन



आ रत्नभोज २. बिनीत उगेल आधुनिक मैथिली नाटक आ
छा नाटककारक जातिरादी बंगमटक अवधारणा/ सचि अकादेमी



कथा गोष्ठी: सगर बाति दीप ज्वल: एकठा रहल/ ३.
पुनर्मन्त्र- आवती रुमावी आ सगर बाति दीप ज्वल



४. आशीष अमरनाथ- बिदेह मैथिली समालोचन बंगमट/
जातिरादी बंगमटक भाषाक रीति



२.३.१. बिनीत उगेल पाठक- ओकर तौर पर रुमाव
संग-२

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X



२.६. अमित मिश्र- कथा - प्रेमक अंत



२.१.१. बाम भवाम कापडि भ्रमर- घबहूँ- उपाय



अभि २. टंढल हमार मा- बिहनि कथा- समय होत
बैठौल



२.१. सृजित हमार मा- साधना

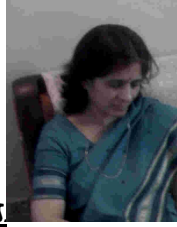
—



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

३. पद्य



३.१.१

कामिनी कायायनी- कामीक घट



२

शोभन कुमार



३.२.१

शारदाशर्मा २



जगदीशचन्द्र



सा.३.

रौचन ठाकुर-रघुनाथ

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह अथय मैथिली पक्षिक अ विदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

३.३.१



उत्तम पासराण २.



किशोर कावीश्वर

३.४



वैष्णव साहू

३.३.१



सुगन्धि लसाद फलव २
क्याव सा 'श्रीमो'



नवीन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA



३.६ शिरकाव मा 'ष्टि'



३.१ डा. शशिधर कामा



३.४ टंदा कामा मा- गजल/ करिता/ हागकु



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X



४. मिथिला कवि-संगीत, रंगीता कर्मावी ३. राजनाथ मिश्र



(चित्रमय मिथिला) ४. डेमेने मंडन (मिथिलाक
रसपति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)



३. रौवाण प्रते-रौन गज्जन टंदन कर्माव मा



डा. मेमिब कर्माव “बिदेह”-लेखन (रौनगीत)

१. भाषागत बचन-लेखन -[मासिक मैथिली, बिदेहक मैथिली-
अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (ऑनलाइन पत्रिका लेख सट-
टिप्पणी) एम.एस. एस.ए.ए. सर्व आधारित -Based on
ms-sql server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक (लेख, चित्र, तबहुता आ
देखनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेख नीचाँक लिंकपव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link .

बिदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कगमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.होड ।



"बिदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रिका प्राप्त कर ।



अपन चिन्ते बिदेहक विषयमे सुचित कर ।



1 बिदेह आब.एस.एस.होड एनीमेटेडके अपन साइट/ वेबसाइट पर लगाउ ।



वेबसाइट "वेबसाइट" पर "एड गाइडेड" मे "होड" सेक्शन कए "होड यू.एच.एन." मे

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पत्रिका ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगप केनसँ
सेहो बिदेह हरीड थानु क सकेत छी । गुगल बीडवमे पठरौ
जेन <http://reader.google.com/> पर जा कऽ Add a
Subscription रैषन निक कक ओ थानी खुशमे
<http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कक ओ
Add रैषन द्रौड ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha google groups



बिदेह लेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



Videha Radio



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४, गद्य-विद्वत्, ISSN 2229-547X)

VIDEHA

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहल
छी, (cannot see/write Maithili in
Devanagari / Mithilakshara follow links
below or contact at ggajendra@videha.com)
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउँ । संगहि बिदेहक तँत
मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू ।
<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रोज़ामे
ऑनलाइन देवनागरी ठाँग कक, रोज़ामँ कापी कक आ रड
डॉक्यूमेंटमे पोस्ट कए रड फाँगलकँ मेर कक । विशेष
ज्ञानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क
कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)
/ Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 /
Firefox 2.0 / Google Chrome for best view of
'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old
issues of VIDEHA Maithili e magazine in
.pdf format and Maithili Audio/ Video/
Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अंक
आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाँगल
सभ (उच्चारण, रीड स्वयं साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड
कबबैक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउँ ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, बाँकेकाब आ धमशिली विद्यापीठक स्थापना । भारत आ नेपालक माथिमे पसबन मिथिलाक धवती प्रार्थन कानहिँ महान प्रकय ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिला लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैलक पानरुमि कानक मूर्ति, एहिमे मिथिलाकरमे (१२०० रर्य प्रुरक) अभिलेख अकित अछि । मिथिलाक भारत आ नेपालक माथिमे पसबन एहि तबहक अग्रगण्य प्रार्थन आ नर स्थापन, छि, अभिलेख आ मूर्तिकनक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अध्ययन संगहि बिदेहक सर्त-गजल आ नृजल सर्ति आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेरेसाँष्ट सभक संग्रह सकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्क अध्ययन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह ज्ञानवृत्तक डिस्कसन होबऽपऽब जाई ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त) पब जाई ।

ए लेब मूल प्रकाश(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेब
अहाँक नजरिमे कोन मूल मैथिली पोथी उपयुक्त अछि ?

Thank you for voting !

श्री बाबूदेव मंडलक “अग्रवाल” (कविता-संग्रह) 13.56 %

श्री रंजन ठाकुरक “रंजनीक अपमान आ जीवनदेरी”(दुष्टा नाटक)
10.17 %

श्रीमती आशा मिश्रक “उच्छा” (उपन्यास) 6.44 %

श्रीमती गंगा साक “अव्युत्ति” (कथा संग्रह) 5.42 %



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्री उदय नावाय मिह “नटकेता”क “ला एन्थ्रीया प्ररिनि
(नष्टक) 5.42 %

श्री सुभाय चन्द्र यादवक “रैलेत रिंगडेत” (कथा-संग्रह)
5.42 %

श्रीमती रीणा कर्ण- भारवाक अष्टिगजव (कविता संग्रह)
5.76 %

श्रीमती शेषानिका रमिक “किन्तु-किन्तु जीवण (आमेकथा)
7.8 %

श्रीमती रिता बाणीक “भाग रौ आ रैमचन्द्रा” (दुष्टा नष्टक)
6.78 %

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह) 5.76 %

श्री तारावन्द रियोगी- प्रलय बहन् (कविता-संग्रह) 5.76 %

श्री महेश्वर मर्णियाक “डुतना रैन” (नष्टक) 7.12 %

श्रीमती नीता साक “देशे-कान” (कथा-संग्रह) 6.44 %

श्री मियावाम सा “सवसक रौडरे आगि रौडरे पाणि (गजव
संग्रह) 7.12 %

Other : 1.02 %



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

ए रैब रौन साहित्य प्रवर्धन(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेन
अर्हाक नजरिमे कोन मुन मैथिली पोथी उपहाउ अछि ?

श्री जगदीश प्रसाद मंडन जीक “तरेगन”(रौन-प्रेमक कथा
संग्रह) 48.33 %

श्री जरीकांत - थिथिबक रिश्चा 26.67 %

श्री द्वितीयक नाम “पिनपिनहा गाछ 23.33 %

Other : 1.67 %

ए रैब हारा प्रवर्धन(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेन अर्हाक
नजरिमे कोन कोन लेखक उपहाउ छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्योति सुनीत टोपरीक “अर्चि” (कविता संग्रह)
24.49 %

श्री रीति उषाक “रम प्रेक्षित छी” (कविता संग्रह) 7.14 %

श्रीमती कालिका “समयसँ सम्राट कलेत”, (कविता संग्रह)
6.12 %

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्री प्रदीप काशिक “रिचयदन्ती रवमान कानक बति” (कविता संग्रह) 5.1%

श्री आशीष अन्तिहावक “अन्तिहाव आथव”(गजल संग्रह) 24.49%

श्री अरुणोत्तम सौवर्णिक “एतरेँ ठा नहि” (कविता संग्रह) 7.14%

श्री दिगीप कुमार सा “कृष्ण”क जगल बहल (कविता संग्रह) 7.14%

श्री आदि यागारवक “भोथव पैमिनसँ लिखल” (कथा संग्रह) 5.1%

श्री उमेश मन्डनक “निस्तुकी” (कविता संग्रह) 11.22%

Other : 2.04%

ए लेख अन्तराद प्रकाश (२०१३) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेख अन्तराद नजरिमे के उपाय छु छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेश कुमार बिकन “याति” (मवाठी उपन्यास श्री रिशु सखाराम खल्लक) 35%



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्तर ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्री महेश्वर बाबाय्य बाय "कार्मेनीय" (कोकशी उपाय श्री दासोदर मारजो) 12.5%

श्री देवेश्वर बा "अश्वत्थ" (बाँझा उपाय श्री दिवाय्य पालित) 12.5%

श्रीमती मेषका मल्लिक "देशे आ अश्वत्थ करिता मत्त" (लपानीक अश्वत्थ मूल- बेरिका थापा) 13.75%

श्री प्रभु कमार कश्यप आ श्रीमती शशिबाबा- मैथिली गीतगोविन्द (जयदेव संस्कृत) 11.25%

श्री बाबाबाय्य सिंह "मनाहिन" (श्री तक्या शिरशेकव पिल्लिक मनायाली उपाय) 13.75%

Other : 1.25%

हमारे प्रचार-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर सहित अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री राजेश्वर नाथ दास 54.1%

श्री डा. अश्वत्थ 22.95%

श्री चन्द्रबाब सिंह 21.31%

Other : 1.64%



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

१. संपादकीय

जगन्निशे प्रसाद मन्दन- एकठाँ रायोआहने...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा
.....श्रीधर

आगु-

जगन्निशे प्रसाद मन्दन पाँट-ढुह रैथिक बहथि तखलसँ भागक संग
कुन ज्ञान नगना । गामेमे जाओव प्रौढगरी कुन, दु पाती
कुनन छलैत छन । अथन तँ आठम धरिक पठ गेह हूअ लागन
अछि तहिना एक शिक्षकसँ छलैत कुनन सेहो सतबह शिक्षक
धरि पहुँचि गेल अछि ।

तँए कि शिक्षा अग्रणी गेल ? जिनगीक लेल सरीगीन विकास
अनिरार्य अछि जँ से ले तँ ओ अग्रणी-विकसनी भेल पड़न
बहत । सामान्य कुन-कअ लेख तँ ठाम-ठीम रैलन हूअ
तकनीकी शिक्षाक विकास ले भेल । पश्चिम रैल गेल अछि जे
काजक दिशे रैदनि गेल अछि । खैर जे होई, हूअ
आजादीक पहिलो आ पछातियो लेबना राजनीतिक, शैक्षणिक
दृष्टिसँ अग्रणी ।

आजादीक आन्दा नमने रैचलु मित्रि उभड़ना । नरानी रिन्यानयमे
भगसियाक काज करैत बहथि । निथनाग तँ ले सीथि भेलनि
हूअ रक्षा भेल गेल । देशक प्रति ओल समर्पित जे
आजादीक दोड़मे तीन मास धरि भट्ट-रैलन रिला नूक, उमनि-



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उसनि खा दिस-बाति काज करैत बहनाह, आनन्दान गाम-गाम
पकड़ल बहल ।

काजैसँ गामदारी सेहो अरै छै । १९३४ ई.क. भूमकमक
पढाति बामेनक जे रैरावा हुअे लागल, तगमे एतेक
गामदारीक परिचय माधुसूदन थाबाये देलनि जे समाजक सब
हुनका गाँधीजी कहल गेलनि । तग सँग आलो-ओलो बहथि ।
रैबसा पंचायत रैबसैमे हुनकब योगदान रहल गेलनि ।
जलसँथाजक हिसारसँ, ओग समक पंचायतक हिसारसँ, रैबसा
छेष्ट पढ़ल बहल । सामाजिक सुधारसँ एतेक जे गाम-गामक
रीट अंगन-अंगन सरल । तँ के केकवा सँग बहत, ओ
समाज ।

हुदा दीप गामक लहलहाक सहयोगसँ, जे अंगन पंचायत काष्ट
पंचायत रैबसैमे सहयोग केलनि, पंचायत रैबन ।

पढाति रैचल मित्रक दिमाग गड़गड़ । गेलनि । ओना अस्मीहसँ
हुनक रैथीक उमेरमे हुनकाहु हुदा प्रभाव कम गेलनि । रैब
प्रभावित होलक काका दुष्टा भेलनि । पहिल पापिराविक आर्थिक
स्थिति आ देसब राजनीतिक क्षेत्रमे गामदारीक प्रभाव ।

हुदा अत-अत धरि समाजकें जगलैत बहनाह ।

जलिया राजनीतिक दृष्टिकर्म रैबसा गाम जागल तलिया शैक्षणिक
दृष्टिकर्म सेहो ओ गाम अंगन-अंगन बहन अछि । गाममे खुन
कहिया रैबन, एकब निश्चित तिथिक जानकारी तँ ले हुदा १९३४
ई. क. भूमकममे विद्यार्थक भित खसल, ओ जानकारीमे अछि ।
हुदा विद्यार्थक जगल रैदनि गेल । किएक तँ ओग जगलकें
जलमानस अंगन रैबल लागल । ओना ओ सुतल गामक अछि
सुतल छी, मैथिली जगल । अखन ओग सुतलमे रौन-रौधक
अ । गलरौरी छल बहन अछि । ओगठामसँ विद्यार्थक उछि

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

মঙগীকান্তক, বগাকান্ত সাহুক কচহৰীয়ে চলি আন। শুকসে
নকড়ীক খুঁপ্তাপৰ বাঁসেক ঘৰ বহি, আদা পঙাতি কচহৰী মিচান
মিচাৰী গুপ্তা গুপ্তা খড়ক ঘৰ বঁলোনি। ওগ কচহৰীয়ে ১৯৩২
জাক পহিন চানাক কেন্দ্র মেহো বঁলন।

ঐষ্টাবহম শিতাদ্বীপক পুৰিছিয়ে একহলে খড়কা মুনক পৰিৱাহমে প.
কচন সা আ প. ৰেঁও সা ৰৈদিক ভেনাহ। ওণা ওণ সময়ে
ঐগ্ৰেজী শিক্ষাক প্ৰচাৰ-প্ৰসাৰ লৈ ভেন ভন, ক্ষদা সঁকৃতি
শিক্ষাক স্না, স্মি যগ অৱস্থা ভন। স্না স্মি এ ভেন জে
সামাজিক ঠাটা, কিড ৰিডুৰখনা ভোড়া, ৰৈদিক পছতিস চৰৈত
ভন। আন্ত-আন্ত ৰিডুৰখনা ৰেঁঠি তে গেন। পভাতি ঐগ্ৰেজী
শিক্ষাক প্ৰভাৰ মেহো খৰ পডন।

୩. କଟକ ସାକ ସାକ ୩. ତୃତୀୟ ସା ପ୍ରମିତ ଗୋଟିଏ ସା ଧୂତି
 ପ୍ରାୟତଃ ରୈଦିକ ଭେଦ । ଦର୍ବତା ବାଉଁଶ ସାତ ମଏ ସୀସା ଜୁଗଳ
 ନାଥେବାଉ ଉଦ୍ଭାବ କମେ ଭେଦେ ଉପାସି । ଓଠ ମସେସେ କିମ୍ବଦନ୍ତୀ
 ତାହାସି ଗଢିତକ ସୀତ ସ୍ଥାନି ଲେ ଭେଦେ ଜାହାସି ଓ କାଶିମ୍ ଗଢା
 ଲେ ଧୂତି ଉଦାହ ।

পা. চিত্রধব ঠাকুর হৃদয়ে ঘবক ভগ্নিমাণ পবিরাব । পণ্ডিত
চিত্রধব ঠাকুরকৈ ত্রিণ ব্রাঁদক, পা. জয়নাথ ঠাকুর, পা. তেজনাথ

ପଢିତ ଓମ୍ବେନ୍ଦ୍ରୟ ମିଶ୍ର ସତର୍କ ଭିନ୍ନ ଭବାହ । ଏକ ସଂଗ ଜ୍ୟା । ତିୟ,
 ରେଦ ରା କବୀ, ମାହିଲ କ ରିଶେୟ ତ୍ରାତା ଭବାହ । କତେକୋ
 ମହାବିଦ୍ୟାଳୟେ ମେରା ଦୈତ ଶିବୀର ତିଆଗ କେବଣି । ସତର୍କ ଭିନ୍ନ ଓ
 ଏ ଐର୍ଥ୍ୟେ ଭବାହ ଜେ କୋଣା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟେ ଐବିକ ଦିଲ ଲେ ଷ୍ଟିକ
 ଗଢୈତ ଭବାହ । ମାନକ ଭୀତରେ କିଛି ଲେ କିଛି ଐଷ୍ଟଂଶ୍ଟ ଭଗୟେ
 ଜାଗତ ଭବାହ । ଜୁଅଲେ ଐଷ୍ଟଂଶ୍ଟ ହୋଗତ ଭବାହ, ମୋମେ ଘବହ୍ନି
 ରିଦା ଭଞ୍ଜ ଜାଗତ ଭବାହ । ହ୍ନଦା ଗାୟୋ ଏବାଗବ କେକରୋ କିଛି
 କହେତ ଲେ ଭବାହିଣି । କିୟୋ ଗୁଡୁରୋ ଲେ କବଣି ଜେ ଓଲିଆ ଏଲୋ
 ଆକି ମଗଡ଼ ୧-ଦାଲ କଞ୍ଜ କଞ୍ଜ ଏଲୋ । ଐହ୍ନୁତ ଗୁଣ ଭବାହି ଜେ
 ଐଗଲ-ଐଗ ରିଶି କଲେତ, ମଗଞ୍ଜ ସଂଗ ଐଗଲ କର୍ତ୍ତବ୍ୟାକେ ଭୁଞ୍ଜେତ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

देखि दोसर महारिद्यालय दिमि रिदा होगत दुनाह । खवास
छोड़ि एवमे कहियो जूता-पप्पामन ले पहिबनि ।

परोपष्टाक रिद्यालय रीट अपन पहिचान दुनि, जेसँ कोला
रिद्यालय, महारिद्यालयमे स्थावगत बहैत दुनि ।

पठित उदित बाबाबा मा, जे गोलडसँ सम्पादित दुनाह,
शिक्षण कार्य छोड़ि दोकानदारी बाररमाय केँ अपन ज़ीरिका
रहौनि । परिवारक स्थिति खबर दुनि । रिष उपावजले
टलेरैना ले दुनि । रुदा किहुए दिक मेहनतिक हल नीक
बैठैनि । ज़ीरन-यापन करैत रीस रीया ज़मीन परिवारमे
रहौनि ।

प. बाबाबाबा मा बासकबाक त्नाता दुनाह । शीरीबसँ पत्र
बहल शुक्रमे पुनिसक लोकरी शुक्र केनि, रुदा रिदेशी शोसनक
उठैत रिबोधमे लोकरी छोड़ि शिक्षण कार्यमे छलि एनाह ।
रैमिक युवन घोषवडिहामे प्रेसी ज़ीक रंग बहि मेरा देनि ।

गामक युनि नसँ १९३३ ई.मे ज़गदीने प्रसाद मंडन निकनना ।
गामसँ मठमे पुन कडरीमे मिडन युवन रैनि गेल दुन । तजसँ
पहिल पाँचमा धरि यु न दुन । मिडन युवन अनग रैनन ।
उना अखन दुनु मिलि एक त्ने गेल अडि रुदा पहिल दुनु
अनग-अनग दुन । पाँचमा धरि हलिस ले नलैत दुन रुदा ठठा-
मातमाये अत्राग कपेअ मलीषा हलिस नलैत दुन ।

१९३० ई.मे मिडन युडनसँ निकलि केजरीरान हागयु-न
समावपुवमे नाँउ लिखैनि । रैवमाक रिद्यार्थी तद्दुवियामे हाग
यु न आ समावपुवो हाग युमनमे साने-सान रिभा ज़त
होगत बहैत दुन । कावषो बहै । ज़ग कपक शिक्षकक ठीम
समावपुवमे दुन उग तबहक ठीम तद्दुवियामे ले दुन ।

तद्दुविया हाग यु नमे एक-आध शिक्षक साने-सान ज़ागत-



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अरौत दुनाह जखन कि समारपुवमे से ले दुन, जगसँ
समारपुवकेँ नीक मानन जागत दुन । जहिना गामक आन-आन
रिद्यार्थी पएले जागत-अरौत दुनाह तहिना अहो जागत-अरौत
दुना । किछ गोष्टे होस्टे लोमे बहेत दुना । सारो भवि किछ
ले किछ अस्वरिवा बहिने दुननि । ओना अथला किछ-किछ
हुहिये । सारो भवि ए तबहै बहे दुन ।

अगहनसँ माघ धरि दिना छोट होए, ह्रदा रिद्यानयक सम
छोट ले होगत दुन । काजक अगहन सम छोटले नि-
वातिमे अस्तुहव तनहि ले रूमि पड़ैत छै, ह्रदा गाम-घबक
लेन तँ ए कर्तिन अछिये । मौसमी छुट्टीक नाउंगव दिसपुवमे
रैद । दिक छुट्टी आठ-दस दिन होगत दुन, जे
परीक्षापेवास्तुक आ विजलैकसँ पूरि होगत दुन ।

गवमियो मासमे अस्वरिवा तँ तहिना ह्रदा ओ अस्वरिवा दोसव
तबहक होगत दुन । ओना एकवा आम खागक छुट्टी सेहो कहन
जाग छै ह्रदा ग्रीष्मातरकामक नाथ । सेहो छै । नमगव छुट्टी,
मास दिक होगत दुन । नीक परिवारक रिद्यार्थीकेँ अगहन
रातारका बहल दोहरी नात होगत दुननि, साधारण परिवारक
रिद्यार्थी आम खागत-खागत आवा-छिवा रिसवि जागत दुना ।
शैक्षिक रातारका स्पाष्टव कगमे रिताजित भऽ जागत दुन ।
जहिना जाइक मास रैलेड १ डरौत अछि तहिना गवमियो गाढक
हुनगी डरौत अछि । जगसँ अहीन माल टैत सँ ताधवि
रिद्यानय भिन्नस्वका होगत दुन जाधवि गर्मी छुट्टी ले भऽ
जागत दुन ।

तद्विया हाग खुबन आ समारपुव हाग खुनमे गहो अतव
दुन जे आधा छै आगु-पाहु खजरो कवेत दुन आ रैना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

होगत छन । काबसो डलोक कमला पडिमाक गाम मोहथ,
नकखीब आदिम न२ क२ पुरमे रैबमा धरि आ गंगाधर
खरौगवम न२ क२ खनधवा-खरौग या धरि रियाथी
समावधवमे पठेत छनाह । नमहव फेव तै रिनसमस युन
खुलेत छन । मादर एगावह रैजे रियाधममे डुष्टी होगत
बहए । तखन पान-मात मीन पएने छनर कठिन छन । उना ३
रैड कठिन ले किएक तै रैबमाक रियाथी पएने छनि मोहला
रियाधमस पठल छनाह । तहिना रैथी माममे मोहो होगत
छन । कखन पानि-रिहाडि आरि जाए, तेकव कोला ठीक
ले । तछमे कतेकान रैमित तेकवो ठेकाष ले । खेब जे
हो..... ।

केजवीरान हाग युद्धन समावधवमे १९७३ ३.मे हागव
मेकेन्द्रिकक पठ १.ग शुक्र तेन । द्वाद पौडने पेट नागि
गेलै । कना-रिहाष आ रागिजि तीनुक पठ १.ग होगत
डलोक । कना-रिहाषक मज्जुवी तेष्टे गेल रागिजिजनक तेष्टे
ले कएन । कते वंगक हरा रैहए नागन । उना शिक्षकमे
रैठ १.ग पठति तेन द्वाद शुक्रमे खसविधा बहन ।
१९७४ ३.मे जलता कओनेज खुजन । जल-महयोगस कओनेज
खुजन । द्वाद कओनेजक जे नमगव-टोडगव घब चाली, जे
पडफडमे ले तेले तै हागये यु । नमे साधारण रूपे
पठ १.ग शुक्र तेन । किछ गनन छन रियाधक पठ १.ग शुक्र
तेन । खएव जे तेन द्वाद शिक्षामे नर जागव फेवमे
आएन । रैहतेक मलक द्वाद पुवा होगक मतिरना रैठन ।
बी.ए. तकक पठ १.ग नगमे हएत, तखन पठ-रैना रैचाव आ
पठ-रैना गावजनक मलमे किखए ले उमो ह जगतनि । किछ
दिनक पठति कओनेजक अण कँचका ३.ग आ खपड १.क मकाष
रैगले ।

১৯৩৭ খ্র.ক দু'বারমে কাংগ্রেস সভাকারক স্থিতি কমজোব ভেদ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

केवने रागगंधी सबका रंगि गेन । आजादीक दोड़क जे
जागवण भन आते ताजा भन, जगसँ अखुनका जकाँ ले भन ।
ए रीच पोष्टि-गुवा हाग युवन, कठोरज, प्रांगरेष्ट कगमे रंगए
नागन भन । हृदा गुप्त कय बहन । खादी उंचा उंचागक
दास होगत गेन आ होगत-होगत ३ मेष्टी जकाँ गेन ।
तहिना नगदी पौदारावमे कशियाव सेहो भन, जे उंचागगतिक
चलेत सेहो मयए नागन ।

मिथिलाचनेमे मुनतः ज़रिकाक साधन प्रवि भन । गुना सघन
कगमे प्रवि सघ साधन ज़रिकाक ज़ी, हृदा से ले भन ।
जेहो भन तहमे बग-रिबगक भन-प्रगट चलि बहन भन ।
रैठाग खेतीमे अगिया उंच उंच ज़ेरीहावकेँ भेठैत भलेक ।
जखन कि उंचजरेमे, खेती करेमे किहुए अन्नक खेती नाभगद
भन । उंचजाक अन्नगतमे नागत खर्च किहुमे कय भन आ
किहुमे अन्निक । जगमे अन्निक भन गुगमे रैठेदावकेँ घाष्टी
मलेत भलेक । तग संग रौदी-दालीक प्रभार गुरुन किमानगव
सेहो पड़ैत भन जे खेती करैत भनाह । जे रैसी
खेतरेना भनाह हूकव खेती अन्निकतव रैठागक माधिमसँ चलेत
भन । तग संग अन्निक अन्न बहल अन्नक मनाजनियो चलेत
भननि । मनाजनियोक प्रथा गाम-गामक हूँ-हूँ कोला गाममे
सराग (एक मोनक सरा मोन, एक मीजिनक) तँ कोला गाममे
एगावही (आठ पसेवीक मोन, एक मोनक एगावह पसेवी) तँ
कोला गाममे डेढ़ा या, एक मोनक रौबह पसेवी । जेकव
मतनरै भेन जे एक मोनक आधा मोन मुदिये भेन । तग
संग गहो होगत भन जे जँ सानक कर्ज सानमे टूकाएन
जागत भन, आ ले तँ मुदो मुदो रंगि जागत भलेक । जगसँ
दू सान रितेत-रितेत कर्ज दोरवा जागत भले । अखुनका



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

झकाँ बिस्वाह तै तते भारी ले छन झुदा माए-रौपक सबाधमे
सामाजिक आ ज्ञातीय एहेन टांग छन जे खेत-पथाव रौटि
काज चलेत छन । खेतक हिसारसँ टावि-पाँट मेनक किमान
छनाह । गामक-गाम एक-एक गोठेक छननि । जखन एकठाग
जमीन समष्टिअन बहत तखन दोसब-तेसबक की आ कते
हेतनि ?

खेतमे काज करैना रौपिहारोक हि ति रौदसँ रौदतब छन ।
एक तै दिन भरिक रौपि कम तद्धमे मानक गनन दिन काज
होगत । किमानोक रौटि खेतीक भर रौटिअनिक खेतीक पछतिक
अभार छननि । अबारोक कावण छन जे ल सबकावक रियाण
खेती दिन छन आ ल खेतीक साधन उपलब्ध छन ।
ब्रैता हागक जलकक हब झकाँ खेत जोतेक हब होगत
छन ! जहिया मविआएन रौद तहिया जोतिनिहार । तग मग
खेत पछैरैक पानिक कोला दोसब रौदसँ ले । जहिया पानि
हएत तहिया खेती शुक हएत । जगसँ रौदसँ खेती होगत
छन । पौखरि-माँखरि मे अलकआ माछ जे होग सएह माछ
पौससँ कहागत छन । तहिया तीमला-तबकावी आ फलो-
फलहरीक हान छन । मोठी-मोठी ग्रुपिक ओहन दशो रौपि गेन
छन जगपव जौरण मागण कवरै कठिन भए गेन छन ।

पशुपानक कगमे गाए-महीन रौकरी पौससँ मात्र चलेत छन ।
गाए-महीन पौसिक रौटि, महाजनीक एहेन सूत्र नागन छन जे
पौसिनिहार सिर्फ पौसित छनाह । एक तै नल पछुआएन बहल
पछुआएन कारोरीब दोसब एहेन जानमे ओसबाएन जे बीले-बीले
कमिमे गेन जे रौटि क कोला सँभारना ले बहन ।

नगदी हसनिक कगमे हसिआव आ पछुआक खेती छन । झुदा
उद्योगपतिक कारागातसँ ओहो दूनु कमजोले होगत गेन । झुदा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

सबकाबक प्रति जल-आफाणि रैठल । गाम-घबक लोक सबकारी
मातक माल रूमेत डल मात्र कोठीक रहुज धरि । सेहो
बहुर्गि-पेले बूठागत डल ।

१९७१ जल चुनार आएन । जगदीश प्रसाद मल्ल री.ए.क. रिल्यान्स
बहुरि । आजादीक पछाति पहिन जल-जागवण डल । पढ़नो-
लिखन आ रिल्यान्सियो मैदानमे उतबन ।

मल मैतानीस...

भावतक स्वतंत्रताक प्रिण्पिक मल्ला कहवा बहन डल ।

हुदा कम्युनिस्ट पार्टीक माननागत डल जे भावत स्वतंत्र ले भेल
अछि ।

असली स्वतंत्रता भेटैरै राँकी छै...

मिथिलाक एकठा गाम...

जग होगत अछि एकठा रैचाक.. ओरै रैथ ...

ओग स्वतंत्र रा स्वतंत्र ले भेल भावतमे...

पिताक मृदु...गरीबी..

केस मोकदमा...

रचितक लेन संघर्षमे भेटैले स्वतंत्र भावतक रा स्वतंत्र ले भेल
भावतक जेन....



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

माधुसूदन चन्द्राण, ISSN 2229-547X

आग लेबामे पाँट-दम रीघासँ पौघ जेत ककरो ले..

ओग गाम मे आग जलित अछि आगयो किसानी आमेनिर्भव
संस्कृति...

प्रवाहितरादगव ब्रह्मरादक एकछत्र बाज्यक जतः भेन समाप्ति..

संघर्षक समाष्टिक राद जिनकव लेखन मैथिली साहित्यमे आनि
देनक प्रवर्द्धन...

जगदीश प्रसाद मंडल- एकठाँ रायोआहने...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा
.....श्री
जवाब.....



गजेन्द्र ठाकुर

gajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रंग

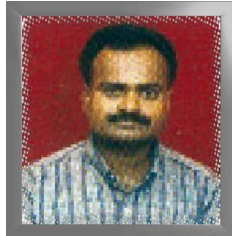


२.१. जगदीश प्रसाद मंडलक दीर्घकथा- हाँसी



२.२. बाजुदेव मंडलक उग्रास हमार ठेन- पछिला
थेगस आग

—



२.३. डा. कैलाश कमार मिश्र- गंदवगुप्ता अकाम

—

—



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X



२.४.१. अतुलेश्वर- सगर बाति दीप ज्वर, आन्दोलन



आ रत्नभोज २. रिणीत उपेन आधुनिक मैथिली नाटक आ
छा नाटककारक जातिरादी बंगमटक अवधारणा/ साहित्य अकादेमी



कथा गोष्ठी: सगर बाति दीप ज्वर: एकठा रहला/ ३.
गणमण्डन- आवती हमावी आ सगर बाति दीप ज्वर



४. आशीष अलुविह- बिदेह मैथिली समाजसुब बंगमटक/
जातिरादी बंगमटक भाषाक रीति



२.३.१. बरि भूषण पाठक- ओकक ब तौरक हमाव
सगला-२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X



२.७. अमित मिश्र- कथा - प्रेमक अंत



२.१.१. राम भवाम कापडि 'भ्रमर'- घबहूँ- उपाख्यान



अमि २ टदन हमार मा- बिहनि कथा- समय होत
बैठौल



२.१.१. सृजित हमार मा- साधना

—



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

माथिलिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



जगदीश प्रसाद मल्लिक दीर्घकथा-

हॉमी

काहि राबह रैजे रैनदेरैके हॉमी रहत, बेडियो-अथराव काण-
काण जना देनक अछि । जहिना रैनदेर रूनेत तहिना जहनक
उत्तरिकारियो रूनेत अछि । जहिना रैनदेरक परिवार रूनेत
अछि तहिना सब-समाज, दोस-महिष मोहो रूनेत अछि ।
सरहक मन राबह रैजेपव अछेकन । राह राबह रैजे दिन रा
बाति अपन प्रथम कगमे दिना दिन मैदानक बस्ताड धड़ैत
अछि ।

जहनक एक नरैव सेन घब । जे घब उग अपवाधीको उग
रीट भेटैत अछि जखन या यागसँ हॉमीक तिथि निर्धारित
होगत अछि । सेनक रूनारैष्टियो, आन सेनो आ राडेसँ भिन्न
रैनन अछि । उना सेनक रूनारैष्ट रिटि अछि रुदा आनसँ अनग
तँ अछिये । कोठबीन्या घब, कोठबियेक अष्टि-पेष्ट सेनो
अछि । एक कोठबी उल्ल होगत जे नमहव घबमे रैलेत आ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एक कोठरी ठुल होगत जे घरे कहरोत छि। एक नरैव
सेहो तहिला रैगन छि। टिमिक एक नरैव छि, कुन-नवथी
सवायक रीचक, पथवधन राख, दु-एक सिधौक जोड़सँ देरान
रैगन छि। सात एग्रा रैगन गर हूँक घब, जे घबक
कोठरीसँ हील छि। पौल दु हूँक आगुक दवरैछाट, थिड़की
दवरैछा लै, जे तीतव-राहव अरैत-जागत छि। लोहाक
रैगन केरोड नगन छि। शेष कोला देरानमे ल थिड़की-
थोमिया छि आ ल पुर-पडिमा दिमा देखैक कोला दोसव
साधन छि। एक तँ ठुला जगठाम सब किछ (दिमा-रोधक)
बैत छि तछठाम दिमाअ नगि जागत छै। आ पुरकै पडिमा,
पडिमाकै पुर कहए नहो छै। जिनगीक पूर्ण नीना रैनदेरकै
ओ कोठरीसँ घबमे पलवह हिसँ होगत छि। ओना तगसँ
पुरो (15 दिनसँ पहिल) सेहो सात नरैगन सेनमे तीन सानसँ
बैत आरि बहन छि।

ओना एक नरैव सेनमे एगारव एतेक सुनिवा जकर तेष्टे गेन
हुलै जे पहिलसँ नीक भोजन, नीक ओझा-रिडोना तेष्टे गेन
हुलैक। तनहि घबमे लहिये रिजनीक ताव आ ल राख नागन
हुदा दवरैछा सोमे एहन राख नागन हुलै जगसँ कोठरीसँ
तीतव गजोत पहुँचैत हुन। हुदा कोठरीक राहव स्पावनेन
सिगालीक रैनसँ सेहो भऽ गेलै।

राहव रैजे वातिक यँठी ठौरवक हुनेड पव राजन। वाति-
दिलक पानी रैदलैक सम्र भऽ गेन। जहिला भूत-रतमान आ
रतमान त्रियामे रैदलैत छि सएह हुदुत छि। वाति-दिलक
रैष्ट पकड़त हुदा दूत-भूत एतेक प्ररन जे आरो रैमी उग्र
रैलैत छि। जहिला वातिक जन्मन रैचाम दिलक होगत
तहिला रैनदेरक वाति सेहो दिल भऽ गेलै। वाति-दिल भऽ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

गोलोक आकि नीमिये देरी रिल रादिकीक संग डले पड़ ।
गोनमि, मे ले कहि । उछागणपव पड़न रैनदेर उठि क२ रैन
कोठवीक टक देरान दिस तकनक । अहावेमे सब हवाएन
रूमि पड़न, किएक तँ राहवक रिजनीक गजोत मेहो अहा ।
चदवि उठि उठन भ२ गोन जे अगला तवि ले देखि
पड़त । देह दिस तकनक । हाथ-हाथ ले स्मृति, रैनदेर
अजमा क२ घबक झूठ नग समरि क२ पहुँचन । हाथ रैठ ।
देखनक तँ रूमि पड़ले जे यह घबक झूठ छी । घबक झूठ
देखि मसमे रिसराम जगले जे अँठामसँ अहाहव-गजोतक सब
किछु देखरै । हिया क२ रिजनी खुँठामे ठेकन रौनपव नजवि
देनक । मरि आएन गजोत तगपव अस्थान मछव-माछी
जाण गमरौले तैयार नाटि बहन अछि । खुँठपव गिवगीठक नुँड
झूठ रैरि खागले तैयार आमन नगौल अछि । निचाममे रैगक
जेव फुँदैत । तग रीट मछ बक जेवि गीत गरौत फुँठक
ठपि भीतव पहुँचन । झुदा रैनदेरक मियाण मछवपव ले गोन ।
जहिया शिबीरमे अलको लोग बहनापव रैझका लोग छेँकक
टापि बथेत तहिया रैनदेर रावह लोग मछनवलेँ दारि देनक ।
केना ले दारैत, जगठाम जिणगीक खुनक कोला महत ले
तगठाम मछ व कत गीरै कवत । झुदा तहुँसँ रैसी रैनदेरक
मसमे जाणि गोन जे जखन राहव रैजे अछु भ२ बहन छी
तग रीट जँ कमियो उगकाव दोसबक भ२ जाग छै तँ ओहो
धवमे छी कि ले ? रैनदेरक मसमे पणपण नगले । तखन
पएव दारि सिगालीक नुँड मेनक टाककात चक्रव कछै नगन ।
अहावेमे सब हवाएन । पएवक धमकसँ रैनदेर रूमि गोन ।
जहिया गाए-महिँस मसबथ क संग फुँडा-रिनागक टालि
अहावामे पकड़ि जेत तहिया रैनदेरो पकड़नक । झुदा सब



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

टुप्पा । रैनदेरक मसमे उठले, जरै कि राबह रजेमे
हर्मियेगव चठरै तखन किअए एते उगवराहिक कोष जकबत
छै । एक तँ उल्ला रैझका डहव दिरानीक रीट जेन रैनन छै,
तग रीट राडि-मेन रैनन छै, तग रीट एते उगवराहिक कोष
चकबत छै । ह्ददा नगले रिटाव रैदनि गेलै । राडि सभक
केदी तँ अरैत-जागत बहै । सभ दिन दु-चारि एरौ करै
आ निकनरौ करै । ह्ददा हमा तँ आरै निकनि लै जाएँ ।
निकनरौ लै कवरै आ कि जिनगिये अत भ२ बहन अछि ।
आथि उठा आगु तकनक तँ रूमि पड़लै जे मान-महिलाक कोष
गग जे मात्र किछ यँठाक जेन छी । जग दिन हर्मिक आदेशे
आनयानयसँ भेल उही दिन किअए ल हर्मियो भ२ गेल ।
अल्ले कोष मोग-सन्धानग देखे-बोलीले पनबह दिन जीआ
क२ बाखन गेल अछि । मस शोभु केनक । शोभु होगते,
जहिला पोथरिक अगम पानिकेँ पुरी-पड़रौ हरा डोमरैत बहै
तहिला मस डोमले । डोमले उठले, हर्मिक किअए हएत ?
प्रमगव नजबि उठकिते उठले जे हर्मिगव सगुत-कगुत दुनु
चठै । हएव उठले जे तग सगुत-कगुतमे हमा की छी ?

अहिव उठैसँ पहिल जहिला हरा थमि पड़ैत अछि, राहसिडन
शोभुक भ२ जागत अछि तहिला रैनदेरक मस मेहो शोभुरै भ२
गेल । कोला तबहक तबंग लै । ह्ददा नगले मसमे उठले जे
जिनगीक अतिम सीमागव पहुँचि गेल छी । जहिला गामक सीमा
छँपिते दोसव गाम आरि जागत अछि तहिला जीरन लोकसँ मू
लोक छनि जाएँ । ह्ददा एते तँ हेरै कबत जे अखन
छैकानन जिनगी अछि पछाति रैठेकाननमे पहुँचि जाएँ । हएव
उठले, जीरन लोक तँ खाली मू, क लोक लै छी । जीरन तँ
लोक छी । जहिला कोला जगनसँ पड़ैत जगनव दोसव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जंगलक सीमापव पहुँचते टाककात नजरि उठा क२ देखेत जे
बहे जोकव अछि रा ले, तहिना जिरण-मृदुरक सीमापव रैनदेरक
मन अछि तैन। धवतीपव जहिना एक-दिनाई दोसर दिन
रैत धाव बाहुन केँ रौपित क२ दैत तहिना रैनदेरक जिरण
धाव रौपित क२ देनक। आगु ठपेक आगि ले देखि रैनदेर
राम-दहिना दिना पकड़ैत रिटाव केनक। एक दिन पहाड़सँ
निकलैत धाव धवती ठपेत सद्मदमे मिलैत तँ दोसर धवती
ठपि सद्मदमे मिलैत। आगु तँ किछु घंटी मेघ अछि ह्मदा पाछु
तँ सौमे जिरणी पड़न अछि। कि एक रौबक हामी हामी छी
आ कि हामी छठन जिरणीक हामी हामी छी। मन ठमकि
छाले। ह्मदा नगले मन पहिले रावह रोजेक घंटी रोजन।
जहिना धवतीपव आन रौचा आनुर-आनुर सकताए नलैत
तहिना रैनदेरक मन सेहो सकताए नगले। मन पड़ले पनवह
दिन पहिलका हामीक सजा। मनमे थोम उठले जखन हामीक
आदमी भेल तखन हव पनवह दिन जहन किअए भेल ? कोन
अपवादक मन भेटेल। जौं ओही दिन हामी भ२ जागत तँ
पनवह दिन जे सोग-सन्ता प भेल से तँ ले होगत।
ततरै ले अगला दुपव अलले भाव किअए रौठ नक ? हव
मनमे उठले जे अलले ओमवाग छी। मन शान्त केनक।
शान्ता होगत उंपकले, सपुत रैन दुनियाँ छोड़ै आ कि कपुत
रिन। कियो हिनसँ, ह्मदसँ दुनियाँ छोड़ै आ कियो
रिनथेत, दुस्रेत दुनियाँ छोड़ै। ह्मदा जे हिनसँ-ह्मदसँ
छोड़ै ओ छोड़ै कहाँ अछि ? ओ तँ जिरामोतकेँ एहेन दृष्टि
क२ पकड़ैत अछि जे छोड़ैली ले छुटैत अछि। ह्मदा ह्म
तँ से ले छी। हव मन घुमले। दुनियाँ रौठ छी अछि... रौठ
छुटै अछि...। रौठ छी ओकवा जेन छे जे रौठ पारै



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

छहिए। झुदा रैड ी तै भोजोक अतिम पवारै ले, घबक मया
सेहो छी। तखन किअ ओकरा निअ छहिए। हेब मय ठमकि
छोले। अलले अडाहे अरुड भुकरै नीक ले। अगला तै
सेमाव अछि। जगमे अकाम-पतन, टाण-सुर्ज, नदी-सरोवर
सत किछ अछि। तखन अण छोछि दोसबाक देखै अणाम
दुब हएरै हएत। अण कर्म अण धर्म मय रूमरै उछि
हएत। जारै से रूमि दुनियाँक वंगमटमे ले उतवरै तारै
लोआ काण लल जगए, तग पाछु दोगरै हएत। अण वंगमट
आ अण अभिनय मग अरिते मय ठमकि क२ ठाठ भ२ छेले।
ठाठ होगत अनाम मयमे उछेले। अभिनयो तै
देखिनिहारोक लेन आ समावोक लेन वंग-रिवंगक, कतेक सुावक
होगत अछि। झुदा कहन तै अभिनागये जग छै। कियो
नीना बटि अभिनय करैत, तै कियो गुण-गुणागत अभिनय
करैए। कियो मुक भ२ करैत अछि तै प्रेमरेशमे करैत
अछि। केना एकबा रिंगाएरै ? एक दिस छि-रिछि रंगन
अछि तै दोसब दिस अछि सेहो रंगन अछि। ओमवागत मय
मयाण भ२ मया उछेले। अलले ओमझ ल मय मय
जाएत। गनन कष्टिया नागन मोव जकाँ मय रैछन अछि,
तेकरा जौ ओमलोठेमे बाखरै सेहो नीक ले। रौवर रैजेक
घंठी कतेखण पहिल रौजि टुकन अछि। हाथमे जौ घड ी
बैत तै ठीक-ठीक मयैयोक रौध होगत, सेहो नहिये
अछि। जग दिस जेनमे प्ररेशे केनौ तेनी दिस जरुनक
झहपव जमा क२ केनक। जग दिस निकनरै तग दिस देत।
झुदा निकनरै कहिया ? आग तै हामियेपव नछकि जिनगीक
रिसर्जन कवरै तखन घड ी केना जेरै आ पहिब क२ मय
रूमरै ? झुदा तै कि जग गाममे झुगी ले बै छै तग
गाममे भोव ले होग छै ? पाँट-दम मिष्ट आगु-पाछु, अणम



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

तँ क२ सकै छी । झुदा काजक संग जे सम्य छलैए ओकब
अवतार आ रिय काजक अवतारमे तँ अस्तु ब होगत अछि ।
काजक दोड़क अवतार रैमी रैदाँ याँ होगत अछि । किएक तँ
काजक संग सम्य सट्ट छलैत अछि । झुदा हमार तँ सेहो ले
अछि । रैम दु रैव खाग छी, ठेग जकाँ ठेगवाएन पड़न बहे
छी । कथन जागन बहे छी आ कि सुतन बहे छी, से आनक
कोन रात जे अपला ले रूमि पड़े छी । पढतेलौ तँ किछ ले
भेटैत । हब मसमे उठलै- हाँसी किअए ?
किछ सम्य ग्रन्थ बहनाक पढाति अनायास मसमे उठलै जौ
भक्ति-भारमँ सम्य कठल बहिलौ तँ हँसी-खीसँ चट्टि तौ, से
ले केलौ तँ कहबि-कनणि चट्टर । जल्मि भेजि क सात ज्ञान
छी तल्मि ल भक्ति क सात प्रेमो छी । हब मस ठमकलै ।
जौ भक्ति क सात प्रेम छी तँ हमाँ तँ प्रेमिक छिह । जौ से
ले बहिलौ तँ एत खेन केना केलौ । अचतागत-पचतागत
झुहँ निकललै । से तँ जकब केलौ । एक प्रमीना पथिव
तोड़मे टूरेए, दोसब पथिव रैनरेमे टूरेए । हँ से तँ
दुसरेमे टूरेए । झुदा कि दुसुक मिठाँस एक्क बग छै ? से तँ ले
छै । तथन प्रेम -मेरा- केकवा कहलै ? हब रैनदेरक मस
ठमकि नजबि उठा-उठा टोकल्ला होगत टाक दिस तक नगन ।
झुदा अहा बमे किछ देखलै ल कबए । मसमे उठलै, अलले
प्रेमक पाछु रौखाग छी । गेन जमाणा हब ले लोछैए । आर
तँ जिनगीक अतिमा खाड़िपव छनि एलौ । ल प्रेमिक छी आ ल
प्रेमक निवज्ज कर्ता । अलले अलका पाछु रौखाव बहन छी ।
सतकै अपन-अपन जिनगी छै । अपन-अपन जगह छै, जे
समैयोक आ प्रप्रतियोक प्रभारमँ प्रभावित होगत बहे छै तँ
अपन रात जेना लोक अपन रूनेत अछि तेना आन पोछे
रूमत । टाक दिसमँ घुमेत-हिडत मस अपना नग रैनदेरकै



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एले। मसमे थोम उठले। मस मस छी जेकब खचमवग्लीस
कियो भगरान रनि जागए आ कियो हलखवा रनि दुनियाँक
सोमामे हाँसीगब गठकि जागए। ह्दा कहलै ककवा आ सुनत
के ? मस ठामकले। हलकवा के ? हलर की ? आ के पौदा
कलेए ? जहिया कम माडी-गड्ड ब बहल थोरौ कान आ सुतरौ
कान ओते पनेशनी ले होगत जते अधिक बहल होगत।
रनदेरक मस हल ओमवा गेलै। ओमवी छुटैते अगवागब
ग्लकनि ह्दु नगले। हमरौ तँ दुनियाँक छन अगवाधिये छी।
जिगगी भवि अगलामे रैनान बहलौ ह्दा रैनाने केना बहि
गेलौ, से कहाँ रूमि पेलौ। जहिया धवतीकै रैनान मृजल
नेत्रिय कनि जाग छै तहिया ले हमरो भेल। मस उहनि
गेलै। टिछिगत राजन-

“हम अगवाध छी, अगवाध केले छी। डकैतीक संग हल केले
छी। अखल हमरो हाँसी ह्दु ?”

पितोक माम् री ओग रैनान ओले दिस कस गेलै छै जग
दिस सुगत ह्दु दिस जागत देखे छै। तहिया रनदेरक
कनपेत आमोस मस हठ बहल छै। अखल ह्दु गठकि बहल
छै। अगवाध छी, अगवाध केलौ। एक अगवाध ले, अलको,
एक दिस ले जिगगीयो भवि। रहुत रिननि क२ हाँसी भ२
बहल अछि। रहुत पल्लिहि भ२ जागत छै छन। ह्दा भेल
किअए ले ? एकएक ह्दुमे गर्दा नगल ह्दुमे मस पाछु दिस
समबल। अति हल। आ डकैतीक हल हाँसी छी, ह्दा आरो
जे जिगगी भवि केलौ, तेकब कि भेल ?

मधीमामक न्ना न जहिया आल मामक न्ना न्ना अधिक सुन्दर,
अधिक शीतल होगत तहिया जिगगी अगवाधक रीट रनदेरक मस
अठकि गेल। एक दिस जिगगी दोसव दिस अगवाध। शीतल
भेल शीतल मसमे उठले, कि हमर जग अगवाधिये रैनिक जेल



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

भेल भेल जे अगवादीक जिनगी रितेलो । अदा बुझियो कल
गेलो जे अगवादी कले छी, अगवादी रेल छी । उमवागत
मसकेँ सोमवारेलैत रैनदेर जिनगीक एक-एक दिन आ एक-एक
घण्टा मोन पाछा नगल । अहमँ निकल्ले- “अगल जिनगीक
रात जत अगला मसमे अछि ओत पोछा दोसवारकेँ हेतग ।
मि सर्फ हल्ले-गुठे छी तँ ले केल छी, माए-रहिनिक सँध मेहो
तोछले छी ।”

मल कलपि रैजले- “एकरेव ले हज्जाव रेल फाँसी हेराक
छली ।”

रैनदेरक मल रोकल हूअ नगले । केकवा ले केहो ? आ
रात मसमे उठिते मियाँ पविराव दिन रैठले । अतिम दिन
गेलो आ रैठोक दर्शन हएत ? ओ सब रैठेनीसँ भैठे कब
जकब ओत । अदा कि जलिया पविरावमे भैठे होगत भुन
तलिया हएत ? मे केना हएत ? मिपलीक घेवरदी हय बहर
आ ओ सब हठे क२ कातमे ठाठ बहत । मल घुमले । अलले
किअ कियो भैठे कब ओत ? कोन अह देखत आ कोन
देखओत । तगसँ नीक जे भल हमँ हवाएन छी आ ओहो सब
हवाएन बह । दुनियाँकेँ सब तँ ले चिहने-जने । जौ
समाजमे लोक उगरी देखोते तँ समाज छोडि दोसव
समाजमे चलि जाएत । जखन एक समाजमे दोसव समाजमे
जाओ तखन पछिला समाजक राहँ छुटि जाओ छे । राहमक
जीतव रैनन समाज अगल हितक रात सोछे । अदा समाज तँ
सहज छी, जगमे घोघा-घोघीसँ न२ क२ जोहि-ग्याव तक
छे । रैनदेरक मल ठमकि गेल ।

जलिया जल-जगानिबिसँ रा हवीति-हमसय पारि नतामक गाछ
रौमक भौहमे जलमल सम पारि कलपि जागत तलिया रैनदेरक
मल कलमे । अरोध रैछा क हाथसँ गिवन अगला, माए-रापक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दूध जकाँ ले दूध तेयो धूँकड़ रीछि-रीछि जोड़क कोशि
कबैत अछि तल्ला रैनदेरक कनैन मसमे उगकले । तीस रथ
जहन अएना भ२ गेल । बाता-बाती घबसँ पकड़ । रैनदूकक
हाथे जहन अएन बनी । नर-नर लोक, नर-नर जगहसँ बैठे
भेल । जल्ला देशेक मिथिलादेसक रानी दुनियाँक कोण-कोणक
रीठ रसि अगल पुरी परिवारक संगवण करै छथि तल्ला रैनदेरक
मसमे परिवार सेहो अएन । दूध नगले जहनक परिवार
अगुआ गेलै । एक-हाटक छपि दोसबमे घोबएन बनी ।
तनाशीक संग सब किछ घोब गेल । रैनदूधसँ आउत ले अगल
घोबएने गेलौ । दूध तेयो नर-नर देहवासँ बैठे भेल ।
तीतव अरि ते (रौटमे) घुम्मा -दूधक सनायी भेल । जल्ला
अखड़ हाथ उतरेत खनीहाकेँ पाणि उतबए नछोत तल्ला
उतबन । जिणगीक पहिल रैन जहन देखलौ । स्वागतक रौद
मेठे नग पहुँचओन गेलौ । अखड़ हाक रैनदल खनीहाक
पाणिओ रैननि जाग छै । दूध..... । मेठेक बजिअजबमे नाउ
छटि ते ठेव हूँक एक संग उठन । माड नगरक झूठी,
पैखाणासे पाणि पहुँचलैक झूठी गल दि-गलबदि । काजक
भाँस मस दरागत जा बहन छन आ कि समननपर पसबन
मैजजक हूँक भेल- “एकपर आ, पहिल जाँत तखन दोसब
काज हेतग ।”

अरुअरमे हँसन मस हल्लक भेल । मसमे खुशी उगकन जे
कनियो-कनियो काँ अछैत तँ काल उखड़ि जगतए । जल
रैन तँ नाथ उगाग । एक करेछ घुमेत मैजजन रौजन-
“पहिल दिन छिउ, आग तोरा खेलाग ले बैठेते ।”

जल्ला दूधपर अस्मीत मस नद्वी मस जावनि छटि जाग
तल्ला छटि गेल । दूध अमरिसो ले क२ सकलौ । दूध
तेयो सरुव भेल जे ले खागले देत, अतैक तँ जगह बैठे



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गेल कि ल । तग रीट मैलजनक हुकम भेल- “कौन केसमे
एनेहै ? ”

केसक नाँ मुनि मल दनदन भऽ गेल । जहिना मोग-पीड़ मये
लाव रँहा केकरो माझ-बाणा दैत कान लोगत, तहिना ।

जहनसँ निकलैक आशिक अँखर सेहो जगलै । हवनि राजन-
“सबकाव, डकैती आ खुन संगे छै । ”

डकैतीक संग खुन मुनि मैलजनक मल ठामकन । अधिक दिनक
संगी छएत । उँए दोसतिये कवरै नीक । पड़ने-पड़न हुकम
चलौनक- “नरका केदीकेँ खगयो जे दिक । ”

(जाबी.....)

ई बचनगव अगल मंतर ggajendra@videha.com पव
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA



बाज्रदेव महन्तक उपाध्याय हमर

ठेग

गङ्गा थपस आगु-

....

“दोग क२ अरै जा हो२२२ । देखक हो लोक म२ । हमरा
अंगनामे ठेगा रकिस बहन छै । गङ्गाव दिससँ कतेक ठेगा
छैक बहन छै । दोली जा छै ।”

“गे माग गे माग । कोन उपाध्याय शुक भ२ गेलै गे । कोन
देरी-देरता थिसिया गेलै हो देर । हो समाज रँटाहर
हो ।”

हमरा थपसि स्रमि रँहते लोक दुःखविपव जमा भ२ गेल छै ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पुतौहू मिनि कमा-थेठा क२ कहूना गुजब चना बहन अछि ।
“कही एकब पुतौहू चमकी डागल तँ ले छै हो ? ”
“ले-ले, ग रात सुठ छै । एतेक बोली-बानी ओबत डागल
केना क२ भ२ सकै छै । ”
“हँ, हँ, बोली-बानी छेहवा तीतर दिन रोगमास । ”
“हँ रौं भाय । तरँ ले जग समेमे पहिबक रैब अथन बहै ।
नरै-परै बहै । ठेनमे रैडका हो-हलाम भेन बहै । ”
“हे रौं, उँ जग घबमे ठाठ होग ले ठीक ओकवा कपावक
सामल घबक छप्प बमे आगि नगि जाए छले । उतबरबिया
घबमे जाय रहै रात । दक्षिणरबिया घबमे जाय हब रहै
रात । ग तँ छै द२ लोक हमा दैत छले ले तँ पुवा घब
जबि क२ सुझाह भ२ जएते । ”
“गसबते केना क२ । राहान आगि बहै ले । रूमिनी,
ओबतियारै देह ले बहै, आगिक भुंती बहै । ”
“तरँ तँ नकछोकरै मनाग कीनरौक कोलो जकबते ले । ”
सभ गोष्टे एकरैव थिमिया क२ हँमए नगन । उँ नुँ उँ हायन ।
“अले तौवी क२, ग तँ असन अगिषदाग छियौ रौं । ”
“होव ग रौंवी ठीक केना भेनग ? ”
“रएह खेनारन भगत कतेक दिन तक माड हूँक केनके ।
तरँ अगिषदागक देहसँ आगि कम भेलै । ”
“सुनल बही जे ओकले नग गेनासँ ग खेना नुक भेन बहै । ”
“हँ मथदूखी मडरौक नेन खेनारन भगत नग न२ क२ गेन
हले । ओही दिससँ ग अगिषदोना काल्ह हूँए नगले । ”
“तरँ तँ हन कवासात खेनारन भगतक बहै । ”
गडुआब दिससँ अजय मोव पाछनक- “दोग क२ एल अरै
जो । भूत पकड़ । गेलौ । ” सभ एकरैव दोगन । रौंगन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गाढक मोमसँ अठैबरोकेँ निकालैत अजय कहलकै- “एकवा
पंचक पास न२ छन।”

“हँ हँ ठीके रात। घौंटाय अगला रैठोकैँ किअए ले सन्ध्या रित
छै। बाति-रिवागत ठाँगत बह छै। बातिचब भूत
जकाँ।”

“लोककैँ देवाणाग कोला नीक गप्पर होग छै। कही आँखिमे
ठेपा नगि जाय तँ फुट जेते।”

“जखनैँ ठामँ ले होग छै, पतिगालो कब पड़ छै। न२
छन। पंचमभ निबनय कबते।”

देठहँथी काँहँगब जेल घौंटाय गबजेत देरीपुवराणीक दुआरिपब
पहुँचलै। “हमरा रैठोकैँ पंचक पास न२ जेनिहब के भू ? अ
छोड़। अखल अगलासँ था-पी क२ निकललै। फूटै जेल
राँडिमे जेल छलै। अ केना क२ ठेपा फेकते ? छै कोग
गराह ? देखलकैँ ठेपा फेकते ? अजेया दु अक्षर गिहबसँ
पढ़ि क२ की आँख जे सभ जगह अगल करिगरी।
अ कवा अगलामे कोला देरी ठेपा फेकै छै आ नाँउ नगलै
छै, हमरा रैठोकैँ।”

घौंटायक मनी गावि पढ़त पाठसँ अरै छै।

“के निपुतवा हमरा रैठोकैँ पकड़ल अछि। कोला घेरी-
डकैती केनकै की। कोगठफुँडा, छोड़ हमरा रैठोकैँ। ले तँ
जे ले से क२ देखै।”

मसारी क२ अगला रैठोकैँ छोड़ लोक। ओकब राँहि पकड़ि
घिछल घब दिस छल पढ़त अछि। पाठसँ फलकैत घौंटाग
जा बहन अछि। “अखेन तँ रोकवक मगड़। ठाँठ भ२
जगते। अजयकैँ कोल दुमगली छलै, ओग छोड़िक संग।”

“दुमगली ओकवासँ ले छै। असल दुमगली घौंटासँ देरीपुवराणीकैँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दे । ”

उत्तरदा रीचमे आरि क२ रैजए नगन- “रैठाक जगस
तेनागव अगनासँ रैठागा हकन जाग दे । जे घबक डुगबसँ
दबैरैरगव गिबरीक चाली । हब ओही रैठागामे रैबक माड
आ जूता ठेका क२ घबक आगू गाउन जाग दे । ”

“घोटागक संग की तेन बहे ? ”

“घोटागक रैठा तेन बहे ले तँ अगनासँ रैठागा हकन बहे ।
ओही समेमे ओकरा ठागमे गडि गेली । पटैती तेले तँ
घोटागकेँ डडड-जबिगाणा नगले । ओही दिनसँ दुमगाणी चलि
बहन दे । ”

“कही तेनहकका भूतकेँ घोटाग भेजेत हेली । ”

“कहो हो । खेनारिण भगतकेँ गुजाक खटा भेठ जेते ।
तबँ देरीग्वरानीकेँ कन्या णि हेली । ”

देरीग्वरानीक रैठा नकछी ताडि गीर क२ दुआविगव आरि
गेन दे । ओ निसामे गबजि बहन दे ।

“हमरा दुआविगव एतेक लोक कियक जमा तेन दे हो ? रूने
झी, ए अ विगतिकेँ । सनकन जा बहन दे । हम घबगव ले
बहे झी तँ डोड । सतकेँ मोव पाडि क२ बसनीना करैत
बहेत अछि । कहाँ दे हमर मोठका समार रना नागी । आग
डाँड आ पीठी सबका देखै हम । ”

अगिनदाय डबसँ कोठी गोड । तबमे नका बहन अछि । गता
ले देहगव नागी कतए-कतए गिबते । लोगाँ काँठे-काँठे भ२
बहन दे । उत्तरदाव दुआविगव सँ रिदा हागत रैजन-

“अजय भाय, चनह एठासँ । ले तँ समारसँ छुड । जकाँ कूठन
जेरैह । ”

सत धडहड । क२ चलि गडेत अछि । अजय देखेत अछि ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि बरकद्वार, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आसमणसँ दुगना गिरीत अछि । धवती दिस रँठेत गजोतक लेखा । चाकडबसँ अहायव ओकवा दिस दौगन । डलमे जेना ओकवा पकडि घौष्टि जनक । हएव आँखि अहावनेमे अछि, गजोतक प्रतीक्षा करैत ।

.....

जर्नीजाति सभ अँगनामे गारि बहन अछि । “रौरा केँ अँगना मे नगनहि आँख गौती भेल दुमरी केँ फुल हे एहि रँव नगनसँ हिरास दियो रौरा सिखर छियो नुबि रँवराव यो ।”

अकनु मडवक रँथीकेँ रँखाह हेते । रँवयाती आरि बहन छै । दुआरिकेँ कते टिकन-टुनहन केल छै । नली छै जेना टन छिठका देल हो । ततेक गजोत चमके छै जे अहा व त जेना निपता भऽ गेल । दुआरि आ अँगनाकेँ सभ टिज दोसरे बैगक नली छै । चामा । एककातमे भनमिया सभ अहरी छऽ । देल छै ।

“गहिले भात ले, तीमन रँगते । पानि ना ले ।”

“तेया, एक टिम गज्जा हमरा घरबारीसँ मगा दे तँ हम भवि बाति थँरौ ।”

“दुग, दाक, गज्जा पी कऽ भास कवता । नुनक रँदनामे टिनी ठारि देरौ । तँ की हेते ?”

किछ लोक भोजन-भात रँगा बहन अछि तँ किछ लोक रँवयातीकेँ सुतए आ रँसए जन रँवरा कऽ बहन अछि । धीया-पुता सभ दलनक आगुमे खेन बहन छै । किद्दु नाँछ-उघाव तँ किछकेँ देहपव रँन्तरो अछि । नाकमे लछी, स्वर-स्वर



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

कलेत । “तेया झुतरै हो ।”

“दुग साव, तोरा तुवठ झुतरौम नगि गेलौ ।”

“तँ पकसादी मँगा दे ।”

“तगराणक गुज्जा ले तेते । एकवा अंगनामे रीखाह तेते ।”

“हे ले छोट्टा, एठास नगली कऽ देनली ।”

बुठरा नागी नऽ कऽ झुठकारेत रँजन- “भाग दुआवगव सँ ।

गीटा ज्ञा कऽ खेन ।”

अंगनामे गीत गौनहारि सत उंगरौम कऽ बहन अछि । पहिल

तँ एकोठा जनीजाति एरै ले कले छले । “जानि तँ अंग ।

ठाठन रौनहन छे- अकनु मडव । ओकवा सँगे के ज्ञात

रँजनमे पडले ।”

अकनु मडवक मनी रँज चनाकी जले छे । छैनक मुनगनि

घुघुवरतीकेँ पछिया जेनके । “दास हे, जेहन हमर छेपी

तेहन तोहन छेपी । कोला तवहेँ पाव-घाँ नगा दहक ।

दोसवा गामक सँ लोक सत आरि बहन छे । अंगना गामक

गच्छरैतिक सरौन छे । अंगना छैनक गप्पा आन लोक किएक

बुझते । बहरै तँ एकेठास ।”

केना कऽ मानते ओवतिया सत । आथिब सुख-दुखमे एकसाथ
बैत आथन छे ।

“नदिया किनाले रौरा हो किनकव रौजा रौजे, किनका सँ माँगे

दहेज हो, नदिया किनाले धाते तोले रौजा रौजे हमरा सँ

माँगे दहेज गे..... ।”

डिम-डिम-डिमिक । छैनक आ पीपीलीक अराज ।

“आले तोरी कऽ रँवाती तँ गामक रँजनमे पहुँचि गेलौ ।

जन्दीक सत धरणा कव रौ ।”

“गह, कोला नष्ट साहेरैकेँ रँवयाती ले आरि बहन छे ।”

“सुले छी, जे दु रीया जमीन छे ।”

VIDEHA



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

ऊँसुपकता । बग-बिबगक साढ़ी-आँगी पहिबल । हुन सन
हुनएन अथ । चरकेत छोट । सतक दन । पैठ-मैठ, बूँगी-
कबतामे सजन । रूँड सत धोती-कबता आ माथकेँ गमछासँ
झरेछा रहल ।

“पहिले पएव-हाथ धोरोक लेन जनक रेंवस्था कबल । पुछि
नहक सत रेंवियाती आरि गेल ।”

“दुका । ले आएन छै ?”

“आले रेंहीछे, बिना रबक रेंवियाती आरि गेलो हो । बिआह
केना हेते ?”

“कह छै- गामसँ संगे-संग चलौ । बाबुता मे पडआ गेल ।
पता ले कतए बहि गेल ।”

“डुडी डतहु हुके डले ले । बिना दुहक घब-दुआबि ।
दुआबिपब आएन किअक ? माव माव रेंवियाती सतकेँ ।”

“एमे रेंवियातीक कोन दोथ ?”

“हे बौ ना तँ सँका । दोथ-गुणकेँ हविछारै छथि ।”

“हे बौ, मलकेँ थिब कले जे । ठहब, एना ले कले जे ।”

रेंवियाती सकदम । जेना सरक छतीमे डब टुकि गेल । सत
झहल गेल । गग-सप्पए रेंग । मल-मल सत मोटि
बहन अछि । कही भवि बाति रब ले एते तरे की हेते ?
एहल हिनतिमे रेंवियाती सतकेँ छोनका छोटले बहे, ठेनपुवा
गाममे । चलाक रेंवियाती धोतीकेँ डाँडमे थोमि बहन अछि ।
पडआवक वस्तु । भजिआ बहन अछि । बगमे तंग । तमाकुन-
रीडि सत रेंग । अंगनामे गीतनादक रेंदनामे हुंसवाहट शुक
भन गेल छै । “मीनाक भाग्य । खवाप छै । कतेक मेहनति
अकनु मडव केनके तरे सत टीजक गतजाम भेल । दु
रेंविसँ रेंदनाकेँ एडि थिआ गेल तरे जा क रेंवाहक रात



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

तँ गे तेले । आर देथियो... । ”

“हुँगी बाति रिधि निथे नीमावा की संकष्ट के मेथनमावा । ”

रात सुनि नीमाक कनेजाये जेना रँवडी भौका गेलै । ओ
झूठमे सुआ ठूसि क२ काँचि बहन अछि । लोकक मनमे शंका
उना बहन अछि ।

कही जेन-देनमे कोना गडरँडि तँ ले भेल छलै । अकनु
मडव छै-रँड । मरथीआछुस ।

“तीमल-तबकावी रँलरँ की ले ? ”

“धूब, छोर्छा दियो । की हेतै की नाग । ”

उत्तिरआक केना दुप बहते ।

“कानन कमियाँ बहिए जेन कानी कष्टाउन रब घुमि जेन । ”

“माव मावकेँ लो । रँड नरँव-नरँव कले छै । एल अकनु
मडवकेँ पाछुसँ निमाँस छुष्टि बहन छै । आ एकवा..... । ”

अकनु मडवकेँ दोस-महिम, कब-कहुँम सँझी नी सभ राँध-रोध
दिन थोड़े जेन निकलि जेन छै ।

“हम्लाक जे कवरै मे रबक नाँउ जानरै ले कले छी । ”

सुहृजगव ठोमक-हविमियाँ दुपाम गडन अछि । नाच पाछीक
लोक सभ दुगटाप रिडि नी गी बहन अछि ।

“हमा सभ की कवरै यो ? एहो नगल ल उधाले बहि
जाए । ”

“दुप, ओल दोसव नाच भ२ बहन छै । तोहव नाच के
देखतो । राँधव जकाँ कुदल घुमे छै तथेसँ । ”

नाचक नरँवा छै द२ रँजन- “सभ तँ राँधलेक सन्ताने छी आ
राँधले छी । हम छी नडका राँधव । ”

“हे, झूठकेँ दुप बाथ ले तँ.. । ”

“गो राँध आदति ले छै । स्पेष्ट सुनि जाएत । ”



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

अकनु मडव मोटि बहन अछि- एक तँ जाति आगि-गामि रँग
क२ देल अछि । जखेन कि हमर कोना दोष ले भुनए ।
तेयो मरि गेल भुनए । घबमे अछि ले बहए । दुपवसँ
अकानक तरौली । कतएसँ करितौ भोज ? लोक कहनक खेत
लेटि ।

कहए पड़त- खेत लेटि जेते तँ खेती कतए कबले ? कतेक
जमीन छै हमरा पास ।

दोसबकेँ दूध देखबक हुबसति केकवा पास छै ? सबकेँ तँ
अपल दूध भारी छै । सुआवथमे आह । ब भेल छैलेत,
हथोड़त कहूना छल बहन अछि ।

एक साँस भोज-भात हेतै आ हमर सब किछो रिका जेते ।
लेकिन कहाँ कोन सुनल हमर गप्पात । उगल जातिसँ अलग
क२ देनक । कतेक मेहनति केले । केकवा-केकवा ले
गोड़नसक केले । कोन-कोन जानवर नग ले माथ
नगेला । तब रिआहक गप्प निश्चित भेल । ओहोमे कोन
दुमगली नगि गेल से पता ले । रब राँठेमे रिकल गेल । के
की केनक से ले जानि । सब तँ दुमगल अछि । रब ले
आएत तँ हमर लेटी अमावि बलि जएत । दोसबक रिआहक
गप्पो ले होएत । लोक मोटत नडकीमे कोना खारी छै ।
राँग ले राँग, कोन उगाए हेतै । कतौ क२ ले बहले- हम ।
सबथाँ खच-रबच लेकाव छल जेते । सेब दोरीवा कतए सँ
एतेक ठीका-पैसाक रेलारस कबले । अहराह फैलत-
रिआहमे कोन नष्टक भ२ जाले रौ । केकवा मोमामे केना
जएत । अकनु मडव अहा लेमे रैसि क२ कानि बहन अछि ।
लोक सब रबकेँ थोड़ि-थोड़ि क२ आपस आपस बहन अछि ।
“कतौ ले भेलै । रँडकी मडक तक कतौ ले छै ।”
“दावि-पाँछी छोड़ । रौआ बहन छलै । नग जा क२ थुल्लते



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

पड़ । गले । गँहे-मुते दोलौत अगल गाम दिस अएन । ”

सभ निसँ छोट-त अछि । रबक काका टिछिआगत अछि-

“आरि गेन । आरि गेन- दुहाते । कतए बहि गेन भवनी, तू
सभ लौ । ”

हंस गनष्ट गेन-समरीक । सरहक आँखिमे उन्नेपकता । शोभुग
पोथबिसे हनचन । लोकक देहमे जेना गति आरि गेलौ ।

नाट-गडनीक कनाकाब हानि क२ नष्टजगव छटि गेलौ ।

ठोनक-हवझनियाँ केँ जना गवाँ घुमि गेलौ ।

उबत-सभ थथसि क२ गना साह क२ गना साह क२ बहन
अछि । तले-तब ।

“नीनाक माँ जन्दीक सभ किछो तैयाव कर । छुल्लेले । सम
ले छै । ”

“छु, पहिल नटि का देखलै । ”

ब्राह्मण सभ जमा भ२ गेन छै । “समरि कहाँ छै ? ”

“समरीकेँ बतौनी भेल छै । कम सुने छै । ”

“अहाँक रैछी कहाँ अछि ? कानमे तँ नंगोछी रैह”ल छै-
सुनते केना । ”

“हेयो दुहा कतए छै ? ”

रविवाती सभ चाककात सँ होबल अछि । रीचमे छवि-पाँछी
छोट । ठाठ अछि । ओकवा देहपव कडी-झिया मात्र अछि ।
उघाले देह-झाड़सँ नष्टकोल । झूह नष्टकोल । दुहाक काका
हाथसँ गिवा कलेत छै । “रएह डी रब । जेकवा देहपव
ननका झियाछी अछि । ”

उचितरजा झिया क२ रोजन- “अले तौवी क२ । लौ, ओग
गामक एहल विराज छै । नंगा भ२ क२ एहिना उघाले रीआह
लोग छै । नंगछी कही के.... । ”



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“सभ खचवगली समरीक डी । दहेजबेना सभेठा ठाका-पेसा
अगना योगीक गढवाले बाथि क२ आएन अछि । ”

“है लो, रैथेकेँ कडी-झुगिया पहिवा क२ क२तीक नझरौक जन
ठाठ कएल अछि । ”

सभ ठिठिआ क२ हैमन । हा.... हा.... हा.. ही... ही... । “हे लो
हमरा तँ नलो डो, डैस-गाए चवा क२ रौधसँ एलिठाम छल
एलो । देखहक तँ कगावमे एको बूँस तेन डै । रिखाह हेते,
कोला खन लै हेते । दमरौ ग्रागीत देखते । ”

“गाथगव घोड़ कहाँ डै लो ? ”

“दुप बह, घोड़ की देखरहक । घोड़ देखहक । रैथेबेनाकेँ
सतोय बहै डै लो । दैत बहक । ”

समरी तने-तव ताममे फूलन अछि । रैथेक हानति देखि
रैजत की । अन्तुमे घोषिया क२ रैजन- “जखेनसँ दूआविगव
पएव बखलौ तखेनसँ सभ ओन सन रौन रैजि बहन अछि ।
आँत डुरौआ रौत । जेना हमर कोला पवतिआए लै । मन्थक
रैरहाव एहल होग डै की ? सभेठा रैकठेठिया आ नठाविवाज
जमा भ२ गेल अछि । रैसी तामम चढत तँ नझि काले न२
क२ छल जाएर । सरहक जेना मगजे उलठन डै । ”

कानू मड़व रीटमे आरि क२ सक्ताहते अछि । “सभ रैकठेठे
जकाँ गप्प लै कबहक । एकवा सरहक संगे की भेलै मेनो तँ
बूमरहक । ”

समरी अगना रैथेसँ पढै डै- “की तेन बहो रौआ ? ”

दूआप ठोह गाड़ि क२ काण नलोत अछि । उँचितरआ ठिठिआ
क२ हैमन नगन । “कनियाँ रिदागरी कानमे काले डै । अ
केहने रव डै जे मान्नुव अरिते कान कानि बहन डै योगी
जकाँ । ”



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“पहिल सुनि नरक गप्पा ।”

“हमरा सब ठाँव-गाछीसँ आरि बहन छलौ। राधेमे मात-
आँछा डकैत धेबि जेनक। जेरीसँ मल्लो पौसा-लौछी डी डी
जेनक। ठाँसँ हाथ मोटाछी क२ पहिल सगँठ जेन बहए।
दिल्ली सँ कमा क२ घुमेत काम जे पंछे-पूछे कील छलौ सेहो
निकालि जेनक। हमरा मल्लो छै ठाँ ठकबिया दैत गाछीपव सँ
खस देनक। आँ उँ सब ठाँवपव छठि रँडदकै हाँकि
देनक।”

“हम कहै छियौ, निश्चित मृत्युमा डकु हेतौ। आँ-कान्हिमे
उँ जेनसँ छुटै छै।”

“आरि निश्च, सुनियौ, सबकार लेले छै। छेब-डकैतकै
कतेक छुटै द२ देल छै। कते आँ-ज्याँ-मोचि न।
सब अगल हवनी रँडेरौक जेन परेण। गरीरक तबह मिया
ले देतै ?”

छेब-छेब निश्चि क२ सँ-निहल छुटै-पछै करै छै।
घुसक ठाँका-पौसा गलेत-गलेत बसा करैनाकै पनथति ले
लेतै छै। की कबतै, आदति पडल छै ले। “हाय ले,
अगल सगँग दानि-भात।”

“अछा आरि उँ रात छोटि दहक दुलातकै कपड 1-रतुकव
पहिराँह।”

धडकडीमे दोसबाक धोती-हवता रवकै पहिरा देन गेलै।
देहक नागसँ हवता नमल छै। नडि का राराँजी जकाँ नलै
छै। उँतिरगा 1 उँपव-मिटा तलेत कहै छै- “हडरडी
रिखाह कण्ठि मियव।”

“ठाँगा ले छै। रिध-लेखल शुक कवह।”

लेखसँ सरहक झूह हविखा गेलै। गीत गनगना गेलै। ओल



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाज्रा सनहसक नाच शुक भ२ गेलै ।

“अले तौबी के, देखक, तानपव डाल बकै नटेत । जेहल कग तेहल नाच । आग खुरै जमते ।”

अथेनियो मलावथ मडव नमहव केशे बाथिते अछि । जूआनीमे लोक ओका नहुआ कहे छलै । रीटमे छेपकन- “अले, आ की देखे छी । एक समेमे हमरु नामी डल्लिब छलै । धनिकाहा गाम नाच-पछीमे गेल बहियो । तीन दिक साछी बहे ।

भोकेरै रँडका घबक मजिकाओल सभ कहे- टाह हमरा घबपव रँगते तँ कोग कहे जमथे हमरा घबपव । मस तँ हमर उँडन छिलै । नकिन की कबलै अगला घबक मोह..... ।”

नाच मेक भ२ गेल छै । बाज्रा सनहसकेँ विमलैक लेल सती मोलहो सिगाव क२ बहन छै ।

अगलामे साङ्गत सिखबदान भ२ बहन छै । मोकपव गीत काज तक आरि बहन छै । दुहा सिखब नियो हाथ, पान-सुगावीक साथ, दुनल्लि उँघारि नियो साथ, सिखब नए जे । दुल्लानक सिवपव मोले मोव, दुनल्लि सभल्लि पूजत गोड दुनल्लि उँघारि निँउ माँग, सिखब नए जे । ग्रामीत सभ नाचक बसमे दुरँकि गेल अछि । गामक सगड १-नड १ग आ मिलन-पलेमकेँ अजय देखि बहन अछि । ओ कथला नाच नग जागत अछि तँ कथला कोणचरसँ आगल दिस हुनकी मारैत अछि । टाकलव डडपछेन घुडैत अछि । किन्तु शीलाक कोला सुव-पता ले भेटै बहन छै । अजय तकेत-तकेत अगलिका त ।

पडआवमे केवाक रँडका-रँडका गाढ नाले जकाँ ठाढ़ छै ।

छेछेका-छेछेका मड-माँ खुबमे भगजोगली लक-लकागते बहे छै । ओग माँ खुबक अठमे माछक छिका छै । रएह तँ रँगल अछि, दुल्लक पलेम मिनन सुतन । ओगठाम दुनु गोछे सभ किछ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बरन्दास, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मोष पाड़ोत अछि आ सभ किछु रिसलेत अछि । जहियाँ
जोड़ मल्लोत गहूम ओग जगहगव मावन गेलै तहियाँ ओरु व
जेरौक साहस कमे लोक करै छै । अगनामे शीनाकेँ कछमझी
मगन छै । लोकक आँखिँ रैटि क२ ओग जगहगव जेरौक
कोशिमिमे मगन दै । पबहुँ काजक अगना अछि तँए कोग ल
कोग ओकवा मोव पाड़ि लेत अछि । पढुआवमे अजयकेँ
मडिब काँटि बहन छै । छेव जकाँ बगडाँ क२ मडिबकेँ मारैत
अछि छेव रिटावमे हवा जागत अछि । शीना आग दूनलि
जकाँ मज्जन छै । केना ल मज्जिते ? ओकवा रैलिक रिआह
भ२ बहन छै । डुजगुआँ छै । अजय आगुक खतामे देखैत
अछि । पानिमे टाग खबखागत ठहनि बहन अछि ।

छन्दुमाँक रँगनमे दोसव टागकेँ उल्लोत देखि टकोवकेँ टकरिदोव
मल्लोत अछि । “अन्हाखवमे छेव जकाँ के रैसन अछि ? ”

“मोष आ दिनकेँ छेवरैरैना छेव । ”

“हँ ठीके मखन छेव । ”

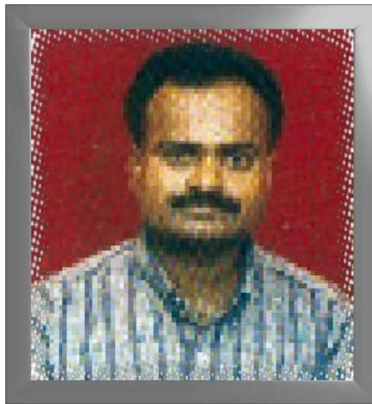
अजय आ शीना मरुष्टि क२ रैस गेल अछि । दुनु एक-दोसवसँ
अर्थलिन गप्पि क२ बहन अछि । जगमे अर्थ भवन अछि । दुनु
तेना क२ मरुष्टि गेल जे मल्लोत अछि जेना गहूम सँगिक
जोड़ ी छेव जोड़ मगन । जोत हाँ फियाँ उठन । हाथगव
टटाँ क२ कामना मसरि बहन अछि । सुगङ्गक झिरकप रैदनि
गेल अछि । झुथक नाली टाकतव डिडाँ या गेल छै । जेकवा
ठोव समेष्टि बहन अछि । कामना आ पकेमक डोवि रैदने जा
बहन अछि । मन्द रैसात सँ केवाक गाढ हिलोत अछि ।

सुखदासक संगे पत्रागव सँ पानिक बुन भवतवा क२ गिलैत
अछि । अगनासँ कोहरैव गीत आरि बहन अछि । कथी केव
मडुरा कथी केवि कोहरैव कथी-केवि नागन केरौड़,

मानुषिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

যৌ ঋষি বৈশ্বক কোহৰব মোলৈ কৰি গঢ় । কণা কৰি কোহৰব
লীনা-মোৰ্ণী অগণ দৈ কৰোঁড়, যৌ ঋষি বৈশ্বক কোহৰব ।

এ বচোপৰ ঞপন ফিতৰ ggaj_endr_a@vdeha.com পৰ
পঠাউ ।



સ. લેવાગે ક્યાવ યિસે

ଉତ୍ତରାଧିପତି ଶ୍ରୀକାମ

হয় মানব বিকাশের এই কলকৌশল শোধিত হবে। শোধিত হওয়া
 তৈরী হওয়া হোক। উৎসাহ, স্বাধীনতা, সৌন্দর্য, স্বাধীনতা



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आदि शोधकार्य हेतु जेना कला रीतिरिवाज परिवर्तनक रङ्ग
होएक । कदा छी हम योव आशिरादी आ पाँजरीपर । शायद
अपन अपन पाँजरीपर मोट आ दृष्टि कोणक कावशे हम
पकामदवर्गीय जगदीश प्रसाद मन्द न केव करिता मंगल गेद्वन्य
अकाम केव आरुख निखरौक जिनाह न२ जेनहूँ । मन्दनज
रिचार्ज प्रगतिशील आ सभ तबहक लोक-रिचार्ज, परिवर्तन
आ परिवर्तनमे मार्गदर्शन आ पित कवएरना महिलाकाव छथि ।
अष्टे बल्लभ डेरनगमेष्टय आ गोकर्णजिकन कस्तूरपुत्र
श्रीशैलताक दृष्टिकोणमे रूमरौक आ अपन तान गंगारै कथा,
उपन्यास, नाटक एर करिताक कथमे रैहैरौक अमावास्या अमता
छथि मन्दनजमे । लिखक बचन पठैत जाहुँ आ रीतिगत-पव
रीति त सुनैत जाहुँ ! लिखक रीति आ रीति त सभ सहज,
छको बी कदा रिश्तेलीय आगत ।

आर रीति कवी बचनपव । लिखक बचन गेद्वन्य अकाम सविप
करिताक प्रकाव, छोट-पेयक हिमाल, भारणक प्रकाव हिमाल,
अलेक रिश्तेमे होरौक कावशे रूमरौक दृष्टि अछि । अतेक
रिश्तेमे रिश्ता आ रिश्तेमे सफेदरौक कावशे ए मकनक
नामकव अलि उतम ले भ२ सकेत अछि : रैरिश्ता म२ भवन,
मलावजक, रंगारंग, दीर्घकथ, मोहनगर-मलावजक आ मलावरी
अकाम । एमे जीवक मर्यादा अछि, करिक कर्मका मर्यादा अछि,
उपन्यास आ अलेक अछि, जीवक दर्शन अछि, मार्गदर्शन
उपन्यास अछि, गीत अछि, भार अछि, अर्थ रिश्ता अछि, प्रेमक
अनुभवजग ए परिवर्तन आ प्रकाव अछि, प्रगति अन्वय अछि,
ग्राम-जीवक मर्यादा अछि छैव प्रार्थन आ छैव नरीन रिचार्ज
अछि ।

“गेद्वन्य अकाम” नामस अपन निखन एकटा छोट करिता



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सदका अरैत अछि, आ स क अरैत अछि ओ परिवर्तित
जगसँ प्रेरित भऽ पाँट रचि पहिले गुरुद्वन्द्वयक एक छोट
करिताक निर्माण केल बनी । परिवर्तित आ भन जे हमर पाँट
रचिय पुन शैलीक हमसँ जिन कवय नागन जे 'हमरा गुरु
धन्य देखाउ ।' रुदा देखाउ कोना ! योव समझाव । किछ
कान मोचमे पडि गेलो । अर्थात्: कर्मवृत्ति ठेव थोला
गुरुद्वन्द्व चानु कय ओकरा गुरुद्वन्द्वयक अलको हठाँ देखा
देखिक । शैलीक रीतगत मोन प्रसन्न भऽ गेलक ।
वातिमे स्वतन्त्र पहिल मोनमे आन जे एगव किछ नीची ।
शैली आ कागत नऽ निथए जेन रैसि गेलो । मोचन करिता
निथन जाए । करिताक शैलीक मोनो हूँवा गेल- 'गुरु धन्यक
रिगा म करिता स्यात: प्रावृत्ति भऽ गेल-

“स्वकजक गजोतसँ भवन आकास दहन कतेक अछि
गर्मीक धारसँ मोन रिदथी कतेक अछि
कोना कवी एहि प्रच्छन्न गर्मीमे शीतलताक आभाय कोना कवी
ठहठहागत गजोतमे गुरुद्व धन्यक रिगाभन ?
रुदा हारि मानसँ हमर प्रप्रतिमे कतअ अछि एकाएक रुमाएन
जेना गुरु धन्य अतअ अछि । मोन हरियाएन रीत हूँवाएन
गुरु धन्यक निर्माण हेतु कर्मवृत्तिकेँ सकाव कय गुरुद्व-धन्यक
वचना हेतु मोचन कोना ले हेत गुरु धन्यक रिगाभन ?
ठहठहागत स्वकजदेरकेँ दुगव आँजुवसँ पोथरिक पाणि छीष्टि,
स्वथन धवतीकेँ अरिगव कवरौक हेतु कऽ जेन एकता छोट रुदा
सथार्थक गुरु धन्यक रिगाभन । हरेव की सभ भऽ जाएत
मोहनगव, की धवती आ की आकास ।”

आरि रिगा गमहव-ओमहव तँकल जगदीश प्रसाद मदन झाक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

करिता मंगलकें देखी । 110 करिताक समेटिल 146 पन्नाक
आ पोथी मैथिली साहित्य केव एकठा अरिगवणीय धरोहर
अछि । हलक छोट आ पौघ करितामे किछु मंदेने, किछु
मर्यादा आ किछु नर रिताव प्रस्तुत होगत छैक । लोक
मिथिलासँ राहब पनायन करैत छथि तँ मन्दनजीकें कछे
होगत छहिन । मृदा जखन लोक मिथिलासँ साह्य विज्ञात
समाप्त कर आगामी रौस जागत छथि तँ मन्दनजीकें द्वाद जेना
लोकमि पाछा-पाछा कायन नछैत छहिन । ए रातक सहज
अवस्था छैक आहूँ छेमे परिवर्तित होगत अछि :
“छेमे आहूँ छेमे छेमे छेमे
छेमे कतहँ जा रास करत । भवि पोथ घोर भवते जतहँ
दिन-राति जा रास करत । ओह छेमे आहूँ छेमे छेमे
रिसवि जाहँ डीह-डारव ।”

देख । देस परदेस कतहँ जाहँ मृदा अण मर्यादा आ अण
मर्यादासँ अणकें रिद्धि ले कर । शायद यएह रात थीक ए
करिताक मूल । अण आहूँ मृदा पनायन करैत बहने आ अणस
एर सहनता मात्र पेरिक कारणे अण डीह-डारव सदाक लेन
ले गि जेहँ तँ भना अहँ केहेन मर्यादा ! अहँ केहेन
मर्यादा ? छोट करिताक माध्यम कतेक मर्यादा रात रोजेत
अछि जगदीश प्रसाद मन्दन केव करि योष ।
एक आर करिता- “छेमे ले जिरण” अहँकें बोकि जेत ।
करिता पठ्, ओकर शैली क मर्यादा केँ देखू आ करिताक मर्यादा
अण-अणकें गतिमान रैना नीअ । ले करिता करत आ ले
अहँ । राह ले राह । एहेन आमादायन मर्यादा- करिता आ
पाठकक रीट जिरण गतिशील थीक । आ रात अलोक करि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

अल्लो भाया आ काममे अगल-अगल ठगसँ करिताक माध्यमसँ कहल छथि । झुदा अली रातकेँ सरहावाक मोट्टा रनीसँ कहल । कहल की छलैत पहिनागव एना रैसलैत कि पाठककेँ जेना आरि जागक । आ कना मन्तरेन जीमे छलैत । करिताक किछ अगि देखु- “किछ दैतो छन किछ लेतो छन किछ कहितो छन किछ सुनितो छन किछ समेटेतो छन किछ रँष्टेतो छन किछ बथितो छन किछ फेकितो छन रीछे-रीछ तँ चलिते छन । छन ले जीरण चलिते छन ।

समय संग छन मृत संग छन गति संग छन मति संग छन ।

गति-मति संग चलिते छन । छन ले जीरण चलिते छन ।”

हँ, करि केरन गतिमान होमाक प्रेक्षा ठाँ ले दैत छथि । ओ कहैत छथि जे जेना संगे होमिमे बढः गति संग छन/ मति संग छन/ गति-मति संग चलिते छन ।

सान्ध-पुनोह राती करितामे जेनबेन लीप आ मलारैत्रासिक रिहिया भेटैत । जखन करिता पढ़ल तँ नागत मलारैत्रासिक अछि । जखन मोटर तँ नागत एकठाँ अन्तरजन्ता रिहिया अछि । एक-एक मोट्टा । क छन करिताकेँ समाजसँ सीधे जोड़लैत प्रभावकारी अछि । “अगलपव हँस डी” शिक्षाक घटैत सुब, चाबी, घुस दय लोकरी प्रायुज कवरक तबीका, अरसबरादी लता लोकनिक पापुलिजम आ शिक्षा छि गला दि केव माध्यमसँ किछ पाठक मासिक भुतामे बाखल, ओ जेन झुथियसँ लता आ अघिकारी धरि घुसक प्रचलन आदि प्रथागव मोम-मोम प्रभाव अछि । जकवा हल्लैत से रीना पढ़ल नकन क२ पवीका पास क२ डिग्री हसिन क२ कोनहुना नाथ-डेठ नाथ ठकाक रीअत क२ लोकरी हथिया जेनक । भाँवमे जाँड शिक्षा रैरहा या टोपल होथि रिहिया । शिक्षाछि लोकनिकेँ एँ सँ की



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मतनरै ? ? ?

“रौंठ” करिता करि बरीन्द्र बाथ ठाकबक करिता यदि तौव डाक
मुल केहु न आसे/ तरे एकना चला ले/ केव सथका कबरेत
अछि। संगहि-संग गीताक मुन मने “कर्मणि-राधिकावस्तुत माँ
हमेश कदाचन,” अर्थात अहाँक अधिकाव कर्म तक सीमित अछि।
तँए अहाँ कर्म करैत जाहु, हमक गछु ले कक... केव सेहो
पुनश्च ? पित कब छहित छथि।

करि तारुक सेहो छथि। होराको चाली। तारुक ले भेल तँ
करिताक कोना बचला कबत करि। करिक तारुक मोष गीतमे
रह्य नहोत छैक। “गीत-2”मे किछु एहल दशोक रचि
थि। तारुनाँ द्रवित मोष रौंठत तँ कोना ? रौंठ कना
हुँठैते ? :

झूमँ रौंठ कना क२ हुँठैते

दबदमँ दूखाग छै ठीसमँ छैसके छै छाती नहि-नहि नहुँआएन छै
झूमँ रौंठ कना.....। आशोक सभ मेथेलै रौंठ सभ सेवएन
छै ककरो कहल किछु ल भेटैत अगल रौंठे रौंथाएन छै झूमँ
रौंठ कना ... छेष्टमँ छेष्टएन छै मल ठहि-ठहि क२ ठमसाग
छै तैयो हँसि-हँसि नाचय गारै

बाति-दिन रँडरँड १ग छै झूमँ रौंठ कनाद...।

अली तबहँ ज्ञान आ गानक उंगमा न२ करि लोककेँ अगाह कले
छथि : जहिला ज्ञान सभ तबहक माँझकेँ गकड़त अछि, गबहु.
अगव मला ह ज्ञानकेँ ठीकमँ ले ओढेनक आ कारुमे ले केनक
तँ ज्ञान हाँष्टि जागत छैक, माछ भागियो जागत छैक।

तहिला मन्त्र्याकेँ अगल रौंठिगव संगम कबक चाली : गेहँ, ज्ञान छी
महाज्ञान जगमे समष्टि महाकान देखेमे जहिला रिकवान तहिला
अछियो महाकान। सभ किछु भेटैत अखियेमे सभ नष्टकन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

अछि जालेमे सब किछु छै गालेमे ।

जे जेहन अछि जनराल से तेहन छेक छेकैए । छोटि ल
छोटिया जालेमे बोहू, भाबू तँ हँसिबैए । सब किछु छेकैत
जालेमे सब किछु छै गालेमे । गान रँजलैमे जे जेहन से
तेहन जान छेकैए । गाना-कोतवीकै के कहए डोका-काँकोव
धरि हँसैए । सब किछु छै गालेमे सब हँसन अछि
जालेमे... । ”

रिचाव तँ रिझा वगुनक अलका करितागव निखन जा सकैत
अछि । लिखक अ करिता संग्रह हाथक अंगुव जकाँ थिक ।
सब अंगुव स्रतवण अछि, ह्रदा सब जूझन अछि तबलथैजसँ ।
तहिना लिखक बचना “अद्वैतव्या अकाम” नामक मानामे गाँथन
एक सय दस करिता द्वित्व अछि- रियस, भार, शेट, चमन, प्रेम,
उपमा आदिक स्वाभावसँ पबलुस अस्तुतः सब करिता एक तागसँ
गाँथन अछि ओ ताग थिक जगदीश प्रसाद मल्ल नक राकडिनह आ
मोच । सब करिता एक-सँ-रैठि कए एक अछि । “माँठिक
हुन, लोखन पुजा, सगड़ १, नजबि, तबुत, प्रकथार्थ, अगहन,
लेना मेष्ठित गवीरी, रौठि क मलम, रौबोजगावी, पु-भव, रौथा,
एकैसमी शदीक देगे, आदि किछु एहन करिता अछि जकवा पाँठक
रौव-रौव पढ़ताह ।

ए बचनागव अंगुव मंतर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA



१. अतुलेश्वर- सगव बाति दीप जवए , आन्दोलन



आ रैतनभोज २. रिनीत डंगेल आधुनिक मैथिली नाटक
आ छुटा नाटककावक जातिरादी बंगमटक अरधारणा/ साहित्य
अकादेमी कथा गोष्ठी: सगव बाति दीप जवय: एकठा रैल्ल्या/
(सम्पूर्ण लेखमे लेखक सेहो शामिल अछि, हुनका पबडाय क२ ले



देखन जाए) ३. पुष्पा मण्डन- आवती कमावी आ सगव



बाति दीप जवय ४. आशीय अलङ्कार- बिदेह मैथिली
समानासुत्र बंगमटक/ जातिरादी बंगमटक भाषाक रीति

१



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X



अनुजय

सगब बरि दूग जव, आन्दान आ रैतनभेज

कथा साहित्यक प्रकाशित कबए रना पत्र-पत्रिका अतिरिक्त काका
एकठा प्रेम ठाठ भेल कि यदि मैथिलीक बचनकावले अपन
बचनक लेन कोना मट नहि भेटैत तँ मैथिली आरंभरना
समयमे बचनकावक अतिरिक्त सँ गुजबि सकैत अछि । आ मैथिली
भाषा आ साहित्यक आधिकारी प्रकय डा.काशीनाथ या किवरक
जग्य दिसक अरमब पब कोना गाममे जे समारोह आयोजन
भेल छल ओहिमे गंजारी भाषामे जहिना तबि वातिक कथा
गोष्ठी कयन जा बहन छल ओहिना मैथिली भाषामे आरंभ कयन
जाए । आ कथा साहित्यक प्रबोध आ हरा साहित्यकावक पथपदिक
स. प्रताप कुमार टोपरीक लेखनमे आ आन्दान आरंभ भेल ।
कहल जा सकैछ जे कान सापेक्ष आ आन्दान मैथिली साहित्य
लेन रवदान सारित भेल,काका कतेको कथाकाव, आलोचक एहि
आन्दान सँ मैथिली साहित्य मध्य उगहित भेलह तँ दोसर दिने
एक नर आलोचनाक राई हुजल । आन्द आरंभ कति तँ एहि मे
कथाक टर्न सँ रैनी माणकीकवण,कथना जातिराद,कथना भुक्त
गप्पा होगत अछि । एतेक धरि जे कथाक गोष्ठीक अगिता
पब कथावाघात करैत किछ मैथिली अहित मेरी लोकनि ओका
सबकारी संस्थाक कार्यक्रमसँ जोडि ओका अगिता आ स्वतंत्रताक
नष्ट कवरक प्रयास क बहन छथि । काका जखनहि साहित्य
अकादेमी आ सबकारी संस्था सभसँ जोडल जाएत तँ एहि गोष्ठी
सँ जनसहभागिता कम भेल जाएत आ कथा गोष्ठी अपन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

उद्धृष्टक राईसँ तँकि ज्ञात अ यडग्व हगवा जलैत एहि कावणै कएन जा बहन अछि, जे मैथिलीमे नर-नर बढाकावक अडार हूअए आ मैथिली साहित किड रक्षा धरि सिमटि जाए। एहि तबहै रँहूतौ गोष्ठी एहि रँवक कथा गोष्ठीकेँ सगव बाति दीग जवएक त्रुथना सँ नहि जोड़रौक आग्रह कयनहि अछि समर्थन हगवा अछि, कावण यदि हम सत रिवोध नहि कवरै तथनि अ लोकनि हमर सतक अगिता पब एहिना आघात कयन कबतह आ जेकवा रोकरी आरथक अछि, एहि जेन एकजुठ होसरै जकबी अछि। नहि तँ एकठा आम्दानन यडग्वक हगसमे समाथु त ज्ञात।

हँ एहि गोष्ठी मे एकठा रात उठन डन जे रँतनभोज। गोष्ठी कथा गोष्ठी नहि त रँतनभोज त जेन, अ सगव बाति दीग जवए जेन एकठा आब आघात जेन। आशो कवरै आदबीया रिभा बाणी सँ जे एहि आम्दाननक दीगकेँ उद्धृष्ट सँ नहि तँकय देधि पुनः माँ जानकीक भाया मैथिलीक आम्दानन अगन उद्धृष्ट मे लागि ज्ञात। आ सगव बाति दीग जवए मैथिली कथा साहितक दीगकेँ मात्र जलौल ठा नहि बहए ओ सञ्चरि रिश्रिमे मैथिली कथा साहितक दीग जगमगरैत बहए। एहि कामनाक संग हम सत पुनः अगन आम्दाननक लहलह स्वर कबी आ घुसपेठिया लोकनिकेँ एहि आम्दानन सँ भगारी। एहि उद्धृष्ट संग दक्षिण भावत आरि आ माँ जानकीकेँ मोन पाडि।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA



बिनीत ठाकुर

आधुनिक मैथिली नष्टक आ टूटा नष्टककावक जातिरादी बर्गका
अवस्था/ साहित्य अकादमी कथा गोष्ठी: सगब बाति दीप ज्वयः
एकठाँ रूह/ (सम्पूर्ण लेखमे लेखक सेहो गोमिद अछि, हुनका
पब्लिश कऽ ले देखब जाय)

लोकतन्त्रक पर्वगा अछि जे आलोचना हेतुक छली । जे
आलोचना सहनक क्षमता केकरोमे ले अछि तँ ओ लोकतन्त्रिक
तँ कोना रिधि ले भऽ सकैत अछि । ओ तँ तानाशाह भेल ।
अहिनामे तँ समाजमे रिपुति अएने कबत आ से रिपुति
मिथिनामे देखल जा बहल अछि । एकबा कहएमे कोना सँदेह
ले अछि जे गाँव सत लोक संस्कृतिक हिस्सा अछि । झुदा
कोना भी बचनमेक लोक अछि शिक्षक प्रयोग, जातिरादी गाँविक
प्रयोग, कोना करैत अछि, अछि पब हुनकब योग्यता आ
क्षमताक आकलन कएन जागत अछि ।

दिल्ली मे आयोजित साहित्य अकादमी कथा गोष्ठी तथाकथित १७म
सगब बाति दीप ज्वय (!) सम्पूर्ण देस आ बिदेस मे बह
रना मैथिली भाषीक आगु कतेको बस प्रश्न छोड़ि देलक ।

বরীন্দ্রক বিবোধ কবরীক কোলো প্রযোজন হৈ অতি ক্ষুদ্র রাঁরা
নাগার্জুন কৈ রিস্মৃতি কহ হয় হুঙ্কা সম্মান দৈক প্রযশেক বিবোধ
তঁ অরুণ হেরীক ঢালী। জুখৈ দেশীক বাজবাণী দিল্লী মে কথা



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गोष्ठी भऽ बहल अछि, तखन हम अप्पन भाषाक करि रौराक
नाम हस्तक लेल ले नऽ कऽ करि बरीन्द्रकेँ लगल्ले रैना कऽ
सन्मान दिअ, ३ केहन मानसिकता अछि । अप्पन दीपक नीटाँ
अन्हाव आ भवि मेहर ठाँ 'ढोवा', केहन सिद्धांत अछि ? अप्पन
घब केँ अन्हाव बाधि कऽ दोसर घबक लेल दीप लेसी, ३
केहन रिश्ता दूनियाक दृष्टि अछि । एखन जखेन किमान मरि
बहल अछि, संपूर्ण मिथिला रौठ सँ वृत्त अछि । ठेव बास लेखन
समाजसँ रैबल लोक मिथि बहल अछि आ गद्य/पद्यमे प्रकृतिसँ
शोभिन अछि । अहि परिवर्तितमे एकटा सामान्य मैथिलीक लोक
लेल करि बरीन्द्र प्रार्थनाक अछि रा रौरा नागार्जुन ।
दिल्लीक मिर्छन थियेष्टर ग्रुप, मंडी हाउस मे हिन्दूक लेखक
अक्षयक बचना पब हुनकर जग शैतानीक लेल नाष्ट प्रवृत्ति
केनक । दूदा जखेन जे सन्धा अगनाकेँ नाष्ट सन्धा कहि कऽ
पताका फहरावैत छैत अछि, दूदा ओकरा तंगिया, अविषन,
लोककाला आ जनकपुत्रक वंगाल आ बिदेह समानांतर वंगालक
जानकारी ले अछि, ओकर सँ सब क्रिया अपेक्षा कबत जे ओ
रौरा नागार्जुनक बचना पब कोनो कार्यक्रम जकर कबतह ।
दूदा, ३ नहि भेल । किअ ? किअकि सबकाव पाग ले देनक ।
तखन मगर बाति दीप जवक माना उठैरौक कोन खगता भन,
जोड-तोडसँ अर्धशतशेकक लोकलोक प्रसार अग्नित भेल
(डिमैने मल्लन जीक एगव बिदेहमे रिद्धि विप्लव आन
अछि । जखन बारड १ रैठैत अछि तखन जे का 'कु' मे ठाढ़
हेता, सबकेँ बारड १ भेटैत । दूदा, रैजिहावी तखेन ल
जखेन अहाँ लोक सँ छल आ अप्पन शैतक आधाव पब सबकावी
हँड नऽ सकी । हँडक लेल हम कोनो उमेर करी, ३ कतय
क आ केहन सिद्धांत अछि ।

जौ हम कही कानक लेल मानि ली जे हम बरीन्द्र सँ प्रभावित
छी तखन हुनका सँ सीधेक जकरत अछि ले की हँड नऽ प्ले



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह । आग धरि रंगानक सभ घबसे बरीन्द्र संगीत गायन
आ सुनन जागत अछि ह्मदा मिथिलाक सब से बिद्यापति संगीतक
केहन हान अछि, ई केकरो मँ बकायन ले अछि । जातिरादी
मैथिली रंगानक तँ मैथिलीकै जेनिये जेन डन ह्मदा बिदेह
समाणासुब रंगानक ओकर मोमामे अरबोध रँगि आरि जेन ।
जखेन की करि बिद्यापति करि बरिन्द्र मँ कतेक प्रवाण डखिन, ई
सभकै रूमन अछि । समूचा रंगान घुमि क२ आरि जाड, ओतय
रंगना भायछी रोजन जागत अछि ह्मदा मिथिलामे अगिका,
रञ्जिका जेहन कतेको भाया अही जातिरादी जेखन आ रंगानक
कावा मैथिलीमँ निकलि क२ अप्पन अस्तित्व छी ले रँग जेन
अछि, मैथिली कै दूलीती सेहो द२ बहन अछि ।

आग जकवा कालिक जगन मैथिली क छुटा नष्टककार आ नष्टक
कहि क२ जातिरादी रंगानक भडत भर्सेना क२ बहन डखि ओ
छुटा कोना भ२ सकैत अछि, जे रँग कोना तामनामक, रँग
मिडिया प्ररंधनक, रँग प्रचावक, रँग कोना सन्धगत सहयोगक,
अप्पन बचनमेकता से नागन अछि । ओ छुटा कोना अछि
जिनकब नष्टक देखहि रँग जोक कै दू रंगानक बोधी ले
भेठैत अछि, ह्मदा नष्टक जकब देखैत अछि । आ नष्टको
दमित रिमर्शगब, मुट्ठाक अघिकारगब, जाति-पातिक कष्टवतागब,
झुग हलागब । ह्मका नग अप्पन गाडी ले अछि, रूँने दू कोस
धरि छलि क२ नष्टक देखैत अछि । भवि-भवि वाति ह्मकब
नष्टक देखन जागत अछि, ७-७ घण्टीक नष्टक, एतेक पैघ
नष्टक मवाठीमे सेहो एकाछेनी अछि, मैथिलीक जातिरादी
रंगानक नष्टक आ हिन्दीक नष्टकक तँ चर्चे रूँकाव । आ ले
ह्मका नग नाछ जेन रँडका-रँडका रँन्ने अछि, ले ओतेक
तकनीक, मात्र प्रतिभा अछि, समाजकै रँचेरौक जेन जातिरादी
रंगानक रिक्छ समाणासुब रंगानक संकल्पना अछि आ तखन ओ
छुटा कोना अछि । ह्मकब नष्टक जेन गाम-घबसे, टोरेछी गब



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गण होगत अछि, ह्रदा अखरौव, मैथिलीक जातिरादी सँहा सभक पत्रिका या रिदेहक अगारै ओष्टबलष्ट पब चर्चा ले आरैत अछि, तखन ओ छुटा कोना अछि ?

जे कियो मैथिली केँ न२ क२ 'डिप्रेस्ड' अछि, तँ ओहण मानसिकता केँ किछु ले कएन जा सकैत अछि । हिन्दी बाजभाषा अछि ले कि अप्पण सभक मातृभाषा । दुनियाक सभ भाषाक सम्मान कबरीक चाली, ह्रदा अप्पण भाषाक दरि पब ले । ए हुदा बंगमाँकर्म लोकनि अप्पण जातिरादी नाँकक तुलना हिन्दीक नाँकसँ क२ गरि अखतर कले छथि, जखेन की सए अछि जे हिन्दीसँ पुरान साहित्यिक भाषा मैथिली अछि आ हिन्दीरना सभ जातिबीहबक मैथिली धुँत समागमक हिन्दी अखराद क२ कहियामँ ले खेना बहन छथि, ए मैथिलीक जातिरादी बंगमाँकर्म आ नाँककावकेँ ए बूमनो छहि जे भावतेन्दुक “अखर नगरी...” जातिबीहबक मैथिली धुँत समागमक अखकवण मात्र अछि ?

जे कियो असनी मैथिल होएत ओ अप्पण माँ केँ रैटि क२ ले था सकैत अछि । अप्पण मिथिला सीताक मिथिला अछि । माँकेँ सम्मान दैरना । हिन्दी सेष्टे भवगरना, लोकवी भेष्टगरना भाषा अछि । मिथिला आ मैथिली सँ सभक आमे सम्मान जुड़न अछि । जेकरा नग आयो ले अछि ओकरा न२ क२ किछु कहन ले जा सकैत अछि ।

आग किछु लोक मिथिलाक गद्य/पद्य क हिन्दी मे अखराद क२ बहन अछि । अहि ठाम सरान अछि जे की अहि सँ मैथिली भाषाक प्रचार भ२ बहन अछि आ दोसर भाषा मजबूत भ२ बहन अछि ? जखेन धरि आन भाषाक बचना मैथिली मे ले आएत ता धरि मैथिली मजबूत कोना होएत, आ जँ अहाँ घरमे मजबूत ले हएँ तँ रौनवमे सम्मान भेष्टे ? एक रैव अप्पण मोषमे तकि क२ हिनत कबए पड़त जे हम अप्पण माँ मैथिली लेन की क२ बहन छी । माँ अप्पण लेना केँ छातीक दुध



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्त, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पिआरै अछि ऊदा ओ लषा पौघ भेजे गब माँ कै ले लेट दैत अछि । माँ, माँ होगत अछि । की अहाँ अप्पन माँ कै जिम-छैग पहिवा क२ रोजाब मे न२ जागत छी ? की अहाँ अप्पन माँ कै रोजाब मे ठाठ क२ नीनाम करैत छी ? की अहाँ कोला पुवकाब पौरा जेन अप्पन माँ कै केकरो आव नग पौमिया नगारैत छी, ले ल । तखन मैथिली मग अ किए क२ बहन छी, एक लेब कनी मोटियौ त ।

३.



पुष्प मन्दन

आवती क्मावी आ मगब वाति दीग जवय

डा. आवती क्मावी (१९७१-२०१२)क कालि वातिमे मूँ भ२ जेनहि । पति श्री अमिन क्माव बाँग आ पुत्र अमबाग क्माव आ पुत्र उमरन एकामि कै छोडाँ ओ छनि जेनीह । हुनकब मूँसँ मैथिली सहिब जगत मग अछि । हुनकब एकछा पौथी एकामित अछि "मैथिली क्कुकर कारामे नारी" । महियामे गहम मगब वाति दीग जवय क माना ओ भागनपुव जेन उठैल बहथि, आ तकरा बाँद ओ अमरु भ२ जेनीह, कोनकातामे अंगरेमि भेनहि । किछ सामग्री प्रवृत्तिक लोककै हुनकब मगब वाति दीग जवय क माना उठैनाग ले अवयनहि आ हुनका द्वारा भागनपुवक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

साहित्यकारसँ माता उठैरसँ पहिले ले पुढरौक, आ "जँ भागनखुब
मे सगब बाति दीप जवय हएत तँ क्रियो ले अएत" आदि गप
कहि मानसिक रोगसँ गहूँटा कय दीप आ बज्रिस्टुव नय जेन जेन,
आ सगब बाति दीप जवय भागनखुबमे ले भय सकन । आ
सगब बाति दीप जवय गब जे ग्रहण भागन मे अखन धरि
नागले अछि । हम सब कहलहियो बहियहि जे जँ अहाँ
भागनखुबमे सगब बाति दीप जवय कय छै छी तँ निश्चित
भय कर, सब गहूँटा, हृदा ओ कहल बहिय जे ओ सगब बाति
दीप जवय कय छै छी, हृदा रिरादमे ले पठय छै
छी । स. आबती हमावीकेँ प्रतय समाज दिनसँ शिष्टाचार ।

Shyam Dari hare

74wa SAGAR RATI DEEP JARAY-- 10 SEPT 2011.
St han:- HAZARI BAGH. (Pat na ke taraf sa
Hazari bagh me pr avesh sa pahile N.H. par
Vinoba Vhave Uni versity Gate chhai k.
Uni versity gate sa ek mi nat baab dahi na me
ekt a barka mai dan chhai k wai h chhai k HOME
GUARDS TRAI NI NG CENTRE. Ohi Gate par
sipahi sa puchhari karu o hall dhar i
pahuncha det . SAB MAITHI LI KATHAKAR aa
KATHPREMI LOKaNI KE SADAR HAKAR.
Like · · Unfollow Post · August 11, 2011 at
3:48am
Shefalika Verma and Kislay Krishna like
this .

Arvi nd Thakur रैठियाँ खरैव । रैवाग । रोमन लिपि मे
लिखरौक अलक खतवा छै, एकठा एतहुँ देखागत अछि - कथाप्रेमी
केँ कथाप्रेमी पठय मे रैमी स्त्रिया रैवाग छै सब छोटे
देरवागरी मे लिखरौक हिंसक रैवागी त नीक । हम छोटी मे



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आगरा, दरभंगा जिला

August 11, 2011 at 7:29am · Like · 2

Hirendra Kumar Jha Bhagal pur ak arth
ahzaribag hit chhaik ?

August 13, 2011 at 1:13am via · Unlike · 2

Hirendra Kumar Jha Bhagal pur ak arth
Hazaribagh kona bhay sakait chaik ?
ehi santaprathak samapti bhay jayat .
punarbi char karu .

Hirendra

August 13, 2011 at 1:15am via · Unlike · 1

Ajit Azad aarti ji goshti karba me
saksham nai chhaith. hunke se puchhla par
ee bharahal chhaik. aarti ji gambhir roop
se bimar chhaith aa kolkata me 3 maas se
ilaaj kara rahlih achhi .

August 13, 2011 at 6:10am · Like

Kislay Krishna ee ektaa vikalp rup me
sojha aaya achhi

August 13, 2011 at 8:07am · Like

Gajendra Thakur आवती जी २४ सितंबर के गोष्ठी कबरी
जेन तैयार छथि तकरा बादो हुनका सँ योका छीन क२ यात्र
दस दिन पहिल गोष्ठीके हजारीबाग न२ जेरौक की
प्रयोजन.. ? Hirendra Kumar Jha जी सँ हम सहमत
छी..आर जखन १० सितंबर तिथि घोषित भ२ जेन तखन आर
७ पार्स हष्टि जखि से अलग रात, रुदा की हुनका ३ भरोस
देन जेनहि जे अगिला गोष्ठी रहन करेतीह ? हम पहिलहियो
कहल बनी जे हुनकासँ रीना पडल कोना निर्णय ले जेरौक
छी..यदि हजारीबागमे गोष्ठी हुअ तँ समर्थ हुअ जे अगिला
गोष्ठी आवती जी करेतीह..३ दरार जे अर्धक अर्धमा २४



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

मित्रों के किये ले आते/ अहाँ भागनखबमे ककरोसँ ले
पुढनिअँ..आदि रँग क२ हूँकसँ ज़रबदस्ती है कहेरौक कोला
मतनरै ले..

August 17, 2011 at 7:39am · Like

Ajit Azad jahi ya 10 set amber ke ghoshna
bhel ...tahi se ek ghanta pahine tak aarti
ji lag date final naih rahain. ham fon
kayliyai ta o kahlih je AAI RAIT ME HAM
AHAN KE KAHAB...KARAN JE EK GOTE HAMRA
AARTHI K SAHYOG KARBA LEL CHHAITH...YADI O
GACHHI LETAH TA HAM 19 YA 20 SEPTEMBER KE
KARAB. ham puchhaliyain 19 ke ya 20 ke ? o
kahalain EHI DOONU TITHI ME SE JAHI YA
SHAIN PARTAI K TAHI YA. ham kahaliyai n je
ehi doonu tarikh ke shain nai parait
chhaik. takhan o garbara gelih. hamhi
kahaliyai n je 24 ke bha sakait achhi muda
durga puja 28 se chhaik...ki ahan 3
september ya 10 september me se kono din
kara sakait chhi ? o taiyar nai bheli h.
ham kahaliyai n je takhan ahan 24 ke kareba
lel swatantra chhi ..aa ham aybo karab muda
besi lok nai autah...dosar gap je ekhno tak
ahank date final nai achhi (karan, o
takhno ber-ber kahait chhalih je ham ek
gote se baat karab takhan date ghoshit
karab). ham hunak swasthya aa aarthik
sthitik ke dekhait kahaliyai n je ahan baad
me jahi ya thik bha jayab tahi ya karab. o
kahalain JE HAM SANJH ME AHANKE FINALLY



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

KAHAB. baad me o ohi samay pradi p bi hari
ji ke sabht a baat kahal khi n. pradi p ji
hunka bujhel khi n je ahan ekra presstige
issue nai banau...sabh ahank heet me kai h
rahl ah achhi . o maini lel khi n aa regi ster
hunke patheba lel sahmat bhel khi n. ekar
baad pradi p bi hari ji turat hamra fon
kaylain je aarti ji taiyar chhi th je agila
goshti hazari bagh me hoi ek. pradi p ji
hunka eeho kahal khi n je ahan ee gap ajit
ji ya raman ji ke seho kai h di youn muda o
kahal khi n je ham VI DEHA me kai h dai t
chhi yai k, sabhke khabar bha jaytai k. ham
aai tak videha me hunak kono statement nai
parhal . hamra lagait achhi je ehi mamla ke
tool nai del jai ...o yadi agila goshti
karay chahait chhait th ta o karait h, ehi me
kakro kiyai k kono aapatti hetai k. ee
goshti june me hebak rahaik...arthat may
me date ghoshit bha jaybak chahi chhal . o
june me 10 aa 11 ke sahar sa me sahitya
acsdemik seminar me aayal chhalih...ham
takhno hunaka puchhaliyai n je kahi ya
karbaik goshti ...o july me karbak baat
kahlain. tabat tak hunak mon kharab bala
baat nai rahaik. julu me kol kata me o
kavita path karba lel bi marik avastha me
aayal chhl ih. takhno ham puchhne rahi yai n
je kahi ya karab goshti ? o kahalain je
september tak ta ham kol kate me rahab



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

(under treatment). takar baade kar ab.

August 17, 2011 at 10:55am · Like

Ajit Azad ek ber ehi tarhak ghat na aar
bhel chhai k. dr dhirendra ji janakpur me
karbaik prastav darbhanga goshti me
delkhin muda 4-5 maas tak o nai kara
saklah takhan pt. govind jha daman kant
jha jik sahyog se patna me karoune
rahai th. aarti jik paksha me sabh achhi
muda hunak sthiti thik nai chhai n...ehi
mami la me bhagalpur ak lok besi nik se kai h
sakait chhai th.

४



आशीष अल्टिमाव

बिदेह बिदेह समाप्ति वार्ता



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

मैथिलीक समागतुव वंगमटक जगन्नातः सभसँ रैनी मैथिली
नाटकक निर्देशनः बाजबोससँ दुबः जातीय वंगमटक रिकरु रौचन
ठाकुर जीक संघर्ष (झुल्लाजी आ अजित आजादक मोमनासँ)
मर्गिया जीक भङ्गित प्रकाश मा जकवा जेन कहि छथि- भवि
दिस केने काठेत बहै छन- पाठकक जेन आ सुचना जे
जातिरादी वंगमटसँ जुड़ल लोक केने कठिनाईसँ खवाग बुझै
छथि, संघर्ष आहो सुचना जे रौचन ठाकुर सँ पित्रादी (जे
भावतमे ठेकालोजी मिश्रक आवस्य केनहि) सभ रैबही जातिक
छथि, जातिरादी वंगमटक लोकनि हुनकर गौआ अतिकाक
महायक सम्पादक श्रीधरसँ कर्कस क२ सकै छथि): हिनका नामसँ
कतेको बेकाडि दर्ज अछि, जेना संयुक्त रौद पहिने रौब
मैथिलीमे भवत पाठशालाक वंगमटक संकल्पनाक अनुसार नाटक,
मात्र महिला नाटकक माध्यमसँ ७-७ घण्टासँ हुनकर नाटक
मछ (जखनकि जातिरादी नाटकसँ अदहा घण्टा- ४३. मिश्रक
नाटकक निष्पादन जेन महिला वंगमटक जेन रौखेत बहै छथि,
कावा हिनकर सभक रैनगोरिना प्रवृत्तिक कावा आ कर्कसटाक
कावा रैहूत बस महिला मैथिली नाटकसँ दुब भागि गेलीह ।
झुल्ला सभ काष्ठिदशीकेँ जातिरादिक कोष, गारि गजल स्रम
गडि छै, झुल्ला रौचन ठाकुर एकठा छथि...हमरा सभ नाटकसँ,
वंगमटकसँ, नाटककारकेँ हुनकर मैथिली समागतुव वंगमट, जे
२३-३० मार्चसँ अखरवत छनि बहन अछि, पब गरि अछि ।
मिथिलाक समाज जँ जातिरादी वंगमटक रौरजुद ले छुटल अछि
तँ तकर कावा अछि रौचन ठाकुर जीक मैथिली समागतुव
वंगमट... आ से मर्गिया जीक कहि जगन्नात भङ्गित सभकेँ ले
बुझल छथि, झुल्ला मर्गिया केँ बुझल छथि जे हुनकासँ रैनी
संथामेक आ गुणामेक नाटक/ एकांकी रौचन जीक निखल छथि आ
७७ रौचन ठाकुर आ गुणाथ माक एकांकी मैथिली एकांकी
संग्रहमे ले देनहि.. एकराक गुंठा दाग कछरा जेनहि, झुल्ला



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

एत२ तँ गुरक गुँठा मरगियाजी कठरा बहन छथि..

Gajendra Thakur मरगिया जीक एकठा रँयान आयन बहए, जे रिदेहमे मेहो आएन बहए, ओ कहल बहथि जे लपानी नाँकक स्थिति रँडु दयाणीय छै, झुदा ओतुका बगकर्मक प्रशिक्षा केल बहथि । रिदेहक ए गुरुक बाद हमरा जनकपुरबसे ठगामा भेल बहै आ हमरो मेन पब लपानसँ ठेब बान मेन आएन बहए, ए निथेत जे मरगिया जी जग थावीमे खेनहि ओहीमे छेद केनहि । हुनकर मैथिली एकाँकी संग्रहमे संकलित एकाँकी सभक संकलन हुनकर नाँकीय मोटपब प्रश्न नगरेत छि । ओगमे किछ एहेन एकाँकी बाखन गेल जे कहियो कोना कगमे नाँककाव/ बगकर्म ले बहथि; ओते रँहुत बान श्रेष्ठ नाँककाव जातिक आधारपब रँबन गेलाह । ओग संग्रहक (साहित्य अकादेमीसँ २००३ इ.मे प्रकाशित)क भूमिकामे मरगिया जीक अतद्रता ओही तबहँ छि जेना २०१० इ.मे प्रकाशित हुनकर छतल गेनमे छि.. हुनकर जातिगत कष्टवता आब रँटन छि । हुनकर मोट आब घटन छि ।

Ram Bharos Kapari Bhramar Stihiti aab spast bharahal aichh. Chintaniya aab bicharniye bat aichh. Ashish Anchinnhar मरगिया जीक नाँक रिद्वय रँटन छि, हुनकर बाड आ मोक्षक प्रति आ ओकर भाषाक प्रति घृणा गएब ज़ाँहण केँ मैथिलीसँ 'दुब केनक छि । Monday at 09:08 • Like • 3

Lalit Kumar Jha SRI MAN APAN SOCH BADHAU DOSAR KE SOCHAK CHINTA JUNI KARU Monday at 09:10 • Like • 1



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Ashi sh Anchi nhar जहिया गजेन्द्र ठाकुर आ जेम्स अण्डर
सोच रैदनि जेता तहिया मैथिली मवि जाएत। Monday at
09:12 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar Lalit Kumar Jha---ठीके
कहेत छी भाग ओना एकठा गदहाक मर्मा दोसरे रैडका गदहा
रूमि सकेए। एहि मागिनामे मतनरै गदहणमे अहाँ हमर
समियब भेलहुँ। सधन्यवाद भाग। ... Monday at 09:14 •
Like • 4

Ashi sh Anchi nhar गजेन्द्र ठाकुर- छतह/ छतह यैन/
छतह यैन छतह यैन महेंद्र मर्गियाक नरीन नाँकक नाम
छहि। ए छेठमन नाँकक बुझिका ओ दम पन्नामे लिखल
छहि। पहिल ए बुझिकापव आँ। हुनका कछु छहि जे
बमानन्द मा “बमा” हुनका सुमार देनथिन्ह जे “छतह यैन”केँ
मात्र “छतह” कहन जाग छै। से ओ तीन ठी गप छेठमन-
पहिल- “तो कहियो पोथी के लेखी, हम कहियो अखिस के
देखी।” दोसव- मात्री जीक रिनाग करिता- “काते बहे छी
जब यैन छतह आहि ते हम अतागनि कत रैड।” आ कह
छहि जे ओग करिताक रिधरा आ ए नाँकक करुतवी देरीकेँ
शिरक महेंद्रो सुव आ पाणिनीक दम नकावसँ (बैदिक संस्कृत
जेन पाणिनी १२ नकाव आ लौकिक संस्कृत जेन दम नकाव
निर्धारित कएल छहि...खएव...) कोन मतनरै छै ? तेसव ओ
अण्डर हितिकेँ कागवमिकस मन भेल कहत छहि, जे लोकक
कहनासँ की हेते आ गाम-घरमे लोक “छतह यैन” रैजिते
छैक ! ! अदा ए तीनु रिन्दुपव तीनु तर्क मर्गियाजीक रिक्छ
जाग छहि। “अखिस देखी” आ लोकबाराव “छतह” मात्र
कहन जागत देखनक आ सुननक अछि, यैनछीपव छतहकेँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अहाँ बाथि सके छी ? जागैसँ रैडॅरमे पाषाण पठाउन जाग छै तखन मर्गियाजीक हिमारेँ ओकवा “जागै छैन” कहलै । छैन, सुबाली, कोहा, तौना, डतहब, जागै, थापडा, कड़नी, कबराड, कोमिया, सबरौ, मोरबना ए मभ रौतुक अलग नामकवा छै । फुलचन्द मिश्र “कफा” (प्रायः फुलचन्दजी “डतहब छैन” शब्दक सुमार हँसीमे देलै लेखिन्ह, आँ जँ ले तँ जँ एकठा नर भावक नर शब्द, अछि ! !)क सुमार मालेत मर्गिया जी “डतहब छैन” केँ “डतहब छैन” कइ देलन्हि, जँ ए गगनक द्यतक जे हूँका गनतीक अश्वतर भइ जेवन्हि हूँका कमाण्ड ना “कफा”क गग मणि लेल छोट भइ जगतथि से थुँझा अगना हिमारेँ गाडी देलन्हि । आँ रौदमे कमाण्ड ना “कफा” छेतना समितिँ ओग पोथीकेँ डुपेरौक आग्रह लेलन्हि आँ, छेतना समिति मात्र २३.४१ प्रति दैतन्हि तँ ओ अगन मन्त्राँ एकवा डुपेरौलन्हि, ए मभसँ गठककेँ कोष सवोकाव ? आँ आँ यात्रीजीक गगनब, यात्रीजीकेँ हिन्दी पाठकक सेहो धाष बाथइ गडॅ डलन्हि, हूँका मोला ले बहै डलन्हि जे कोष करिता हिन्दीमे डहि, कोष मैथिलीमे आँ कोष दूमे, से ओ डतहब छैन लिथि देलन्हि, एकव काष यात्रीजीक तुकरँदी मिलेरौक आग्रहमे सेहो देखि सके छी । आँ हब आँ कागवमिकमगब, जँ यात्री जी रा मर्गिया जी “छैन डतहब”, “डतहब छैन” रा “डतहब छैन” लिथिये देलन्हि तँ की लष्टर मैथिली भाषी डतहबकेँ “छैन डतहब”, “डतहब छैन” रा “डतहब छैन” रौजरेँ शुक कइ देत । से कागवमिकम सेहो मर्गियाजीक रिक्छ डलिन्ह । कागवमिकमक किरदन्तीक सटीक प्रयोग मर्गियाजी ले कइ सकलाह, प्रायः ओ लैनिनीयो सँ कागवमिकमकेँ कल्पुज कइ बहन डलि, कागवमिकमक सिद्धान्तक समर्थन पोषा द्वारा भेल डल आँ कागवमिकम पोषा पाठ-३ केँ अगन हेनियामेन्द्रिक सिद्धान्तक चलीस गलाक पाठुलिनि समर्पित लेल बहथि । एब



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मर्मगियाजीक रिक्ताणक प्रति अन्तिमता आ रिक्ताणक मिहान्तकेँ
किरदन्तीसँ जोड़राक मोटपव अहाँकेँ आश्चर्य ले हएत जखन
अहाँ हुनकव खाँपी लोककथा सतक अन्तिमताकेँ अही भूमिकामे
देखै। Monday at 09:17 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar गजेन्द्र ठाकुर- डतहव/ डतहव
बैन/ डतहव बैन-----“अनी राँरा आ चानीस टोव”- सम्पूर्ण
दुनियाँकेँ बुझन छै जे ए मध्याह्नीक अवरी लोककथा अछि जे
“अलेक्जिण्डर नाइट्स (१००१ कथा)” मे संकलित अछि आ ओगमे
बिराद अछि जे ए अलेक्जिण्डर नाइट्समे रीदमे घोसियाएन गेल
रा ले, हुदा ए मध्याह्नीक अवरी लोककथा अछि, ए मे कोना
बिराद ले अछि । रैनरैनक अवाचाव आदिक की की गग
सांस्कृतिक मानसिकता न२ क२ मर्मगिया जी कहि जाग भुवि मे
हुनकव लोककथाक प्रति सतही नगर मात्रक देखै कबैत
अछि । “मिथिला तह रिमर्ग” रा “क्यानाथ सा”क पंजीक सतही
तह रैत पहिनेहिये खतम क२ देन गेल अछि, आ तेँ ए
निधित कपसँ हमरा सतक पंजी पोथीमे रचित अछि । गोशु
सा रिदगति सँ ३०० रैथ पहिने तेनाह, हुदा मर्मगियाजी ३.०
मान पुराण गग-सबकाक आधारगव आगाँ रैत भुवि । हुनका
बुझन छै जे गोशुकेँ धूर्तार्य कहन गेल छै हुदा संगे
गोशुकेँ महामहोपाध्याय सेहो कहन गेल छै से हुनका ले
बुझन छै । ! गोशु साक समयमे हल्लिम मिथिलामे बहलै ले
कबथि तखन “तहमीनदावक दाढ़ी” क२ सँ आओत । लोकक
कथमे डतहव छै ओकरा “डतहव बैन” क२ दियो, लोकक
कथमे “कव ओसुनी”कलेरैनक दाढ़ी छै ओकरा “तहमीनदाव”क
दाढ़ी कहि सांस्कृतिक आधारगव हल्लिमकेँ अवाचावी कवाव क२
दियो, आ तेहेन भूमिका निधि दियो जे क्यानाथ सा “क्यानाथ”
आ आन गोठे डले समीक्षा ले कवतह । एकठा पौदन सैनिक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आ एकठा सतनामी (दमित-गिड्डन रक्षा द्वारा शुक्र कएन एकठा
प्रगतिरादी समुदाय)क संगठन सँ शुक्र भेल सतनामी रिदाह
उपगजेरक नीतिक विरोधमे छन आ उगमे मस्जिदकेँ सेहो
जवाबन गेलै, हुदा गोष्ठा सँ कब उमरी अधिकारी हुनन ले
बहनि, लोककथा मे गी गन ले छै, हँ जँ सामुदायिक
लोककथाका कहन कथा मे अपन राद घासियेनक आ निथे कान
रैगानी केनक तँ तगसँ मैथिली लोककथाकेँ कोन सरोकार ?
हलैरकक आधारभूत जँ लोककथाक संकलन ले कवर तँ अहिना
हएत । महेश्वर नावायन बाय निथे छथि जे लोककथा मे
जाति-पाति ले होत छै, हुदा मरगियाजी से कोना
मागत । भगत सेहो हुनक कथा मे एतै कले छहि । आ
अमन काय जग कायसँ गी मरगिया जीक नाटकक अतिशय अंग
रैनि जागत अछि से अछि हुनक आधारभूत जातीय श्रेणी
आधारित मोट । हुनक नाटक मे मोठी-मोठी अठ ग-अठ ग
पल्लक घोट तीरि क२ सत्रहठ दृष्ट अछि, जग मे गन्धर्व दृष्ट
धरि ओ छेठका जागतक (मरगियाजीक अपन गजाद कएन भाषा
द्वारा) कथित भाषाक सर्प दर्शकक हँसक, आ भगतक श्रु-
हिन्दीक माध्यामसँ हुन हान उगेल कवरक अपन पुनर्गठन
अनुसंधान कले छथि । कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण रैलक आग्रह ओ
मोहन्य दृष्टसँ कले छथि हुदा राजी तारत हुनका हाथसँ निकलि
जात छहि । आग जखन संयुक्त नाट्यमे प्रोत्साहित रा कोना
दोसब भाषाक प्रयोग ले होत अछि, मरगियाजीक भवतकेँ
गत संदर्भ मे मोना आनर संयुक्त हुनक अनुचितताकेँ
देखाव करैत अछि आ भवत नाट्यमेलक हिन्दी मे जे
सेकेंदरी सैमिक आधारभूत लोक सत पोथी निथल छथि, तकर
कएन अध्ययन सिद्ध करैत अछि । Monday at 09:19 •
Like • 4

Ashi sh Anchi nhar गजेन्द्र ठाकुर- दुतह/ दुतह



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

घेन/ डतल घेन----मरगियाजीक ज कहर अछि जे नष्टक
जै पठराये नीक अछि तै मल्ल योगा ले रहत, रा मल्ल जेन
निखन नष्टक पठराये नीक ले नागत ? हुनकर मरुत पाँतीकेँ
उद्धृत कवराम तै गहर नलीत अछि । जै नष्टक पठराये
उद्धृत ले कबत तै निर्देशक ओकर मल्लक निर्णय कोना
जेत ? आ मरुत गुण की लोग छै, अठ १०-अठ १० पल्लक
मल्लक दृष्टि, तथकथित निम्न रक्काकेँ अगमनित करैरना
जातिरानी भाषा, भगतक “बूमता छै कि नही ? ” रना हिन्दी
आ ए सभक समानक ज “नैपट्टिक छुमर” ? आ जे एकव
रिबोध क२ मैथिलीक समाधानुव वंगमल्लक पबिकल्पना अस्तु कबत
से भ२ जेन नष्टकक पठनीय त०हक आग्रही आ जे
प्रवातनपथी जातिरानी अछि से जेन नष्टकक मरुत त०हक
आग्रही । । की २५ मरुतमे मरगियाजीक जाति आधारित
राक्य मरुत, हिन्दी रा कोना आधुनिक भारतीय भाषाक
नष्टकमे (मैथिलीकेँ जोड़ि) स्वीकार्य भ२ सकत ? आ जै ले
तै ए शेरानी जेन १०० रर्य प्रवणक मरुत नष्टकक गएव
मरुतित तथकेँ, मूल मरुत भवत नष्टकमे ले पठरना
नष्टकक द्वा, रैव-रैव ठानक कपमे कि प्रयात्र कएन
जाए ? माथगव डिष्टा आ काँथमे रैता जै कियो जेल अछि
तै ओ निम्न रक्का अछि ? ओकर आंगक रावहामामे ओ ए निम्न
रक्काकेँ बाड कहे छथि, कएक दशक रौद जे धरि सुधाव अएन
छथि जे ओ आर ओ रक्काकेँ निम्न रक्का कहि बहन छथि, जे
सुधाव नगत योगा रूद्रा ए दीर्घ अरु जेन रैष्ट कय अछि ।
रैराजी कोना कथामे एले आ गज्जा कोना एले आ ओर
रैगियाक गाडक रैगियाक कोन मरुत छै ? मरगियाजी अगम
जाति-आधारित राक्य मरुत, आ अष्ट-हिन्दी मिश्रित राक्य वरु
कोना घोसिया सकितथि जै भगत आ निम्न रक्काक दुन मरुत
ले अनितथि, जे तथ ओ रैष्ट चतुवागम मरुतक प्रयास करै



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

हुनि, आ तै ओ मेडियोफ्रीस आगाँ ले रैठि परै हुनि । आ तै हुनकाये ए बाँठा-कथाकेँ उद्धृष्टपूर्ण रैलराक आग्रह तै हुनि हुदा सामर्थ ले आरि परै हुनि । Monday at 09:19 • Like • 4

अतिरान्नी बग्याक बायक बाँसगी:

Lalit Kumar Jha GAJENDRA JI CHHERAI T CHHAITHI GAJENDRA JI K APRAMANI K TATHA ASANGAT TI PPNI SABH PADHLAK BAD EAH LAGAI T ACHHI JE GAJENDRA JI LI KHAIT NAHI CHHAITH CHHATHI , LI DDI KARAI T CHHATHI . AAOR E BAL- BAL KA NIKLAI T RAHAI T ACHHI . HI NAK E LI DDI MAI THI LI SANSAR KE GHI NA DET . KI YEK TA MAI THI LI SANSAR CHHOT ACCHI . TE HI NKA ANGREJI ME LI KHBAK CHHAHI . KARAN AKAR CHHETRA VI SAL CHHAIK . AK KON ME HI NAK LI DDI PACHA LETAI N. Monday at 10:09 • Like

Ashi sh Anchi nhar मरगिया जिक बाँसक सिद्ध रैठरैत अछि, हुनकव बाड़ आ मोक्षरुत प्रति आ ओकव बायक प्रति मृणा गएव बाँस केँ मैथिलीस • दुव केनक अछि । Monday at 10:12 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar Lalit ji ahank pita aa ahank bhasha dunu ekke tarahak achhi , abhadra Monday at 10:12 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar मरगिया जिक डेढि मिलौल हुनि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

Mbnday at 10:13 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar Lalit Kumar Jha---ठीके
कहेत जी भाग ओना एकठा गदनाक मर्मा दोसले रौंड़का गदना
बुझि सकैए। एहि मागिनामे मतनरै गदहणमे अहाँ हमर
मीनियब भेलहुँ। मधुसूदन भाग... निंदीक त्रास देखि हम आब
रौंशी मनुष्य जी, अहाँ अरुण गदहणमे हमर मीनियब भेलहुँ

Mbnday at 10:14 • Like • 4

Ashi sh Anchi nhar नवित जी अहाँ आ अहाँ पिता
मर्गिया जी दुनु ठोठेक भाया एकर तबहक अछि.. अतद
Mbnday at 10:15 • Like • 4

Umesh Mandal मर्गिया जीक जीवणक प्रचार हुनकब रौंटापव
देखरौमे अछि.. एतेक असु ? हुनकब (मर्गिया जी
क) नाठक लोककेँ घृणा कवरि सिथेल अछि से सिद्ध भेल।
नवित जी, गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली/ अंग्रेजी/ तिवहता मैथिली
सभठा ग्रन्थक सूची एतए अछि: गजेन्द्र ठाकुर प्रेरक-निर्भक-
समालोचना भाग-१ सहस्ररौंठि (उपग्राम) सहस्रादीक टोपड़पव
(गद्य संग्रह) गल्प-गुच्छ (विहसि आ मधु कथा संग्रह) संकर्म
(नाटक) ब्रह्महन्त्र आ असुखति मल (दुष्टी गीत प्रेरक) रौन
मन्त्री/ किमोव जगत (रौन नाटक, कथा, करिता आदि)
उन्नाद्वय (नाटक) सहस्रशीर्षा (उपग्राम) प्रेरक-निर्भक-समालोचना
भाग दु (कविकेवम् अनुसर्गिक-२) धागि रौंठ रौंलरौक दाम
अगुर्वाव पेल डू (गजल संग्रह) शैलमोक्ष (कथा संग्रह)
ज्योतीन (रौन-नाटक संग्रह) कविकेवम् अनुसर्गिक देवनागरी
रसम

Kur uKshet r amAnt ar manak _Gaj endr aThak ur .pdf
तिवहता रसम



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

Kur uKshet r amAnt ar manak _Gaj endr aThakur _Ti r
hut a.pdf ब्रैल रसम

Kur uKshet r amAnt ar manak _Gaj endr aThakur _Br a
i l l e.pdf सहस्ररौतमि_ब्रैल मैथिली (पी.डी.एफ.)

सहस्ररौतमि_ब्रैल-मैथिली मिथिलाक इतिहास- भाग-२ (शीघ्र)

जगदीश प्रसाद मंडल- एकठाँ रौबोवाहने (शीघ्र) The Comet

The _Sci ence _of _Wor ds On _t he _di ce -

boar d _of _t he _mi l lenni um A Survey of

Mai t h i l i Li t e r a t u r e - Vol .I I - GAJ ENDRA

THAKUR (soon) Lear n M t h i l a k s h a r S c r i p t

तिवहता (मिथिलाक्षर) सीखू

Lear n _M t h i l a k S h a r a _Gaj endr aThakur .pdf

Lear n Br a i l l e t h r o u g h M t h i l a k s h a r S c r i p t

ब्रैल सीखू

Lear n Br a i l l e _t h r o u g h _M t h i l a k s h a r a .pdf

Lear n I n t e r n a t i o n a l P h o n e t i c S c r i p t

t h r o u g h M t h i l a k s h a r S c r i p t अनुवर्धनीय प्रणामेक

रर्षिमा सीखू

Lear n _I n t e r n a t i o n a l _P h o n e t i c _A l p h a b e t _t h r

o u g h _M t h i l a k s h a r a .pdf गजेन्द्र ठाकुर, बागेन्द्र

रुमाव मा श्री पञ्जीकाव रिवाजन्द मा VI DEHA ENGLI SH

MAI THI LI DI CTI ONARY जीलाम मैथिली (४३.० ए.डी.सँ

२००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रररर जीलाम मैथिली (४३.०

ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रररर (Click t h i s

l i n k t o d o w n l o a d)

h t t p : / / w w w . b o x . n e t / s h a r e d / y x 4 b 9 r 4 k a b (C l i c k

t h i s l i n k t o d o w n l o a d) O R r i g h t c l i c k t h e

f o l l o w i n g l i n k a n d s a v e t a r g e t a s :-

h t t p : / / v i d e h a 1 2 3 . w o r d p r e s s . c o m / f i l e s / 2 0 0 9 / 1 1 /



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

panji_crc1.pdf AND click this link to
download some of the jpg images of palm-
leaf manuscripts of Panji.

<http://www.esni ps.com/web/vi deha> AND CL I CK
EACH OF THE FOLLO W I NG 17 L I N K S T O D O W N L O A D
ALL THE 11000 J P G I M A G E S I N 17 P D F F I L E S.

पंजी (मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र) दूय पंजी मोदागन्ध सा मोथा
पंजी मंडाव- मवड कष्टप-प्राप्ति प्राप्ति पंजी (लेखक कएन)

उत्तम पंजी पणिमोले रीवपुत्र दवडगा राज आदेशे उत्तम
आदि छोटी सा पुस्तक निर्देशिका पत्र पंजी मुनग्राम पंजी
मुनग्राम पवर्णा हिसारे पंजी मुन पंजी-२ मुन पंजी-३ मुन
पंजी-४ मुन पंजी-५ मुन पंजी-६ मुन पंजी-७ M A I T H I L I -
E N G L I S H D I C T I O N A R I E S

Mai t h i l i _E n g l i s h _D i c t i o n a r y _V o l . I . p d f
M a i t h i l i E n g l i s h D i c t i o n a r y _V o l . I I _G a j e n d r a T
h a k u r . p d f E N G L I S H - M A I T H I L I D I C T I O N A R I E S
E n g l i s h M a i t h i l i D i c t i o n a r y _V o l . I _G a j e n d r a T h
a k u r . p d f बिदेहक सदेह (हिं) अंक VI DEHA print
f o r m बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल 25 अंकक बचनक संग

containing matter from first 25 issues of
Vi deha e-magazine देवनागरी रसम

SADEHA_VI DEHA_DEVNAGARI VERSI ON_PART_1.pdf
SADEHA_VI DEHA_DEVNAGARI VERSI ON_PART_2.pdf
तिवहुता रसम

SADEHA_VI DEHA_TI RHUTAVERSI ON_PART_1.pdf
SADEHA_VI DEHA_TI RHUTAVERSI ON_PART_2.pdf
बिदेह ई-पत्रिकाक २६ म सँ ५० म अंकक रीढन बचनक संग
containing matter from 26th to 50th issue
of Vi deha e-magazine बिदेहसदेह:२ (मैथिली प्रश्न-
उत्तर)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

निर्देश-संग्रह २००९-१० बिदेह:संदर्भ:३ (मैथिली पद्य २००९-

१०) बिदेह:संदर्भ:४ (मैथिली कथा २००९-१०) बिदेह ई-पत्रिका

पत्रिका ३.० अंक बिदेह ई-पत्रिका ३.० म ई आगाँ अंक

PANJI_CRC.pdf - File Shared from Box -

Free Online File Storage www.box.com Monday

at 10:32 • Unlike • 4

Umesh Mandal वनित जी, मात जग जेवै पड़त अहाँकै
आ मरगिया जी कै, अहाँ बिदीक बिदेह कबैत बहू Monday

at 10:33 • Unlike • 5

Ashish Anchinnar वनित जी तँ गदहा छथि तँ आनी
बिदीक बिदेह कए सकैत छथि Monday at 10:48 •

Like • 4

Shiv Kumar Jha मात जग ले वनित जी, आ मरगिया जी
कै, सतवि जग जेवै पड़तहि। Monday at 10:55 •

Like • 3

Sanjay Kumar Jha हद क देनिये अगल सरे. अगला सरे
नढ़ी क, गारी हज्जती क क की मैथिली आ मिथिला के निक
होयत, ग अहाँ सरे मोचनछै एको रैव. रैव कक ग प्रनाप आ
सरे गोष्टे मिला के एहल काज कक जाहि मे की मैथिली आ
मिथिला के उन्नति हुअ. धन्यवाद. Monday at 22:02 •

Like • 1

Gunjan Shree आजा कहि सरे एक दोसरा के दूसरा सरे
नागन अछि, जे कियो गुनत केनक अछि त जिनका खबारे
नगलेह हुका छी जे ओहि सौ आगु आरि क ओहि सौ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैठायी या करीकोला डेबि (line) के मेठी क छोट केलाय छोट
लोकक काज होगत टेक, उना facebook पर ग सरी
मगड 1 नली कवय जाय मे निरौदस..... Tuesday at
02:30 • Like • 3

Vinit Utpal दिनी मे तेन सहिब अकादी कथा गोष्ठी मे
मर्गिया जी के सुख अर्पण पिताजीक नाम मे सुखार शुक्र
कवरौक तेन लोक मे निहोवा करैत डनाह. अहि तेन अजित
आजाद जी के खुशामद सेहो करैत डन जे अहा हमर राबूजी
के नाम पर अहि काजक ले आगा आरु. अजित आजाद जी के
कहर डन जे अहि तेन एक नाथ ठका अहा कोला सहाय के
जमा क दियो आ ओकर राज मे सुखार शुक्र भ जायत.
रूदा हमरा ज्ञान ग गग आगु नहि रैठन. ननित जी, अहिना
गजनीमन्त्र निथेत वद्ध. अहा के रूमने होयत जे हाथी छन
राजाव, कता डुके हजाव. हाथी के डव मे जंगल के बाजा
बुकायन घुबैत अछि आ अहा ते छिछा ते डी नहि जे गज के
नाक मे घुमि के किछ क सकर. Tuesday at 04:35 •
Unlike • 4

Ashish Anchinhar गुंजन लोखा, ग ककरो दुसरोक ले
रवन् मर्गिया जीक जातिरादी बर्गमटक विरोध छै, आ ओस
कए किजोमिठेव पेय डेबि रैछन ठाकर जी द्वारा खीट तेन तेन
छै, देखन जाए <http://maithili-dr-ama.blogspot.in/> बिदेह मैथिली नाष्ट उमेर
maithili-dr-ama.blogspot.com Tuesday at
07:28 • Like • 4 •

Umesh Mandal http://maithili-dr-ama.blogspot.com/2011/09/blog-post_25.html

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

Tuesday at 09:28 • Like • 3

Umesh Mandal http://maithili-drama.blogspot.com/2011/08/blog-post_1815.html बिदेह मैथिली नाट्य उमेर: रौचन ठाकुर-राग भवन पिता maithili-drama.blogspot.com
Tuesday at 09:29 • Like • 3

Umesh Mandal http://maithili-drama.blogspot.com/2011/08/blog-post_8210.html बिदेह मैथिली नाट्य उमेर: अधिकार-रौचन ठाकुर maithili-drama.blogspot.com
Tuesday at 09:29 • Unlike • 5

Umesh Mandal जाधरि समीक्षाकेँ थिछातानी आ थिछातानीकेँ समीक्षा अहाँ बुनेत बहुरै गुंजनशीली, वनित जी आ मज्जय जी ताधरि अहंसित अहिना उमरीमे बहुरै, Tuesday at 09:36 • Unlike • 5

Ashish Chaudhary कवकतामे गंगा मा धुति, नाट्य निर्देशक, ओ मर्गिया जीसँ कहनथिह जे नाटकमे जातिरादी गारि कम क२ दैले तैगव हुनका मर्गियाजी जरार दैनथिह जे मर्गियाजीकेँ जतेक गारि अरै धुनि तकव दसो प्रतिशत नाटकमे ले अथन छै, निर्माक। Yesterday at 06:23 • Like • 2

Ashish Chaudhary रौचन ठाकुर नाटककार आ नाट्य निर्देशक <http://maithili-drama.blogspot.in/p/blog-page.html> मैथिलीक सरश्रेष्ठ नाटककार आ नाट्य निर्देशकक कम्प्य उभरि क२ आएन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४) **माधुसूदन चन्द्रा, ISSN 2229-547X**
VIDEHA

डुधि, ते पाछाँ रौचन झीक डुकैथ, जिमगी आ मोच डुहि।
बिदेह मैथिली नाष्टा डुमेर: मेथिली mai t h i l i -
d r a m a . b l o g s p o t . c o m Y e s t e r d a y a t 06:26 • L i k e
• 2

Ashish Anchinhar मैथिलीक समासुब वंगमाक जगन्नातः
सभसँ रौमी मैथिली नाष्टकक निर्देशनः बाजबोसँ दुबः जातीय
वंगमाक बिरछ रौचन ठाकुर झीक सघर (झुल्लाजी आ अजित
आजादक मोमाँमे मरगिया झीक भङ्गित प्रकाश आ जकवा
जेन कहै डुधि- भवि दिन केने काँटेत बहै डुम- पाठकक जेन
आ मुचन जे जातिरादी वंगमासँ जुड़न लोक केने काँटेगके
थवाप बुने डुधि, मरगि एते मुचन जे रौचन ठाकुर मे
पिवादा (जे भावतमे ऐलालोजी मिमिक प्रावस्त केनहि) म
रौबली जातिक डुधि, जातिरादी वंगमाकर्म लोकनि हुकब लौआ
अतिकार सहायक सभादक शोधकसँ कर्म क२ सके डुधि):
हिनका नामसँ कतेको लेकाई दर्ज अछि, जेना मरुतक रौद
पहिन रौब मैथिलीमे भवत नाष्टासुब वंगमाक मरुतक
अनुमाव नाष्टक, मात्र महिना नाष्टकर्मक माधमसँ ७-७ घण्टासँ
हुँगवक नाष्टकक मरुत (जखनकि जातिरादी नाष्टकर्म अदला घण्टा-
४३. मिष्टक नाष्टकक मिष्टादन जेन महिना वंगकर्मक जेन रौथेत
बहै डुधि, कावण हिनक सभक रौगोरिना प्रवृत्तिक कावण आ
कुरवटानिक कावण रौत वास महिना मैथिली नाष्टकसँ दुब भाषि
जेनीह। दूदा सभ काष्टिदर्मीकेँ जातिरादिताक कोष, गारि
गज्जल सुन२ पाङ्गे डे, दूदा रौचन ठाकुर एकठा डुधि...हमरा सभ
नाष्टकर्म, वंगमाकर्म, नाष्टककावकेँ हुकब मैथिली समासुब
वंगमा, जे २३-३० मानसँ अरबत चलि बहन अछि, पब गरि
अछि। मिथिलाक समाज जौ जातिरादी वंगमाक रौरजुद ले
हुँठन अछि तँ तकब कावण अछि रौचन ठाकुर झीक मैथिली
समासुब वंगमा... आ मे मरगिया झीक काहि जगन्ना भङ्गित



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सबके ले बूमन छि, ह्दा मर्गिया के बूमन छि जे हुकाम
रेशी मर्गामेक आ गुणामेक नष्टक/ एकिकी रोजेन जीक लिख
छि आ उग रोजेन ठाकुर आ गुणामेक साक एकिकी मैथिली
एकिकी संग्रहमे ले देनछि.. एकनयक गुंठा दास कछेरा जेनछि,
ह्दा एतए तै थकक गुंठा मर्गियाजी कछेरा बहन छि..

Ri shi Kumar Jha GAJENDRA JI CHHERAI T
CHHAITHI GAJENDRA JI K APRAMANI K TATHA
ASANGAT TI PPNI SABH PADHLAK BAD EAH LAGAI T
ACHHI JE GAJENDRA JI LI KHAIT NAHI CHHAITH
CHHATHI , LI DDI KARAI T CHHATHI . AAOR E BAL -
BAL KA NIKLAI T RAHAI T ACHHI . HI NAK E LI DDI
MAI THI LI SANSAR KE GHI NA DET . KI YEK TA
MAI THI LI SANSAR CHHOT ACCHI . TE HI NKA
ANGREJI ME LI KHBAK CHHAHI . KARAN AKAR
CHHETRA VI SAL CHHAIK . AK KON ME HI NAK
LI DDI PACHA LETAI N. - in New Del hi . Like • •
Mnday at 9:58am • Shubh Narayan Jha and 3
others like this .

Lal it Kumar Jha bahut badhiya Mnday at
10:07am • Li ke

Nar esh Jha bahut uchit likhne chi rishi
Mnday at 12:39pm • Li ke



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

Ajit Azad are chhor o bhi yaar ...apne dil ko
it na bara kar lena chahiye ki isme saundar
bhi sama jai

जातिवादी वंगालक भाषक बाँसगी:

Mukesh Jha vinit utpal pyada/pyajano -
420 रिनीत उपेन जी के जेन जिनका आँखी में बतौरी छै।
अपन आँख में निथैत छै जे बाँस के उपर कोला
कार्यक्रम नग्न भेल अछि। यो उपेन जी जे लोकरा के बाद
जे समय रैलवे अछि से यदि चाँटेन के अनारा अछि तबहक
आयोजन देखरी से केन बहिनियेक त अछि तबहक ज्ञान नहि
होयत। उन्नीद अछि आगु स धान बाँसरी।

Mukesh Jha Sujhal yo vinit utpaljee

Mukesh Jha

जगत मर्गिया जी के बाँस के तुलना भावतीय वंगाल के
प्रसिद्ध बाँसकाव जेना मोहन बाँसरी, रिजय तैदुनकर, गिरीश
कर्णड, बाँस सबकाव आदि स त बहन छैक छै ठाम आग
कानिह से जलमन मैथिली के छुटा बाँसकाव आ बाँस स तुलना
केनाग्न रैग्यानी अछि।

Mukesh Jha से रैग्यानी सर स प्रभावक भाँस।

23 hours ago • Like

Anuradha Jha अछि से कोला दु मत नग्न जे महेंद्र
मर्गिया मैथिली के सरश्रेष्ठ बाँसकाव छै।

23 hours ago • Like

Anuradha Jha मर्गिया जी पब जाली तबहक हंस बुँक पब



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

किडु लोक अनाप सनाप निथी क श्रेष्ठता पाँरि छाँरी बहन छैथ
से सरिदा गनत अछि । श्रेष्ठता पेरौक कोना देसब रौछ
ताकन जा सकैत अछि । किडु लोकक पोसठ आँ ताया योव
आपति जलक अछि । अहि स मिथिला मैथिली के अपमान भ
बहन अछि । ऊँठा स त्रिमित नङ्ग हाँड आँ अपन नीक काज कय
क अपन सुन रँगार नङ्ग की थिछा तानी ये नागन बहैत जाँडु
।

23 hours ago • Like

Prakash Jha मैथिली नष्टकक ज्ञान सर के ले छनि, जे
लोकनि नष्टक राकि बगमाँट स' जूँडन छथि हुनका सब स रिटाव
जेन जयराँक छाँरी, जेना कि कृष्ण ज्ञी, गण ज्ञी, किमोव
केशर, धेमानता मिथि धेय, शिरनाथ मँडन, यदुरीव यादर आदि
आदि....राँकी फेमरूँक पव जे भ बहन अछि ओकर तह ये
किडु आव अछि, कोना थाम राखि केँ मात्र माहि अकादेमी
पुबकाव दियराँक जेन भ बहन अछि, एही रीट महेंद्र मर्गिया
जीक पुस्तक आँ गेनहि कि ३ लोकनि डमि गेन छथि... त
नगलिह अछि उँठा छनि टन

23 hours ago • Like

Mukesh Jha उँटित कहन अग्रवाधा जी ह्रदा किडु रोकहन
लोक के कोना लोकन जा सकैत अछि । जे की अगना आँ
अपन थानदान के श्रेष्ठ रँगराँक जेन सर कर्म कवरौक जेन
तैयाव छैथ । जिनका ये छैलैछ हेटेन तिनका जेव
जखनदुती नङ्ग कव पलैत छैक से के रूमेठेन महार्थ
लोकनि के । मर्गिया जी के नष्टक जतेक लोकनि अछि
प्रेमक के रीट ये किनक नष्टक लोकनि अछि से कहैत
नरका जगौछी नष्टक के हितैयी लोकनि ?

23 hours ago • Like

Mukesh Jha ओहो त एकव मतनर ३ जे मात्र ३ ठमवार
के योजना भवी अछि ?



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

Ashi sh Anchi nhar

एखन हमरा मोरौगन पब एकठा नयँव सँ होण आएन डन जकब नयँव अछि---08595372399 । होण कबर रँना कहनाह जे हम रँजवंग मडन छी । आ ग कछ जे आशीय टोपवी ले छथि । हम कहनिअछि जे मे तँ प्रकामि मामँ पुछि निअ । ओ हमरा कहनाह जे हम प्रकामि मामँ किअक पुछलै । आ रौतटीत एगामे कहनाह जे हमर नाम किअक हेमरूक पब आएन । हम कहनिअछि जे हमरा जे अहाँ भोवमे अहाँ कहनहुँ जे बातिमे ग सभ यावए रँना डनाह । ह्रदा हम बोकरी देनहुँ । रौतटीतकँ अतमे रँजवंग जौ गहो कहनाह जे हेमरूक पब ग रौत आनि रँहुत गनत केनहुँ अछि । सभ गोष्ठीकँ पखान देखारी जे रँजवंग मडन मैथिली फाडिडेमिनसँ रेंसी जूडन छथि जे की मैजोवंगसँ छुँछि कए रँजन एकठा मँहा अछि । ह्रदा होण कबए रँना कहनाह जे हम दोसब रँजवंग मडन छी । तए सकेए जे दूठा रँजवंग मडन होथि ह्रदा ग मँभर ले छै जे ओ दुनु के दुनु रँजवंग मडन हमरा छिहँत होथि । ओना जँ रँजवंग जौकेँ अराजसँ ग सपथ डन जे कोणा दरौरमे जकब छथि । ओना जँ रँजवंग जौ चाहथि तँ अगल पहिछाण दए सके छथि । होण नयँव सेहो छैस तए जेते ।

संगे-संग प्रकामि मा सँय अगल मुँहसँ ह्रदा जौकेँ कहनके जे अतो-अत पबि हम आशीय अणटिहावकेँ यावलै ताहि पब ह्रदा जौ कहनथिह जे हम अणटिहाव संगे पबिछय कबरा दै छी कल डुओ क देखिओ । ताहि पब प्रकामि माक एकठा पबम ब्रौन्सारादी सहयोगी ह्रदा जौकेँ कहनथिह जे अहाँ रँटा जेलै अणटिहावकेँ

। ताहि पब ह्रदा जौ कहनथिह जे हम सभ कह ले छिअ करै छिअ थानी एकलैव डु क देखिओ । ताहि पब प्रकामि मा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कहनिह जे कोना रात ले देखिउ जे की लोग छै ।
जै सहि अकादेमीक छै कथा गोष्ठीक छोटै-रिडियोकै
देखन जाए तँ ज स्पष्ट अछि जे प्रकाश सा-दूकेश सा हमरा
मबरौ जेन रात्रि छन । उगवमे एकठा छोटै बाथि बहन जी
जाहिमे की कए बहन अछि प्रकाश से देखु---- दूदा दूदा
जीक कहनाक राँद डरै किछु ले कएन पाव नगले प्रकाश सा
एषड दूकेश सा कसरीकै ।

Ashi sh Chaudhary

मर्गिया आ प्रकाश साक गमिवापव भ्रमवर्जीक रिक्छ मिथिनादर्शन
आ आन-आन ठाम छित्री भेजनिहार दूकेश सा आरँ गच्छवलेष्ट
पव आरि गेल अछि, ए ब्रॉड आग.डी.सँ सारधान । ज ककरो
दोसरा द्वारा संचालित लोगत अछि.. सारधान । ... मर्गिया जीक
नाटक लोककै रौनी कष्टव रौलनक अछि, गएव जौन मैथिलीसँ
दूर भागल अछि । ... प्रकाश सा आ दूकेश सा योयणी केल
बहनि जे २४ मार्च २०१२ क सहि अकादेमी कथा गोष्ठीमे
आशीय अर्चिहारेकै मावताह, रँजवंग मन्दन ओतए आशीय
अर्चिहारेकै ए मादे सतर्क सेहो केल बहनि । दूदा दूदा
भेनहि ? mal angi ya ji j atek mehnati l athait
posai me lagel anhi t atek jan neek naat ak
likhbai me lagabit athi te aai mukesh jha,
rajiv mi shra, lalit jha, prakash jha san
nir lajj ak aavashyakt a nai rahi t anhi
Bhaskar Jha भाँज एहन ऐहन आपतिजनक गप के जतय



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

तुमि देरैय ओतय रैठत । किनको रात्रिगत मोच आ आगति
के सारिजनिक नहि कयन जयराक छली । बिद्वज्जन के अपन
अपन मतानतव होयत छुग । रोहि मतानतव पव हम - अहाँ
आगम मै नहि नछ । दुनु महान रात्रि के धनी छथि । दुनु
छाँछे सँ हमरा सँके सीखराक छली ।

7 April at 21:35 • Like • 1

Ashi sh Chaudhary भाग पत्रिका सभमे नठैतक छद्म
नामसँ छिपी पठैराक प्रवृत्तिपव किछु तँ कमी आएत ।

Ashi sh Chaudhary भाग पत्रिका सभमे नठैतक छद्म
नामसँ छिपी पठैराक प्रवृत्तिपव किछु तँ कमी आएत ।

7 April at 21:46 • Like • 2

Bhaskar Jha हाँ सेहो रात सही अछि

7 April at 22:05 • Like • 1

Manoj Jha ओ सँ मिथिला मैथिली के जेन दुर्भाग्यक गप्प
थिक ..

7 April at 22:55 via Mbbile • Like • 3

Umesh Mandal सांगती लोकनिक रैरहबिक परिचय....

8 April at 01:40 • Like • 1

Shubh Narayan Jha kane positive bha chal ba
sa maithili ke vikas chhaik ne ki ek dosra
ke khi chay kel a sa



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

Ashi sh Anchi nhar जातिरादी बगमक शेखरदीक

बैलगाँ:-जातीय बगमक भाषक बैलगाँ:- Prakash Jha

सुप्रसिद्ध कथक नृत्यगणा सुप्रसिद्धी आजकल दिनी यै ही है.

Like • • Unfollow post • 4 hours ago Mukesh

Jha तो ? 4 hours ago • Like Prakash Jha

तो हमसे दूनाकात और जकरी गता है.... 4 hours ago

• Like Mukesh Jha किस रजह से भाग्य माहरे ? 4

hours ago • Like Prakash Jha कुछ विभिन्न

मानसिकता के लोग और मैथिली भाषा के महाने रंदास कबल

यै गते है. 4 hours ago • Like Mukesh Jha का

रात कब बहे है रो रहुत अछि नृत्यगणा है, उनके राते ये ये

अशोभनीय रात है | 4 hours ago • Like Prakash

Jha जी, है तो पब... ऐसा नही कबना चाहिए... खैर... आगे

आगे देखिए होता है का.... चमता हूँ विहर्षन के लिए.... 3

hours ago • Like Ashi sh Anchi nhar जातिरादी

बगमक रंगगोरिणा प्रवृत्तिक कावण आ अकबचानिक कावण रहुत

बाम महिना मैथिली नष्टकर्म दूब भागि गेलीह । 3 hours

ago • Like Mukesh Jha आ रहुत बाम आहाँ एहन

अकर्म लेखक के कावण अचिहावबजी आ किछ आहाँ लोकनि

द्वारा पौसुरा पाद के कावण । आरं टिहाव भ जार यो

अचिहाव जी | 2 hours ago • Like Ashi sh

Anchi nhar जातिरादी बगमक रंगगोरिणा प्रवृत्तिक कावण

आ अकबचानिक कावण रहुत बाम महिना मैथिली नष्टकर्म दूब

भागि गेलीह । Vinit Utpal जातिरादी बगमक

प्रोग्रामेष्ट पार्सी ये ३-१० मिष्ट गाली आ बाजकमन के देन

गेवहि आ ओकब हफाटे १०-२० मान धरि रौचन जाएत , आ

जातिरादी बगमक अखरावक कतवण समेटैत अछि. 4 hours

ago • Unlike • 1 Vinit Utpal गालीक जग ३० जून



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

1९११ डहि) 4 hours ago • Like Ashi sh
Anchi nhar रिनीत भाग ई सभ फस केव थोना डै जहिया
फस भैठै तहिये रौरा मोष पड़तिह आ सातो जग धरि
होठै नगा ई रौरा सभ हला मटेताह । 4 hours ago •
Like Ashi sh Anchi nhar भाग एकठे गप्प ओहो जे
जेना जातिरादी बगकर्म सभ अगन दियाग ये कुड़ 1-ककठ
भवल बहे डुधि तेनाहित अगन घब-आहिम कतबन सभ भवल बहे
डुधि । ई कतबन सभ फस उगाही केव नीक साधन डै
जातिरादी सभ जेन । ई ई कतबन ले बहते तै फस देते
के । ओना रिनीत भाग अहाँक जाणकारी जेन ई कहि दी जे
पेड पत्रकारिताये पाग दए खुज डुगा जेरे जातिरादी सभ
जेन कोलो रँडका गप्प ले । होठैमोपम ज़ांमि रँगा जेनाग
सेनो आमास डै । छिँव सँ पर्चा सेनो डुगा निख । तावत
सबकाव फस देरौ कानये ओह सभ देखेत डै । .. 4
hours ago • Like Mukesh Jha यो अचिहाव जी
काज कय क हला करेत डीयेक अहाँ ओव अहाँ के गुंग भूते
त रौरा के नाम पव एकठा पोछीयो न-अ कायन भेन । 4
hours ago • Like Mukesh Jha यो अचिहाव जाहि
गुंग के पोसुरा डी अहाँ ओही गुंग स एक रेंव मँडी हाडस ये
एकठा रौरा के नाम पव पोछी कवरौ क देखा दियाह । 4
hours ago • Like Raji v Mshr a kya bat hai
mukesh bhai gargara diye... 4 hours ago •
Like Ashi sh Anchi nhar जातिरादी बगकर्म रँनगोरिणा
प्रवृत्तिक कावण आ फफवटानिक कावण रँहूत बाम महिना मैथिली
नाठकम दूव भागि जेनीह । 12 minutes ago • Like
Ashi sh Anchi nhar बाजरी मिश्री, प्रकानि ना आ फकमे
मा सभ भडतक टनते कियो परिवार आ रँहू रँधीक संग
जातिरादी बगकर्म समारोह (प्रोगरेस पार्टी)मे ले जाओ ।
about an hour ago • Like Ashi sh Anchi nhar



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्राण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जातिरादी बगलक शिष्टारणीक राबगी: Mukesh Jha सहिब
अकेदमी प्रबन्धक के काबि भ बहन अछि बाजनीति ।
जातिराद के हराना दय कय बहन छैथ किछु छिहाव आ किछु
अनछिहाव लोक विनायन बाजनीति । यो महामहिम लोकनि
सहिब अकादमी प्रबन्धक कोना जाती रिशेय के नञ्ज भेटैत
छैक, ऊकैथ बचना के देन जायत छैक । सरुब बाथ बचना
मे दम होयत त अरु भेटैत, अङ्गुर्ज जूनि हाँ । जिमका
प्रबन्धक दियार छैत डिशेन हून्का कहियोग जे सहिब के
कोना एक रिवा के मजबूत कवतह । खल करिता, खल
कहानी आ आरि नष्टक मे सेहो अणन कनम बाजी बहना अछि,
यो ताहि स नही छनत, । थैव हला कवर त दण दिया मे
तावी रात नञ्ज । म्हा एना नञ्ज छनत, जाली नष्टक के आहाँ
लोकनि प्रबन्धक दियारह जेन रात्र छि, ताहि मे दम नञ्ज अछि,
आधा कितारि एक सीन मे आ राकी आधा मे १ गो सीन, मे
नञ्ज होयत छैक यो सबकाव । आ कनि दियोग नगारि जेन
सेहो कहियोग नष्टककाव महोदय के -- । नष्टक के अणन
राकवण छैक तकवा अणसवण करैत निखता त मटित होम मे
अमोर्ज नञ्ज हेटैक । धान दियोक । आ रैसी स रैसी मटित
नष्टक के महल होयत छैक । about an hour ago •

Like Ashish Anchinhar आ डायलोग- "Mukesh
Jha सहिब अकेदमी प्रबन्धक के काबि भ बहन अछि
बाजनीति । जातिराद के हराना दय कय बहन छैथ किछु
छिहाव आ किछु अनछिहाव लोक विनायन बाजनीति । यो
महामहिम लोकनि सहिब अकादमी प्रबन्धक कोना जाती रिशेय
के नञ्ज भेटैत छैक, ऊकैथ बचना के देन जायत छैक ।
सरुब बाथ बचना मे दम होयत त अरु भेटैत, अङ्गुर्ज जूनि
हाँ । जिमका प्रबन्धक दियार छैत डिशेन हून्का कहियोग
जे सहिब के कोना एक रिवा के मजबूत कवतह । खल
करिता, खल कहानी आ आरि नष्टक मे सेहो अणन कनम बाजी
बहना अछि, यो ताहि स नही छनत, । थैव हला कवर त दण



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दिया मे भावी रात बग। रुदा एना बग चमत, जाली नाटक
ले आनी लोकनि प्रबन्ध दिवारह जेन राग छि, ताहि मे दया
बग अछि, आधा कितारै एक सीन मे आ राँकी आधा मे १ गो
सीन, मे बग होयत छैक यो सबकार। आ कनि दियाग नगर
जेन सेहो कहियोन नाटककार महोदय ले --। नाटक ले
अपन ब्राकबन छैक तकवा अग्रसवा करैत निथता त मटित
होमा मे अमोकर्ज बग तेतैक। धाष दियोक। आ रैसी म
रैसी मटित नाटक ले महुर होयत छैक। " एकांनि मा
रुमाजरीकै रैचन ठाकुरक नाटकक (जिषका ओ तबि दिस केने
काठेरना कहै) बिषयमे ओ गग कहल बहलि। आरि मिहू भेन
जे ओ रुकेने मा ले एकांनि मा अछि। 5 minutes ago •
Like Ashish Anchinhar एकांनि मा राँड: छैनी च्यास
देखु रैचन ठाकुरक नाटक: "आधा कितारै एक सीन मे आ राँकी
आधा मे १ गो सीन" - दुनिया नग ओ कितारै छै आ अपन
भङ्गी जाली बाथु, मुठक खेतीक संग: अहाँ भङ्गीक अनारै
आव किछु ले क२ सकै छी राँड। एतए पोथीक लिंक अछि,
पढ़ आ माथ पीछ

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/BechanThakur.pdf?atredirects=0>
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/BechanThakur.pdf?atredirects=0>
8869256024489431480-a-videha-com-s-

[sites.google.com](https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/BechanThakur.pdf?atredirects=0) A few seconds ago •
Like • Ashish Anchinhar मरगिया जरी के सेहो
पढ़ा देरहि- गुणनाथ मा कहै छनाह जे होग छन जे
उमेवक संग मरगियाजरी आधुनिक बंगमट रूमि जेतारह, रुदा
कांनि...

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/BechanThakur.pdf?atredirects=0>



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

8869256024489431480-a-vi deha-com-s -

s i t e s . g o o g l e g r o u p s . c o m a b o u t a n h o u r a g o •

Li ke • Sangeet a Jha gaj endr a j ee pr asi dh
hobay ke lel badhi ya chai pr asi dh aadmi ke
aal ochna kar u. aakhi r mal angi a j ee ke naam
dekh ka lok kum sa kum aahan ke naam
padhi ye let . Ona suraj oar thuku tha
thukappne par par ai chai . mathili ke
jeevan ahak soch par nirbhar chai
aaschar ya 54 minutes ago • Unlike • 1

Gaj endr a Thakur जातिरान्ने बर्गमटक महिना बिराधी,
दमित छिड्ड । बिराधी प्रवृत्ति दूखी कलैत छि । समाणाबुव
बर्गमटक एकव बिराधमे आजग ठाठ बहत ।

Poonam Mandal काहि मर्गगिया जीक मैलावर्गक (जकब
आग काहि अछाक्ष देरमेकब नरीन छथि) दूरी सदस्य प्रकामे सा
आ क्रमेमे सा एकरी महिनाकेँ रैदनाम कबरीक कोशिमि (हम
कोशिमि कहरै, कावना हिनका सबक ठकात ततेक ले छहि जे
उगमे आ सयन होथि, साहिलिक मझदनाक बिछोया उ क
सकता ?) केनहि । संगे आ दुनु ठोरी जगदीमे प्रसाद मझन
आ रैचन ठाकब जीक प्रति जातिगत अगमेई, सेहो कहनहि ।
अली तबहक जातिगत छिप्पी देरमेकब नरीन द्वावा रौदेही
पत्रिकामे स्वभाव छन्द गान्दर जीक बिरह सेहो कएन गेल
बहए । की एकैसम मैतादीक आ सब लेखक छथि ? एकैसम
मैतादीक बर्गमटकर्मी छथि ? मैलावर्ग पत्रिकामे प्रेमराज नाम
अननकाबु (लोवीनाथ- अतिकार सम्पादक)केँ गाबि देसिहाव
मैलावर्गक रतमान रा पूर्ब अछाक्ष अगल नाम किए ले सोना
आननहि, किए प्रकामि आ क्रमेमेक काहणव रैदुक बाथि उ
प्रेमराजक दुन नामसँ गाबि पठनहि, पत्रिकामे जे आ मेन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

थेम्बाजक देन अछि ओ राँडस क२ बहन अछि । मरगियाकेँ
रूजुआक कगमे सन्धानदेराक आग्रही जगदीश एसद मन्त्र आ
रैटन ठाँव केँ किछ गबिया बहन छथि ?

Ashi sh Anchi nhar धवती गोन छै..... थेम्बाजकेँ
विकानरुसँ छै छै छै छै । ..

ई बचनपत्र अपन मन्त्र ggajendra@videha.com पब
पठाओ ।



बरि भूषा पाठक

उत्कृष्ट लेखक हम्बर सन्धि- २

कठिनी आ मरिया

जजिमान आ प्रवर्तितक सन्धि

पता नग कोदवि आ रैटन सन्धि छै रा कठिनी आ मरिया क
। रूमागत त२ एहिना छग जे एगो मरिया छै त दौसव
के कठिनी रैगयो पड़ते । आ एहिना कोना जोगाड नग रैस
छै जे कठियो बहि के मरिया क मरि नग थाए पड़ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

आ मरिया बहि के केउ मरि मरि रंगन बहए ,मे हमरा जलैत
तऽ अमरि रंगुउला हम प्रवहित बहियग आ हमर भवि
दिन जजिमिके मे रीतएरियाहे-त्राह नग ,मारि-पीठ ,
गारि-उंगराग ,ठैला-गानी सतक हिम्मा । हअब जेतनग
,टोकी केनए ,बाँउग केनग ,कयौनी ,गानि देनए ,खाद छिठनग
,जजात के घोघेनए ,दाणा प्लु. लेनए ,कीड १ नागनग ,दराग
के मरे ,सुथनए ,काठनए ,दुँनी रा मरिठेनग ,कथला कथला
मशीन सँ दुँनी.....अन-गानि सुथेनए आ कोठी अथरा रौवा
मे बाथनएएँ सँ प्रफिया मे हमर मरिभ भागेदारी बहैत
हुले आ हम दिने नग थलैत बहियग ,कथला कथला मनाहक
मककप समाजिक आ रैत्रागिक मेहो भ जागत बहै । हम
कोला मारि रानी रात नग कलैत छी ,ले हम ३ मालैत छी जे
उँपोदन प्रफिया मे हमर मना भागेदारी बहैले रियाहम
क त्रिब पव ले समाजक त्रिब पव ।
अन भूमिका के अरमना न नग कबितो ३ कहरो मे हमरा
कोला नाज नग कि मिले रना प्रतिफल अमरिभजनक ,अमना
आ अमानरीय हुले । कोठी आ थविहल के भले मे मरिभ तिक
महयोगी आ मिले हुले आमेव ,मेव भव अगुँ । एहो दुगो
राँव सँ भनथि जे मान मे एक दु लेव पमेवी भवि दाणा
दैत भनथि । आ ३ हमर थानदानी कर्तुरार हुले कि
जजिमाणक समृद्धि क प्रति रिवद्रिक भार रंगन बहियग
। भगरती अन पूर्णिक पूजा मे कतउ कमी हुले आ अलिपुर्णो
खुर तमानी देखलैत बहथि।

आ जजिमाणक पुरखा सतक रँवथी ,ढाया ,एकोदिष्ट क तिथि
हमरा मरिभरानी यदि बहैयदि बहै यैह रात नग ,यदि
केनए पवमारथीक बहै ,महाकर्तुरानियदेमयोग यदि
कहियो रिसवि गेनियग त ०३ दिन जजिमाण महामात भऽ
जागत हुलैथि आ हम महामास.....आ मू.दंड सँ कनिये छेष्ट



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माइथिली बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दाँड बहेँ छै राकाय 'हमरा अहाँक कष्टमाकष्टी । हम आरै हवाई
पमाडी छी सँ पुजायबै' । आँ जग दिन राँबु केँ छै राँत पता
नागेल, हमर देह, हाथ, माथ पब हूँकब खड म आँ नाठीक
चेष्टु अहाँ गिब नग पैतियग उला माथ गालेत डनथिब आँ
कथला राँबु आँ कथला दुनियो केँ कालरौ कबथिब आँ
गाबियो देथिब.....

एतरेँ नग एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा अमारग्राह
सरै..... जेना सूर्य आँ चन्द्रमा हमरे पुष्टि केँ छोलैत डथिब
। आँ कोन एकादशी कबियो आँ कोन छोटियो ... छोलै राँत
रिदिपूरक हेराँक चाली । आँ राँत-राँत पब महदेर पुजा
। पाब सौ आँ हजार त डेनीए पुजाथिब, हूँदा कहियो
कहियो सरा माथ महदेर क राँत सेहो छेय ... आँ उग दिन
त एकछाँ डँसकरक रातरक राँबि जाय, उग दिन राँबु महत
जँका कबथिब, किएक त हजार दुहजार सतक घब मेँ रँथ आँ
राँबु हूँका सत केँ दक्षिणा रँथिथिब । आँ राँबु ग्राहदारी
पूरक दक्षिणा रँथिथिब तेँ हूँका कहियो पंडितक अकान नग
पडलैब । हवदमा छैन-पड मक पंडित सत आँगु-पाडु करैत
बहय । आँ छै कोला महदेर पुजे तक सीमित होय, एहला
राँत नग बहेँ, कहियो श्राद्ध कहियो रँवथी कहियो उगलैब-
रियाह..... एहिना छलैत बहय । आँ राँबु चाहथिब डन तथन सत
दिन पावमेँ आँरैत बहतेँ डन, हूँदा राँबु पावस जेरौक रिवोधी
डनथिब । जतुँ ब्रौह्म छेय, उतरेँ क भाड । नियउ, दुनिया
क गीकेदारी नग.....

रैदिक कर्म शुभक हो राँ अशुभक, जजिमाण सत एकछाँ थाम
नजबि सँ प्रवहित केँ देखैत डनथिब । हूँका जेन आदर्श
प्रवहित उँ जेन जे मेँ टिकाँटि पहिबल हो, छहेँ पोती हो



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

रा अकता एक दबज्ज ठाम उग पब टिप्पी हो । अहक
योड-दावली रैबहन हेरौक चाली, अहक छैठनकी चप्पलन या रिना
चप्पाओले के यात्रा करैत हो । यदि अहक साह-सूतवा
कगड 1-नताह पहिबल छी आ पएव ये जूता. हो तथन त
रूम जे ल केरन अहक धर्म भ्रष्टा अछि रैकि जजिमनिका ये
कनहूसकी क केन्द्रिदू सेहो अछि । सर कहत 'देथियो ल
कलक जूताम देथियो, रांग के खड म खठखठरैत जिनगी
गुजबि गेलन आ रैछी' आ हएव तथन रैहूत बाम थिम्मा
एहलो जग ये हनकब रांग आ राँरा हमरा राँरू आ राँरा के
थानी पएव देथि दुरित भ गेलथिन आ ग्लामिष्टिक रना जूताह
रा चप्पारन रा खड म द२ देल हेथिन ।

आ भाग लोकनि धाँष्टन देरै मैथिली ये एहन करी सरस रैशी
ठैक, जग ये अहक तुलनामेक महतान स्पष्टरै होगत अछि
मतनरै नीटा दिस, खबार दिस, जेना कि 'रांगक नाम नतीन
हती ।, रैछैक नाम कदीमा ' , 'थए जेन थेसारी आपोछे
जेन जिनैरी ' , 'गुजरीनग टाती क सरौ ' , 'नमहव नाग
रैसन छथि आ ठ बहाय माली गुजा ' आदि आदि । आ ज
मत कहरी जतज लोकिक अस्तुर सँ भवन हेए अहक
अगमानित कवरी जेन पर्यायुज बहे । ह्रदा ज सुनना के राँदो
कोला उँत व नग देरौक बहए । एगो राँत जेहो छले जे
जकवा कर्म कवरौक बहे, उ चाहे किछो पहिबए, थए, पीरए
, अहक जेन थाम ड्रेसकोड । मतनरै राँग मले हननमा के आ
केशे छिनारैथ पडित बाम ।

सन्ना ण आ अगमानक एहन दुर्लभ संगति हमरा मुले कोला सन्त
ता, कोला समाज ये अस्तुर अछि । आ मैथिल ब्रह्मक चवम
नम्हर सत दिन टुट्टे दली बहन । हविमोहन राँरूक दार्शनिक
अंदाज जतए 'खष्टव कका क तबग ये टुट्ट । दली टनी ये



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्राण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रिस्तु ब जेत अछि ,ओहियो सँ रेशी । एकठा भोजननग
भोजन मात्र नग....अनगे आकर्षणअनगे नगी । एकठा
सुखीओ ,संतोषक भार । विग्रह केरन साले कान तक ,ओकरा
रौद रियस भारक सह-अस्तिवा । दाँत टुड़ । पब प्रहार करैत
आ ज्वाँत आ कर्त दही के समारैत आ टीनी फूँक सभ अंग सँ
मेनजोत रँवहारैत । अत मे रियसता समाप्त आ सभ तल्ली
अपन अपन रेशिष्टा के समाप्त करैत । आ टुड़ । दही
एहन ले रूमियो जे केरन खाँए रना मे सुखीस रँवहारैत
हो ,खुएनहार मे सेहो तेहन आनखर रँवहारैत छैक ।
टुड़ । दही खुएरौ मे अहक कवरौ के की अछि ? टुड़ ।
कष्टान रौवा मे बाखन ,दही पौवन आ टीनी दोकान सँ खरीदत
,तखन त मात्र अँटाबक महार सेहो अहक 'ए' ग्रेड मिलि
सकैत छैकहम धर्म ,गुणाद आ पितवक रौत अखन नग क
बहन छी । जे होए टुड़ । दहीक नगी एहन बहे जे गमकनक
समै मे गमकन कालेजक समै मे कालेज छोड़लियग । ल
यखन दुआबि ल खेती राँडी । कोन फूँस कोन फूँसैती
। ल समाजक लौत-निग्रह ल पारनि तिनारि । रँस अर्जुन
जँका ...संतरत: ओ मानिलबी बहे तेँ मछक आधि मे तीव
मावनकए आ हम सर्राहबी मैथिलटुड़ । दही क गंध दिस
आधि मुल रँवहेत आ हमर प्रेम छतको सँ रेशी ,हमारब
धियाँ रँगलो सँ रेशी ,हमार फाँध मिहो सँ रेशी आ हमर भुख
साँपो सँ रेशी आहव । फूँदा ककु महबाज हम किछ रेशीए
राँजि गेलौ हमर भुख छहे जेहन होए दूरसा आ भुखक फाँध
कितारै तक सीमित बहलै ,हम अपन जिनगी मे त नग
देखलिये जे केओ जजिमाण अहक उँटितो फाँध केँ सकाबल
हएत । भुख अपन फाँध केँ ल छिपेनथिन ल सन्तानवनथिन आ
भगवान विष्णुक के धएल नाति कलेजा पब माबि देनथिन आ
भगराला केहन त पुढनथिन 'हे जँका जेथक छै त नग



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

नागन । हनु ब कलेज त पाथवक अछि ,रूदा अहक पएव त कमजोर सँ रेशी कोमल ' । अ प्रसंग ब्रह्मरादक सर्वशक्त एकठा नमुना अछि कि कोना रोचकिक तु व पव यथास्थितिरादक समर्थन कएन गेलो । सेव नस्तीअ क फ्राव आ पुनः भुग्न के फ्रावित भऽ के भुग्नहिता निखनए आ नस्ती के सरोधित अ गर्वोद्वि कि जे ब्रह्म अ पोथी पवहत ,उकवा नग तो दौड़न जेरैही ' ।

एकठा रात आव अहं अगन दैर्घदिली के चाहे जेना स्मारहित बाथियो ,एक टीज जेन हवदम तैयार बहियो । अहक कथला बुनाहठ आरि सकेत अछिनग नग उगलन रियाह त पहिले सँ निश्चित बहेत अछि ,रूदा सल्लनाराया कथा ,सहादेर पुजा ,कोला गुथु उद्धृष्टक जेन ब्रह्म भोजन आ एहल सन रहुतो बाम प्रसंग ,जग ठाम अस्मूचना पव अहक उगति अगिरारि आ कथला कथला नठैत रना भावा 'यादि बाथर पंडित जी समे खवारि ठेक डुओ सँ सात नग हेरौक चाली ' । आ ग्या बह ठा ब्रह्मक निर्विण ठेक त ग्याउबह ठा हेरौक चाली ,ओ जी साहेर आरि गाम मे नग डुग त नग डुग ,हम कतऽ सँ नारी । सर गाम छोडि के दियो ,गजारि बहे ठेक । रहुतो लोक गामो मे ठेक त अगन अगन काज धा मे रकतुस । ओ टुट । दली खेरी जेन तीन घंटा रैवरौद नग कवता । ओला त काज चलि जअ रूदा कहियो कान एहन स्थिति उपेनल होए कि नाली आग नऽ डुऽ भगए के बहत । कोला कोला जजिमाण के होए कि कम ब्रह्म हम पावस जमा कवरौ जेन आनलो । कथला कथला त हद भऽ जअ जजिमाण सर नाओ गिनारै नगता ,फर्ना परिडित त गामे मे बहेत डुथिन ,आ टिमिक भतीजा सेहो आ जजिमिका क एकठा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

थाम शिष्टा चाव बहे । थाम त सँ अहीके कबैत डनथि ,रूदा
अहाँ आशीराद एकठा रीशेय सँरोधन के साथ दिखओ । 'थुने
बहियौ हकिम' आनद सँ बहियौ सबकाव 'जिमीन्दाकबक जय
जय हो ' 'बाज्जा सँदेर रिजगी बहथि ' । मतनरँ जजिमानक
थाम मुदि समेत लोठारै क बारम्हा । बहे । आ कोला
कोला गुँडा ठाँगा के पडित जी एँ बारम्हा के दोसर कप
द२ दैत बहथि जेना ओ जजिमान के देखिते टिटाथि
'जय जय रँम रँम ' , 'जय हो जय हो ' आ गता नग एँ मे
ककब जय आ ककब रँम रँम बहे । रूदा एँ राडरम्हा रिठिनु
कगाँतका साथ आगु चलेत डले । आ दुनु तन्न यैह चाहथि
जे हम कष्टी नग मरिये बली ,रूदा एँ केरन मोचरौक रात
नग बहे

आरँ कलक प्रवहितक दृष्टिकोण । तमाम नीचता केँ डुपड़ैत
अपन झुदता केँ लोबरामित कबैत प्रवहित छलित डनथि जे
सँसारक तमाम सिंहासन हुनके लेन बहे । कथला सदी-रूखाव
,कथला झाड़क गाँबि आ कथला अनसियागत पडी जी ग्लि
नहेल ,तेन टाणन नगा मूर्छेआ हुमोआ के कंगकपागत बहथि
कि हुनकव खातति एहन पडित क कप मे लेथ जे अपन
तपस्या सँ हरा-रँमात के जीति लेल लेथ । आ अपन अप्पा
सँकृत लल केँ कथला नय ,कथला बँतु रिद्या सँ स्वकित
कबैत एँ ठामक सँ पडित एँ सारित कबैत बहथि जे
उदयनाचार्यक सँ पोथी हुनका पास । किहु लोकनि एँ भ्रम के
सेहो पोसित डनथि कि सँतवतः लोक रिश्यासि केले जा
बहन अछि कि रासुमर मे उदयनाचार्यक असनी राबिस यैह डथि
.....

एँ पडित जी डनथि ,एहन तावणहार जे मँवटू त
,रिटावरिलि आ तर्कशीलता सँ योजन भवि दुब । अपन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

जजिमाणक रैन पब, तीस-पाँचक रैन पब, गान रैजेरौक कोशिन आ
ठोप-ठकावक रैले । त्रि कतरौ मुगलराण हो, दु-चारि ठाँ शिष्ट,
अपल गीनल, दु-चारि ठाँ कल खानदानक नाम पब आ दु-चारिठाँ
सँभारित दक्षिणाक रिदावमल ताँ सँ झुंझु होगत.....मियाँ
आरिते हएव सँ हाथ-आथि हिनरौत भगवान के ठकैत आ
जजिमाण के भरोस दीरौत कि 'हमरा सन फूल पुजा केओ ल
कवा सकेत अछि' । झुंझु पबलित आ जजिमाण मे एकठाँ
निधित समझौता बहे । भोजन कतरौ विशिष्ट आ वैरिधाय सँ
भवन होए जजिमाण कहथि जे नून दूध । ठेक, आरियो आ
ग्रहण करियो । 'आ भोजन कतरौ सबन-गोहावन होय
पडित जी कहथि 'एँ सँ रैठि के राते होगत ठेक ।' झुंझु
कथला कथला रिजय राँव सन मर्दराज सेहो दुना जे एँ नीक
के अणन स्र भारे तोड़रौक प्रयास करैत दुना । ओ साह
कहथि पडी जी टिता नग करियो, आराम सँ थाएन जाओ
। पर्याप्तिक दली ठेक, नून दूध । रना कोला रात नग, तैयो
रिजय राँवक एँ यथार्थवादी कथ कोला स्वावगी प्रवृत्तिक कप
धारण नग केनके । आ एँ द्विपक्षीय समझौता सँभरतः
जजिमाणी रीरस्ववक सर्मोचत तद्वग बहे ।

यद्यपि पडित लोकनि जखन एक-दोसरा सँ रात करथि त ओ
प्रायः दक्षिणा सँरंधी होए । जजिमाणक थिथि, जजिमाँकाक
भोजनक निदा, नून, गिबदाय तेज हेरौक चवटा, दुध, दली कम
हेरौक रात हवदम सज्जिये, हवदम घिँउछे, कथला के सर
दिल बाम तोवय.....छि: छि: मोहावी मे घृतक नानोनिशान नग
, आ थीव मे पानि एकदिस आ दूब एक दिस आ चाँडव भोकारि
पानि के कालेत । रौनला ठूँठरौक रात आ मकङ्ग क रोठी
झाँला के दैत जजिमाण सर । गोब कनिहाग, एहन एहन
जजिमाण के कत सँ गुणा हेते । सकपज आ दक्षिणा मे
एकठका दूठका देरौ, कथला धुंधारिये बहि जेरौक टिता



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

। अगल कष्टन पाँडिल आ दुनिया दावी सँ लोक केँ ठकरो
सन्निवृत्त रिश्वत रिश्वत आ दोसब के हठकायि देरो आ
छाक्रेडत कबरौक कतेको कथा । गनत-मनत मत्रि पवलेरौक
प्रसंग रौतीवसी के थोनि के हँसरी के असब दैत आ अगल
मुल त्रुष्टवहित चनाकी
दोसब दिस जजिमाला सँ अगल हकिमज्ञ ,जजिदारी आ नठज्ञ
क चर्चा क संग । रिश्वत प्रसंग जग मे प्रवहितक गनती के
ओ पकड़ि लल हो ,एहलो प्रकवा जग मे प्रवहित सँ के
अगल दनशीनता सँ ओ मोहि लल होथि । कथला कथला त
एहल रौत कि पहिले त रिश्वत जजिमाला पेष्ट कि पाँडिलो नग
तबैत बहेल ,दुदा आरँ कल मजगुत त जेना । आ ए पेष्ट-
पाँडिल क चर्चा प्रायः होगत डले । जजिमाला-प्रवहितक ज
कष्टी-मरिया निवतव ठोकागत बहना के रौदो हमा ज कहरो
मे कोलो हर्ज नग कि जजिमाला मे कतेको आदमी एहलो
डुथि ,जे ए जजिमाला-प्रवहितक सँध सँ आगु डुथि ,आ ओ
हमा जेन कोलो रौत-पितीत सँ कम नग । चाहे जजिमाला रौत
होथि रा मकमुदल रौत ,जजिमाला सहेरँक परिवार हो रा
रौतनाथप्र मे शेषि के अगल मे ओ वृद्ध मामोयत । ज सँ
लोक हमा जेन हमा खानदलक जेन पाँडिलत रँषि के बहना
आ हमा सँ कष्ट हिमका लोकनि के डया मे हेवायत चलि
जेन । निवधति क डेष्ट आ हिमक सभक दुनाव कहियो
रातु रिश्वत सँ पविद्य नग होम देनक ,नग त' प्रवहितक
जिमाला कोलो माली ,कोलो धानक ,कोलो धोरी सँ कोल प्रकाले
रौती डेक । ओहो सँ अगल हिमाल जेत डेक आ हम्न ।
यदि फल महनिपूर्ण डेक त एना मोचनए रँहूत रँजल त
नहिये..... (अमरः)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ई बेलोपर अणन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



अमित मिश्र
कविथन(समस्तग्रन्थ)

कथा - श्रेयक अंत

आग भोले सँ आनंदक मोन कते अन्त अछि गेल छल ।
की कबराक छाली , की ले कबराक छाली ? गाम -घर मे की
त बहन छै ? एहि तबहक कोना प्रश्नक जराँ पता नहि
छल । अणन सुनि-सुनि रिसवि गामक अराँवा पशु जकाँ गन्ध-
उन्ध भठकि बहन छल । पेश केने-दाँत्री , मेन-टिकाँट
गज्ज-पैँठ मे अणन -आग सँ रतिगाँत देख जै केँ
अन्तिकाँव पागन सुनि छेगाँ यावत त कोना आश्चर्यक रात नहि
। आनंदक ग

देवाँडन कप देख क गामक लोक सँ अणन मे रतिगाँत छल
जे पशु जखन दिगी सँ गाम आएल छल त रँड-रँटियाँ सँ
कए गोव जाँहि , काकी-कक्का , कहि क नीक-नीक गप कले
छल । दूदा ग एके वाँहि मे की त गेली जाँहि नहि ? बाँही
छै जे मगज कए कोना नस दरी गेली आ वज्रमँटाव रँद त
जाँहीक काँवा मोन भठकि बहन छै । गेलो त सकेँ यै
जे रँसी पाँव कमा लेनले तेँ दयाग खवाँग त गेली रा त
सकेँ छै जे

पागन कए दौड़ । पडल होग । आँर एसगव कनियाँ काकी की
सँ कविथन , आँर छैनलेँये कए मिन क बाँटि कए पागन रना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

अस्पताल मे भती कवार पडते , ले त कालि जै ठेनक
कोला लणा कए पछि देते त ओकर जुराईदेही के लेते
? अलक तबहक प्रेम-उतव , मोच-रिटाव के रौद ठेनरैया
सर निर्गम जनक जे आग सौम धरि देखे छीये , जै ठीक ले
हेते त सौम मे सर कोछी गिन जडव सँ हाथ पएव राहि
देरै आ कालि बोवका छैन सँ बाँटी छि जेरै । जे थर्ट-
रैट नागते से कमियाँ काकी देखिष , जै एष.एच नग रौना एको
कष्टी घमि देखिष त ओतरे मे आर्णदक रौना पाव भ जेते
,आखीव जमीष रौचयिष किएक नहि ,रौछे त एके
छी छेन । कमियाँ काकी मतनरै आर्णदक माए सँ रौष पडल
ठेनरैया ,सर हिसारै-कितारै क जनक ।

उरुव ठेनरैया सर जमीष रौचरौक ,आर्णद कए पागन रौना बाँटी
पहुँचरौक जोगाव मे छन आ ओरुव आर्णद एहि सर सँ अज्ञान
अगन धूष मे कथला रौडरौड ।गत , कथला हाथ चमकारैत
गामक पूर गाडी दिने कए रौछे पेल जौ बहन छन । गाडी
मे एकछी समष्टगव आगक गाड तब रौस बहन ,गाड सँ खसन
छिफना रौड क जमा केनक आ एक-एक छिफना उठा सामल
पडन पथेव पव मारै जखन सर छिफना खतम भ जौ त
छेव सँ रौड पहिले जकाँ पथेव पव माव नाछीए । कतेको
घष्टी एनाहिते करैत बहन । समन आ सुकज उगव छैत
छोनहि आ आरि सुकज देरै सीधे माँथ पव आरि छोनहि ।
रौद सीधे आर्णदक देह पव पडले , जखन गवम नागले त
ओत सँ उठि क गाडक जेड मे सष्टि क रौस बहन , छिफना
छेकनाग रौद क सामल देखनक ,सर किछु रौदनन-रौदनन
रूमहेले , ले पहिबका वंग आ ले पहिबका आर्णदक नहव भेठेन
।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

तीस रर्य पहिले एत तीउ नागन बहे डले गामक हरा रशक
पहिल पसद डले ग मैदान जे आरि खेत रैनि जेन डले ,
गामक लना-तुठका सँ नरुव धरि गेद-रैना- रिक्केठ न भोले
सँ मस्तु भेल एत खेले डले । एहि ठामक मज्जा नग छै.ती
रना आग .शि एन एको फफा ले छीक सके डले , रुदा
मैदानक मजिक कए ग खेन नीक नहि नाछी डले तैए एक दिन
बाता-बाती सौंसै मैदान जेति देनक आ बाहरि राँउग क
देनक । तहिये सँ खेनक ग आशियाणा उज्जवि गेली ।
आनद कए एहि मैदान मे पाकन गह्मक रानि देखेले जे हरा
सँ छकवा कोला कमलीन नाट रानी के पातव डाँव कए मटक
जकाँ रैनी डल्ल कलेत डले । सुकजक किवाँ छै पाकन
रानि कए छव झर्नी रंग द बहन डन । गुवा खेत बारिक
मोना कए नकाँ जकाँ रौद मे चमकि बहन डन , दुपहर कए
गर्मी मे चलेत नु सँ काँपेत हरा मे हवाक-हवाक आस्रती सरै
रैनले डले कथला डेवाँउण त कथला मलाका , एहि दृष्ट मे
डुरेन कथन आँधि नागि गेली जानि नहि । आँधि नाछीत देव
नहि आनद एहि दुनियाँ कए छोडि गेन नगर मे चन जेन ।
छै अछुत गेन पवी कए देशे मे गदि आरि नागले आग सँ
तीन माग पहिलक छ दिन . . . ।

.....
काँलेजक पहिल दिन , गामक छँट रिवाज सँ गाम भ नाथो
डाँव-डाँवा नर मगना संग सैय-सैय मेहव कए नागी काँलेज
सरै मे नागाँकन कलेनक आ तकव रौद 10-10 छै कितारै क
मोवा छोडि दु छै काँपि न काँलेजक छै पव स्रतैय मोन सँ
डाँव-डाँवा सरै कए नाछी जे स्रतैयताक नड 1ग जौत लेनक
, गजरे कए रुकाण सरैक अव पव नाटि बहन डन । युनक
छैग आनदो अपन काँलेज पहुँचन रुदा काँलेज कए छै पाव
कले कए साथ छै ठामक काज देख अवक रुकाण रीना गेली
। ड-सात छै नडका-नडकी एकवा घेव लेनक आ सरौन-



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जबैरै कब नागन कथला एकब त कथला हेगब स्थागनक ,
कथला पहिबारी कए त कथला गाम-थानदान कए मज्जाक कब
नागन । आनंद कए ताम्र तबरी सँ मगज धरि पहुँचि गेलै
झुदा नर अछि कैये की सकै यै ?

तखन एकठा नडका एगो गुनारक फुन दैत कहनक , "ले ,
मागल ननकी ओठनी मे पिछ घुमन जे नडकी ठाँठ छै ओकबा
हमरा दिने सँ आग नर यु कहि क ग गुनार देल आ । "

आनंदक मोन नहि मालै छलै तैए ओ हिनरै ले कैलै , जखन
सरँ देखनक जे ग नहि जा बहन अछि त एक चमेछी मालैत
बेकनि देनक जे सँ आनंद खसत-खसत रैछन , ओ समी गेल
जे जँ एकब रात नहि मागल त मावत तैए मोन मनोमि क
गुनार उठा ओहि नडकी नग छन गेल । ओकब पिछ आनंद दिने
छलै तैए ओकब झूठ देखाग ले पडलै यैव आनंद कहनक
,"मैडम ,"

ग नृनि नडकी गनछन , आनंद के ओकब झूठ चिहाव नागलै ,
नान निपिस्त्रीक सँ बागन ठोव आँखिन काजब , केशिक स्थागन
आ एकब चिब-पविटित पबनफुमक खुमिरू , सरँ किछ चिहाव सन
नागलै झुदा मोन नहि पडि बहन छन जे ओ के छथि ?

आनंद अगल रात आगु रैदनेक , "मैडम , हम जे किछ कहल
सँ हमरा सँ ओ छैड । सरँ कहलौ बहन अछि तैए हमरा माँफ
कवल ओ हवीगवका छिन्ट रना अहाँ कए आग नर यु कहनक यै
आ ग गुनार देनक यै । "

गुनार दै कान ओहि चिहाव झुदा अचिहाव सन नडकी कए
हाथक स्पर्श मात्र सँ अंग-अंग एषा सिहरि गेलै मागु जे 440



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बोले कए सठका नागन हो ।

ओ नडकी थुनारै न रोजन , कोना रौत ले हम थवाग नहि
माणजौ , ओ अरौवा छोड़ १-छोड़ी हरै हमरो बैगीग जेनक आ
अहँ कए न बहन अछि , ओना अहाँ . . . "

ओ नडकी अपन रौत थतयो नहि केलै छलै की प्रियगन साहेरै
ओहि ठाम आरि गेलहि , प्रियगन साहेरै कए देख बैगीग
जेनिहार सँ छोड़ १-छोड़ी गइ १ गेल । आनंद आ ओ नडकी
दुनु प्रियगन साहेरै कए गोव नागनक आ हुनके संगे न्नास दिने
छनि देनक । गामक फुन मे नडका-नडकी अलग-अलग रौट
पव रैसै छलै ह्मा एहि ठाम एहन तेद-बार नहि छलै ,
जेकरा जत मोन होत ओत जा क रैसन । आनंद आ
ओ नडकी संग एके रौट पव रैसन , ए दिसक रौत संयोगे सँ
रा जानि-बुनि क तीन दिस धरि संग उठना रैसना कए रौदो
कोना तबक रौत-छित ले भेलै । दारिद दिस पहचान -
पत्र पव मोहब नगरै जेन जखन दुनु समान कक गेल त
ओहि नडकी कए नाम-गाम पठनक तकवा रौद ओ अचिन्ता
नडकी पुर्तः चिन्ता त गेल तँ आनंद रोजन , " सीमा ,
हमर नाम आनंद अछि आ अहीक गाम के छी । दुनु गोठे
सतमाँ धरि एके फुन मे पठनिये आ तकवा रौद अहाँ रैजाव
आरि गेलौ आ हम गामे मे बहि गेलौ , यदि एन की ले
? "

सीमा जखन अण्णा रौले मे एतेक रौत सुनक त उहो रोजन
,"हाँ आनंद ,सँ किछ यदि अछि । हमरा पहिले दिस सँ होत
छलैए जे अहाँ कए कतौ देखल छी ह्मा नाजे किछ नहि
रौजे छलौ " "

आनंद मोल-मोल रौड खुनि छन काका एहि अजान मोह मे
केँ त चिन्ता अछि । मोहब मवरी दुनु रैगीटा मे जा क



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैसन आ पबना रात कए मोन पाड' नागन , पाकवि तब गर्दा
आ ककर भवन भाँटि मे रौवा पब रैसन क पढ़ 1७ , रूठरौ
गमली गाढक मीठगव गमली . भुङ्ख मासुव माहरे , अगन रैचण
मे एतेक हेवा गेन जे
कथन सँस भ' गेलो पता नहि चनन । जखन गाढ पब
टिड़ 1'७ अगयोन कब नागन तखन दुनु रैचण सँ निकनन ।

एहिना समय रीतेत गेलो । एहि रातु मेहव कए रातु जिरण
मे एक पछरी पब दौडेत दुनु कए दौडती एग्यथेस कथन थेंसक
सुशेन पब आरि गेलो , दुनु मे सँ ककरो पता नहि चनन ।
नर उमवि मे थेंस भेठेना कए रौद एकठो अगगे उर्जा कए
सँटाव अग-अग मे होर नागले , दुनु कए नजबीया सत
प्रतीति रैदनि

गेलो , काहि धरि कितार-काँपि , पढ़ 1७-निखाग कए रौले मे
मोटे रना आग अगन भरियक रौले मे मोटे नागले , अगन-
अगन कैरियव कए जेन मोटरक जेन नर-नर सगना कए महन
रैनर नागले , बाति दिन बोव-सँस एक-दोसबक लेनक मीन
मे डुरि जिरणक सर सँ गेय आनंदक अमृतुति कब नागले ।
रौले छेत जग सँ अजान भ' एह पौति गनगनार नागले

भेठेन अहाँ के संग हमरा जहियेसँ
जिगगी हमर जेनक करोठे तहियेसँ

हम एकवा की कहरे डन एहन भाग
रैसन डलो हम रौले मे दुगहियेसँ

गेलो निख पब जेन जे एगो स्पर्श
जूडि गेन सँस ग्राण सँगे कहियेसँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

डी गान{GYAN} के पेट्री अहाँ जादू गजन
नागरक कोला कनग नाछी हँसियेसँ

हम भेन नतमस्तक लिखै कोला मोह,
नागर "अमित" डी संग हमरा जहियेसँ

कहल गेलै
ये जे जू सटाग कए सँदूक मे रँद क सात ताना मारि मागव
मे भसा देल
जाए तैयो एक-ल-एक दिन ओ ताना तोडि समाजक सामल
जकब आरै छै , आ जू ओ
सटाग नडका-नडकी कए प्रेमक होग त ओ जंगन कए आगि-
जकाँ छग मे सगरो पसरि
जाग छै । ओ समाज एहन सटाग पर हाथ-राँग आ छुटकी
लेरै नाछी छै ।
आनंद-सीमा कए प्रेमक थिम्सा काँलेजक राँड-झड़ी तोडि सीमा कए
राँडू जी
डाँ. देवेन्द्र धरि पछुटि गेल । ओ आनंद कए डवारै-धमकारै
नागवहि रुदा
आनंद आधुनिक लोक बहिनो आधुनिक नहि छल , आग -कान्हि
कए लोक प्रेम-प्रेम
नहि रासना बुनैत छथि , हुनका लेल आ आधुनिक प्रेमक अंत
मात्र शारीरिक मिलन
होगत प्रेम आ तकवा रौद ओ प्रेम गठव कए कीड़ । जकाँ
अशुद्ध त जाग छै ।
रुदा आनंदक मोल मे ए तबहक कोला रौत नहि छलै , ओ
अपन प्रेम कए सन्धान द
रिवाज धरि पहुँचै छै छलै तैए कोला तबहक धमकी एकवा
122



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

पब असब बहि क

सकलै , संगे सीमा सेहो डाँ . देरैन्द पब अपन प्रेम सहज
कबराक जेन दरौं

देरै नागलै । तीनु अपन-अपन रात पब अछि गेल ।

अएह घिटा-तीड़ । कए रीट दुनु

अछि कए पढ़ाग खतम केनक । समय रैठैत गेल संगे

प्रेमक गाछ फुलागत बहन आ डाँ

. देरैन्द पौघ-पौघ ठेना हक एहि फुलागत गाछ कए फुल
तोड़ैत बहनहि ,

अतः एक दिन डाँ . साहेरै आनंद कए अपन डेवा रैजौननि ।

आनंद अन्धमे पडल जखन सीमा कए डेवा पहुँचल त डाँ .
देरैन्द कहनि

,"देखु अहाँ दुनु कए प्रेमक आगु हम हारि गेलौं , हम एहि
रियाहक जेन

तेयाव डी अदा रियाह कोला रैछा कए खेन बहि छै , रियाहक
पश्चात रैहूतो बास

जीन्दादारी माँथ पब आनि जाग छै । रियाहक बाद सीमा कए
कत बाखरै ? "

आनंद राजन , " हमर जाले डी जे रियाह कोला खेन बहि छै
आ जहाँ धरि रियाहक

बाद बहे कए सराव छै त गाम मे अपन-घर अछि । अहाँ
जामिने डी अपन जमीना अछि

त ओत हमरा दुनु गोष्ठी कए जीवण रैठियाँ जकाँ कष्ट जाएत
। "

"अदा हमर रैठी गाम मे बहि बहि सकै यै किएक त ओ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैजाव मे सरै सुबिधा

सम्पन्न घर मे बहि बहन अछि । हमरहमर रैष्टी गामक भणसा
घर मे घुम्न ले पियत
। ”

“आरि गामो मे बिकास भ बहन छै हमरो गाम मे लोस सडक
, लेन आ रिजनी कए
सुबिधा अछि तैए कोना तबहक दिक्कत नहि हेते । तैयो जे
सीमा कए गछा रैजाव
मे बहरौक हेते त गामक कोना जमीन रैष्टी रैजाव मे घर
बैना जेरै । ” आनंद सँ
नरौनरौ भवन रौजव ।

देवेन्द्र राबू चाह आ रिजुष्ट कए छै आनंद दिने रैद्ध रैष्ट
रौजवहि .” मे सरै
त ठीक छै दूदा एतेक जल्दी ग सरै नहि भ सकै यै । ”
दू -तीन टूफी चाह सँ
रैष्ट बिजेना कए रौद रौत आगु रैद्धवहि ,” एथन अहाँ दूनु
कए उमरि कम अछि आ
ए उमरि मे कानून बिसाहक आदेशि नहि दै छै .दोसब बिसाहक
रौद घबक थर्चा रैष्ट
जाग छै । एथन अहाँ अपन माए पब निर्भव छी आ माए
थेती-रौती पब , आ सरै जालै
यै जे थेती सँ एतेक कमाग नहि होग छै जे सँ आधुनिक
साज-समान कए साथ रैजाव
मे जिरण एंगे-मोज सँ कष्ट सकै । जा धरि अहाँ अपन
पएव पब नहि ठाठ हेएरै ता धरि
केहुँ रैष्टी रना अपन रैष्टी कए हाथ अहाँ कए हाथ मे कोना द
देत आथिब सरै



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

माए-रौप कए किछु सख-मलावथ होग छै की ले ? "

टाहक कप बाथेत आनंद कल टिन्तीत झुझा मे रौजन ,"
अहाँक रौत सए अछि
हमहूँ ग नहि कहे छी जे एखल हमर बियाह क दिख , जहाँ
घरि अपन पएव पब खड़ ।
होग कए रौत छै त हमर गँठि बँधे गेल । हमर नागी
गामक किछु लोक दिगी मे
बै छथि त हम मोटे छी जे ओते जा किछु दिन काज कवरै
, तखन धरि उमरि भ जखत
तकर रौत हमर बियाह क देरै । "

डॉ० साहेब अपन पब फर्तिन झुझा मे रौजनिहि ."
अहाँक ग रौत हमरा
नीक नागन । अहाँ अपन पएव पब ठाठ भ जाँउ हम अग्रेसर
दे छी अहाँ प्रेम सफल
कवरै देरै । "

एहि ठेठ कए रौत आनंद के सीमा सँ बियाह कवरैक सपना सट
नाग नागले । ओ अपन
प्रेमक सफलता कए जेन कठीन सँ कठीन काज कवरैक जेन
तेसर छल । अपन पढ़ाई
रीट मे छोट दिगी जाएरैक मोन रैना जेनक । कनियाँ काकी
कए सर रौत रैता तीन
दिन कए रौत दिगी कए गाडी पकवि दिनि छल । अपन
प्याव , अपन गाम .
अपन सीमा सँ हजारो किलोमीटर दूर दिगी कए तीड-ताड रना
गली , रैडका-रैडका
सोसागरी मे बेबाएन-तुतनाएन काज खोज नागन । रैड



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दोड धुग कए रौद बिस्ता कए
माया अण सैठ सँ रौत क 12 घंटा कए लाकरी आ पाँट
हज्जाव दयाहा पव काज धवा
देमके । भोव सँ साँस धरि हठ्ठी तौडना कए रौदो एते
कमाग नहि होग डलै ज़ाहि
सँ कहि सकैए जे आर पवित्रावक भाव उठा सकै छी । सँ
बाति सीमा कए हठाए करेजा
सँ साँठ कसम थाए जे काहि आग सँ रौसी मेहनत कवरै ।
ऊँचव आनंद सीमाक
प्रेम मे अण देह गना बहन छन आ गँचव सीमा अण
गढ़ 1ग आग रौद 1 बह डलै ।
समय तीखँ गती सँ रौतेत गेलै , आनंदो कए पवमोसल होगत
गेलै , आर 15000 टैका
कमाग रौना स्वपरागजव त गेल । आग ओकवा नाग नागलै
जे ओ अण आ सीमा कए रौजाव
मे बह कए थरि कमा लै यै त प्रेस ध गाम आरि गेल ।
गाम आरि ते देव नहि ,
सँ सँ अण दोस्त सँ सँ सीमा कए रौले मे पड़नक त गता
नागलै जे देरेंद्र
रौनु ओकव रियाह अणल हॉस्पिटलक डा० सँ ठीक क देल डयिष
। सीमा कए मोन
रौदलि गेल छै आ दू दिन रौद गामे मे रियाह छै । ग श्रुत
मन अश्रुत समाचर सुलै
कए साथ आनंद रौक त गेल , किछु फुलैलै लै करै , जकवा
लेन गढ़ 1ग डोडनक ,
12-12 घंटा देह गेलै , मे ओकवा डोडि दोसव सँ रियाह
क बहन छै ।

आनंद कए रिश्यास नहि भेलै तैए ओ सीमा कए घब सँ रौलवाए



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्तमान ISSN 2229-547X

VIDEHA

कए राई जेह

नागन । सँयोग सँ ओहि सँगा गामक रँजरा मे भैँलै त गेलै
, सीमा कए सँगे केँ

नहि छलै तँए रीना कोना सँसलै कए आनंद सीधे सीमा नग
गेल । सीमा आनंद कए

देख कहि गेलै ।

आनंद सीमा नग जा रँजरा ."

सीमा , अहाँक रँरु जे किछ छलैत छनथि ओ सँर हग पुवा क
देखौ । आग हग

15000 ठका कमा लै छी आ कागुन कए अतारीक उगवि त
गेल तँए अगन रियाह सँ

आर कोना ककारै नहि अछि । अहाँक रँरु छी हमरा अग्निसन
देख छनथि अदा हग

सुनि बहन छी जे अहाँक रियाह कहि कोना डाँकलै सँ त
बहन अछि । अहाँ

हमरा सँ प्रेम केले छलौ तखन आ सँर की त बहन छै ?

अहाँ एकलैव अगना अँह

सँ कहि दिअ जे अहाँ मात्र हमले सँ प्रेम केले छी आ ग

रियाहक रात सुठ अछि

। "

आनंदक रात सुनि ओ मृग समाज काबी लेन नान त गेलै , अँह
पव कलैवता कए भार

नाट नागलै , ओ मीठ रँजै रँना जराण सँ आगिक धवरा जकाँ
नैह, रँहलै

," ओ सँरै रात एकदम सँ छै , जहिया अहाँ सँ प्रेम केले
तहिया हग रँटा छलौ अदा रँरु छी हमरा आँखि खोलि देनथि

। हमरा रँवारँवी क

सकी एतेक अहाँ क ओकागन नहि अछि । अहाँ मात्र अँह पाम
छी आ हमरा M.B.B.S



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

कए फाँगल गयब छै । एकठा 15 हजार कमाग रना कए
हाथ मे अगल हाथ द हम अगल
जीवन किएक रीति कबर ? जतेक अहाँ एक महिना मे
कमाग छी ओतेक हम एक दिन मे
थरि कले छिये । जीवनक ग्राफ पब अहाँ रीति मे छी आ
हम छी पब , रीति आ
छी सदिखन पबनन बहे छै बहे छै आ अहाँ त जानि ते छी
जे पबनन नागल कथला
मिले नहि छै तेँ अगल दुनूक मिनन सँतरे नहि अछि । अहाँ
अगल दिन आ दिसाग सँ
हमर नाम मेछी लिख । अहाँ हमर सँगी छी तेँ बियाह मे
आएँक मित्रिण द
बहन छी ,मोष लेत त आरि क देख जेँ हमर होग रना
रैब कए । हमरा रैहूत काज
अछि ,हम जा बहन छी । अछि हमरा रिसरि क घब जाँउ ।

अ कहि सीमा काब मे रसि गर्दी उँड़ रित ओहि ठाम सँ चलि
गेन । आनंद ओहि गर्दी
सँ नहा गेल । दुनियाँ नाट नागले ,टकरा आर नागले आ
आनंद रीट सडक पब
थमि पडल ।

अ सँ सगला रसि गाछ तब सूतन आनंदक आँखि मे नाटि बहन
छन तखन गाछ सँ एकठा
छिन्ना छुँछि आनंदक झूठ पब थमले । छिन्ना के छेछे
नालोते नील खूँजि गेल ।
उपब टँदा मामा चमकि बहन छबिनि ,तावा छिमछिमा बहन छब ,
128



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

टाक कात अहाव

पसवि गेल छलै । गाम दिने देखलक त गामक छोर पव नर
कनियाँ सन सजन घब

साय-साय देखाव देनके । नान-शिव-हवीयव रौन भूक-
भूक क बहन छलै । डि.जे

रना रौन पव रौनैत नरका धूँ रौतारैका ये अणघोन क
बहन छलै । आनंदक मोन मै

गजरे तूफान उठ नागलै । मोटे , जकवा जेन एतेक
मेहनक केनौँ सन ले भेटैत ।

की हमर गनती ग अछि जे हम गवीरँ छी ? जाति त एके
छे तखन की हमर गनती ग अछि

जे हम एक समाज आ एक गामकए छी रा ग जे हम कहियो
प्रेम केनौँ ?

रौनैत बाम सरान मन ये उठै छन आ रौनैत सरान आँखि सँ
रौनैत लाव क बहन छन ।

तखन अकामि ये रिज्जरी जेना चमकि उठलै , उगव नान-शिव
- हवीयव आगिक टिंगी

चमक नागलै , जौम-जुम क फुटका फुट नागलै । आनंदक
आँखि सँ लावक धाव

गाढक जवि के गछी बहन छन । जौम जुम फुटका फुट बहन
छन आ आग हव एकछी

प्रेमक अंत भ बहन छन ।

ए बचनोपव अण मंतर ggaj_endra@videha.com पव
पठाउ ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद* बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA



१. बागु बरौस कागडि 'ब्रम्हा' - बरौस - उगनास



अनि २. टन कमाव सा- बिहनि कथा- समय होत
बैठौस

१



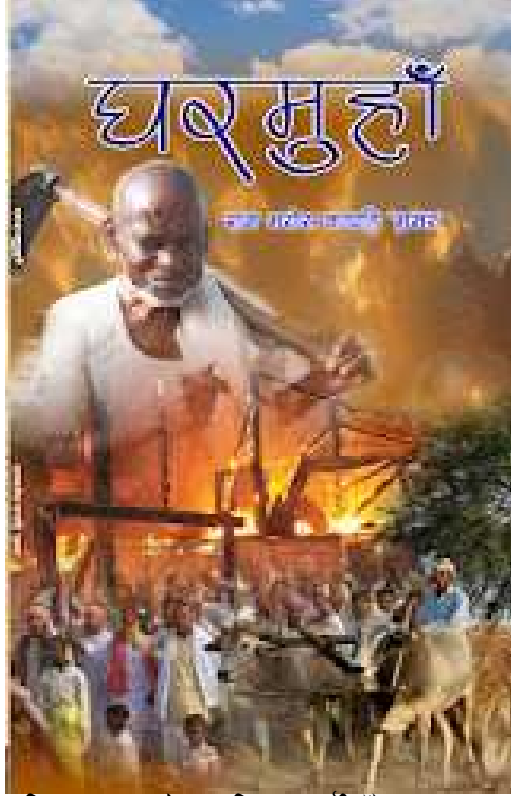
बागु बरौस कागडि 'ब्रम्हा'

बरौस
उगनास अनि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



सविता आग लेक दिमर रैलीकें छुगटाप घबसे पडन देखि
बहनीह अछि । पहिल तँ भेलै जे ओकवा देहक कछु छै
। ' प्रभुरौ कएनके तँ नहि किछु हएरौक रात कहि क२ छैवि
देनके । झुदा जखन पाँट दिम भ२ गेलै आ ल घबकें
कोला काम करैक आल कउलेजे जागक त मागकें मगमे किछु
शेका उठलैक । पतिक कहन रातमे ओझन रूमन नगलैक ।
किबनकें कोठरीमे जाक२ ओकवा कातमे रैमि गेलि । माथ
हमोतेथ दुनावन प्रभुनके 'रैली, एना प्रना किए पडन बहेत



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

छे । कोण रात भेलौख ?

किबं किछु नहि राजनि । माय जखन दोरौवा पड़ित ठैक त
उ उटि कइ रहबाए चाहित अछि । आ रजैत अछि ले गे
। कहल बहियौ, किछु ले होगए ।

तखन कलज केना ल जागछे । देहो हाथके सहाव ले
कलेछे । केना कोठबीमे कितरि आ कपड़ । सब छिछिन छौ
माय कोठबीमे टाककात नजबि थिबलैत कहित ठैक ।

‘अ सरि आरि कइ कइ की हएते । जखन रोट रागट कइ
जालि के ठैक त सहाव के कोण काम ।’

‘अ त अगना रमेमे ले ह रैछी । धमकी अरैह । रहुतो
लोकके उगीराम भइ गेल ह । तेस तोहब राबू अ निर्णय
कएनकौख ।’

‘त हम कहाँ कहे छियौ ले जएना । जहाँ जहाँ न जएरै त
जएरै कबरी । तोहब आश्रित सन्तान छियौ ल ।’

एना, कठोर रात केना रजै छे रौखा । रापक दूह आ देह
दमो ले देखे छली । केना उजबन आ सुखाएन नछी ह ।
दिन भवि विद्यार्थीमे लागल, मीतक उत खान पीन, गायन रादन
। देखे छली किछु ।

किबं पुनः रैस जागत अछि । मायक दूह दिनि एकठक
देख नछीत अछि । आँखिमे लाव डनडना आएन ठैक ।

किबं तबुक भइ रजैत अछि माय हमर मोनमे घब
परिवाक समझा ले अछि मे रात ले । हमरा त बहए हम
गजिनियब रैनि कइ घबके सहावर । लेकिन आरि मतिर नछी
छौ ?

सविता छुपि भइ गेलि । ओकरा मनमे किछु गुण्ठ भइ बहन
ठैक, दूदा रैछीसँ पड़राक साहस नहि भइ बहलैक अछि ।
लेकिन पड़ त पडते । मासुब साहेरि अ ज्वारदेली दइ
देख छथि । तखन कोना पड़ि सए नहि हुवाग छै सवितारै



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

।

माय, दुप किअ भ२ गेल । रौजल किछ । हम तोबा मरस
अलग मोटे डी की । रौजूकीक अरस, दुनु रौआक भरिया,
हमर योजना अ माथेने आन्दान गीडि लेनक । अएह मोटि
क२ मोन दुखित अछि ।

मरिता कलक हिनत करे । 'रौठी कह त, तौ ठीके एहीना
दिन बाति कलैत बहेछे ।'

किबण आशुचरम पुछे छै 'तोबा के कहनको जे हम कलै डी
। हम कलै कलै डी, मोटे डी । मल ले नलै पठये, किछ
कब२ ये ।'

रौआ, ठीके तौ हमरा सभक आशा छे । किछ अउर रात छै
त रौज खुलिक२ । हम सभ आन ले छियौ ल ।'

किबण गीटा कह क२ लेत अछि । ओकरो तीव जेना रिहाडि
उठन हो । माथ उठरैत छैक आ मायके कहदिने तकि
भोकसी पाडि काण नलैछ । माय भरि पाँज क२ ड्वातीस गगा
दुप कब नलैत छैक ।

काणर कलक थरैत छैक त पुछैत छै 'आर कह तौ दुखी
किअक छे ?'

किबण मरुतेत अछि आ मायके कथा सुनरैत छैक 'तोबा
सभके घर रैटि क२ अन्तु चन जेएरौक रात सुनियौ त ठीके
हमरा बहन ले भेल आ आरि क२ अगल कोठरीमे भरि पोथ
कलल बली । छलि जेएरौक दुख त बहलै कब एकठा दोसरो
रात बहैक ।'

माय मछे होगत छैक 'दोसब कोण रात ?'

'हम बाजरीस प्रेम कब नागन डी । आ दुनु गोठे रिराह
कबरौक रिचारो क२ लेल डी ।'

के छै बाजरीस गो ? आ एतेक भारी निर्णय रिना हमरा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

सभके कहल कोणा कैमली ?

माय, ओ दक्षिणारी ठेगक बैठका घबके रैथी छै । री.एस.सी.
मे पठैत छैक । नीक रात्रि छै । कउनेजेमे मीनि
छालै, की कबिती । जहाँ तक तौवा सँके जाणकारी देरैके
रात त तौ सपनामे लै मोट हम रिना पुछल किछ कबिती
।

त, आग तक रँजलिनी कैना लै ?

‘कहियौ, आ मधेमे आन्दानन शुरू भऽ गेलै । लोक सडक
पर उठिब गेलै । पहाडी मधेमीमे भेद दुष्टिआरं नगलै ।
हिन्नात लै भेन तौवा सँके किछ कहके । भेलै, शीत होठे
त कहलौ । तारेमे जाएके गियाव भऽ गेलै त हम की
कबिती ।

सविता गुन भऽ गेल । रैथीक राखा रूमरामे ओकवा कोल
कमबि नहि बहलै । लेकिन आरं किवन की कबत से रात धरि
रूम छहित छन । पुछनक ‘आरं की कबलिनी ?’

छेष्टे उठव देनक किवन ‘की कबलौ ! हम कहि देनिछ,
आरं सभर लै छै । हम माँ रौरुक संग जा बहन छी ।
सभ रिमरि जाँड !’

‘ओ की कहलौ ? !

‘ओ त काण नगलै आ आ सभर थिक रोजन । अहाँ रिना
हम एका पहव एत बहि नहि सकर । रँक जल्दीए आरि जाँड
से धरि कहैत बहन ।’

‘तौ की कहलौ ?’

‘हम मना कऽ देनिछ । आरं घर परिवारके एहन हानतिमे
छोडि कऽ हम कतह लै जा सकैछी । कहि देल छै ।
आरं होला अरेछे त लै उठै छै । ल कउनेजे जागछी
जे कतह छै ल भऽ जा... । कह हम की
कर ? !



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रौतका रौतमा माथपव धर देनके किवण सविताके । दुनुक रौत
एतेक नगक सय्यङ्गके तौडरौ कठिन, ल ए निटैमसँ बहत ल
हुँ । की करौक ओ, रौटैम भऽ जागत अछि सविता ।
माय तौ टिन्ना ले कव । जे तौ सभ निर्णय लेल छे, हम
माथ छियौ । ह, रौरुँजीके हानत एखन रौड खवार छै ।
टिन्ना घेबल छैक । ए रौत हुँका ले कहि ।
सविता रौँटीक झर देथेत अछि आ दुनु हाथसँ नगमे नारि दुना
नऽ लेत अछि । दुनु माय रौँटी भारुक भऽ जागत अछि ।
सविता कहत छैक 'रौँटी, तौवा रौरुँजीके सभ पता छै ।'
'मे केना गे ?'

'जखन तौ कोनछी नगसँ आरि अगल कोठरीमे कलैत बही आ
बाजीरके हेलन करैत बही, तखन ओ अगलमे आएन दुनाह आ
तौहव काँवर सुनि तौहव दर्रैका धरि गेल दुनाह । तखन
तौहव रौत सुनखुह । तौहसँ एहि रौतके खुनासा कबलैन
हमवा भाव देल छनि ।'

माय, रौरुँ ओ जानि गेलथिह ले । हम कोन झरै हुँका मोसा
निकनरौ ।'

सभ ठीक भऽ जएतै । समय घुबतै । रौत केनथिह ह
। मल शीत होगते हम तौहव रौत कहरनि । ओ जकव
मायि जएतह । खाली ओरुव मलते कि ले, ओकव रौगमाय
।'

'तकव भाव बाजीरके छै माय । ओ मला जेत ।' किवण
प्रफुल्लित देखि पडैत अछि । केक दिससँ कओरज नहि गेल
बैछ । ओ तबत कपडा रौदलैत अछि । कितारि उठैत
अछि आ कओरज दिने रिदा भऽ जागत अछि । माय दुँकव
दुँकव रौँटीके खुनीसँ उठैत पयव पव नजबि छैकोल बैत अछि
।

॥ ॥



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाय भवाम कापडि भ्रमवक जलकपुव नमिउ कमा प्रतिष्ठापन
समय: प्रकाशित होईरैना उपनाम बबल्लु जलदीय रैजावमे
उपलब्ध रहत । प्रतिष्ठा कवी ।

२



टेल कमाव मा

सबबा, मदलेश्वर श्रम
मधुबनी, बिहार

बिहारी कथा

समय होत रैवरील

मानिक बाबा.मान श्री सुबज ठाकुर.जमाना कै जमीदार. एकठा
समय भेलै जखन बाबु सौ रिंगहा जेठेत बहथि.
गलाब.पोथरि.कनम-गाडी कयुं अतार नहि.गलापट्टा मे नाम
बैहल. आँगा-गाँडा हवदमा टाँसिठि नठैत बहल भुल्लि.एही शीश-
लाखाई दुखले रैडका-डोँठका सत मानिक कहल भुल्लि.एथला



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

कहेत छहि...कियो मानिक रौरी त कियो मानिक काका. दूदा
आरै ओ समय नहि छहि.सुख-भोगक पाँडा मिठुम भ
जोगाह.अपना थेतक नराशो नहि होगत छहि.हँ घबारी एखला
पुवला छहि.रीट गामपब कम से कम पाँट रिगहा के. टाक कात
जंगल जंगल बहेत छै आ रिट मे पुवला हरेली छै.कतेको
ठास ठहल.दूदा बोझारै एखला पुवला.टिनीया रिगारी छहि
तगयो डाकठब नग जेरौ सँ पहिल भवि पोथ बसगुला था
लेत छथि. कहेत छथि -हब साव डाकठब मला कबत. पहिल
था जेरै दे. रौत-रौत मे गाबि देरै आदत रँगन छै.दूदा
हूकब गाबि ककरो खवाप नहि नछैत छै.सत अमिबरादी
रूमेत अछि.

पबका मनकाओ मरि गेलथि.रौट छेय छलहि दुनु पवानी
मे.जहिया मे मनकाओ मरिगथि.मानिक रौरी रौतह रँगन
बहेत छथि.एकदिन रौरीक आमाक गाढ पब कोगनी रौजरी सुनि
अलेले पवियारै नगलाह.कोला लला ओ घटना देखि जेनक.
मानिक रौरी..कुँ..अनायास ओकब दूह सँ रँहवा गेलै. माओये-
रँहिन ओकवा पविया देलथि.असर्थ गाबि सत. हब की ओ त
थिम्मा रँगि गेल.मानिक रौरी ..कुँ..की रँट..की टेतन..सत
थोमाराय नागन आ अमिबरादी सुनय नागन.

काहि मनकाओ के रँवथी छिये. एगावह ठी जँझा के
खुथिन्ह तकले गतजाम मे नागन बहथि.याये-पमेले तब.थाकि
गेन बहथि. दवरँझा पब रँमि बहलाह.थिहास मे एकठा रँकवी
छलेत बहथ.रौरी मे हब कोगनी रौजरी..कुँ..तामस छटि गेल
बहथि..दूदा गाबि नहि रँहलेनहि दूह सँ.आथि तीज गेलहि.

गमडा नय मुह-आथि पोछय नगलाह. रँकवी मेमिया

उठल.रूमेनहि जेना मनकाओ रौमि बहन हो. कहेत होगथिन्ह
-"समय होत रँगराय"



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

ई बाबुआब अणु मतिर ggaj_endra@videha.com पब
पठाउ ।



सुजीत कुमार सा

साधना

साँसक सात रोजि गेन डन । साधना एखनधरि बहि आँखन
डगीह । लहा रबसांगव उदाम रौमन ममीके प्रतीक्षा क
बहन डन ।
जीतेन्द्र प्रसाद भितव कगमे दर्दसँ गवेशीन डनाह । यद्यपि
दर्द आँग किछ कम डन दूदा, ओ भितवकँ कछमछीसँ तनारमे
डनाह । साँसक चरि रँजे चर पिनाक रौदसँ ओ आ लहा
साधनाक प्रतीक्षाक बहन बहेथि । चरि रँजे पकज रौद रँन
थेनऽ चरि गेन डन । बीना मछीसँ जेठ कबऽ गेन डन ।
बहि गेन डना जीतेन्द्र प्रसाद आ लहा ।
साधना बोले जनगणकऽ कऽ घबसँ निकलन डगीह, आ कहिकऽ
जे रँवियाधरि चरि आँखँ । रँत बस काज अछि कहि गेन
डगीह, कण्ड । रँचरौक अछि, मिश्रीजीके घब जेठ कबरौक जेन
जएरौक अछि, महिना नमरमे अस्तुर्विष्ट्रीय महिना दिसक
कार्यक्रममे जएरौक अछि आ रँजाकसँ दोकसक जेन मगल
किशराक अछि, रँवियाधरि आँखि जएँ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बरन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जीतेन्द्र प्रसाद मोटि बहन डलेहि, 'की भऽ बहन अछि ?
साधना हवदा घबसँ रौतव बहऽ नागन छथि । की भऽ गेन
ढेहि हूँका ?' गता नहि कण्डा क रागाव आ दोकानकँ की
भऽगेन अछि ? कि ए आरथकता अछि साधनाकँ एतेक काज
ऊँचरौक ?' ओ मोटेट जा बहन डलाह, एथन तऽ आँजुक
दरौग सेहो रँजावसँ लेरौक अछि । पंकज सेहो थनकऽ
नहि आन अछि । नहि जानि की भऽगेन अछि एहि घबकँ
?'

लहाकँ रँजाकऽ ओ अगना नग रँसा लेलेहि । जीतेन्द्र
प्रसाद आ लहा दुनु उदास बहेथि । प्रसंग रँदलेत जीतेन्द्र
लहाकँ छह रँगएरौक लेन कहलेहि । रँमन डलेहि जे टनी
सगाथु भऽ गेलो हूँदा, ककरो अरौक पनथेत नहि छै, तखन
लहा गेलो कहनक जे 'घबसे छहगती नहि अछि ।'

जीतेन्द्र प्रसाद लहाक रौत सुनलेहि । फण भविके लेन ओ
किछु रिचलित भऽगेन आ हब युथमे तकर नगनाह ।

जीतेन्द्र प्रसादक मोष रिदाहकऽ ऊँच, 'की एहना कतहुँ घब
लेलेह, जतऽ कोनो सामर्थ्यता नहि । एकवा तऽ लेलेन
सेहो नहि कहन जा सकैह, की रिगाव हएँ कोनो अगवध अछि
? ओ जानि रँमिकऽ तऽ रिगाव नहि पडन छथि । डाकठव
तऽ कहैत अछि रँहुत रँसी काज कएनासँ रँहुत थकारठ आरि
गेन अछि, मेवीवकँ आवास तथा मन्त्रिकँ मोक्षिक आरथकता
अछि । हूँदा कलँ अछि मोक्षि ?' ओ मोटेट बहनाह,
मोटेटे बहना ।

पंकज आरि गेन । बीना सेहो आरि गेन । जीतेन्द्र
प्रसाद सब किछु देखेत बहनाह, हूँका किछु रँजरे, नहि रँजरे
रँवारैले डन । एहि घबक सब सदन्य पूर्ण स्वतन्त्र डन ।
बीना भागस घबकँ एक सर्रेफण कएनक, हब पंकजसँ किछु
कहनक, पंकज रँजावसँ किछु सगाष अगनक । भोजन रँगन
। बाति आरुसँ उगव रँजि बहन डन, दोकान रँदकऽ कऽ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दीपक सेहो छल आधन छल । बीणा दीपककेँ रँजव गठाक
जीतेन्द्र प्रसादक लेन दरौग मगरौवनक ।
वातिक दमो रौजि गेल अछि । लला मृति बहन अछि । बीणा
आ पंकज अगला कमरे किछ गठि बहन छल । जीतेन्द्र
प्रसाद उछाएनएव गडन गडन किछ मोटि बहन बहेथि एकटा
रात छोटिकर दोसब, दोसब छोटि कर तेसब ।
साधनाकेँ केओ कृष्णसँ छोटि गेलोहि । कृष्णक आराज
मृगिकर बीणा आ पंकज रौलव आधन । साधना अगिरे जीतेन्द्र
प्रसादकेँ कमरे छल अलीह तथा रँगनमे मृति बहनीह । बीणा
आ पंकज ठरुआधन सब किछ देव ठाठ बहन आ टुंगटांग घुमि
गेल ।
जीतेन्द्र प्रसाद देखिते बहनाह, खेब रात चमकौक हिमारेसँ
रँजनाह, 'कहाँ छलहुँ एखनधरि, घबरे नहि छानगती, नहि टिगी,
नहि टाँव, नहि दरौग । रँगनमे आधर कहल छलहुँ ?
हँ, रुदा कि कहुँ महिना नमर छल गेलहुँ प्रीति पकडिकर
नगेल । ओत नमरा भेट गेल । अन्तर्बिहीन महिना
दिरमक रँगव छल मलाक्याक घबराव । निम आगि बहन अछि
। मृति बह ?'
'किए, की रात अछि ? आथि अहाँक नाम रँगनागत अछि ।'
हँ, कमि मरि न लेल छी, लेडिज ड्रिंक । ओतक नहि नलोत
ड्रिंक । नमरक आग रँगगाँठ छल । मधु दिससँ गार्सी छल ।
अगिला रँग लमले नम्रव अछि ।' साधना कहिते कहिते मृति
बहनीह ।
जीतेन्द्र प्रसाद सुनेत बहना आ मोटेत बहनाह, 'की भन गेल
अछि हिनका ? की भन गेल अछि एहि घबकेँ ? केमहव
जा बहन अछि साधना ? की हएत आगाँ ? नहि, आरँ एकव
अन्त कबहे गडत । कोणा छनत एना ?' हृणक हृदयक दर्द
रँटि गेल । ओ हाथसँ छातीकेँ दरौ कलेछ खेलेत बहनाह ।
कमरे रँग जलेत बहन, ओ मोटेत बहनाह

मानुषिंह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

କମ୍ପଡ଼ି କି ରାମାବ ! ଓହୋ ଏକଥା କଥେ ଥିଛି । ମାଧବୀ କହିତ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हुनीह, 'कण्ड १ रीटियाँ रिकाएत ।'

कतेक रीकएत कण्ड १ ? महिना नमरक अ दोसब उँ गहाव
हुन कि महिना नमरमे लोक कण्डे किनत दैनिक ? के
रूसाओत साधनाकेँ । जयनगव जाँड, सीतागरी जाँड, कण्ड १
नाँड, प्रदर्शनी नगाँड तथन जाकऽ थोकमे कण्ड १ रिकागत
अछि । की भऽ गेल अछि हमर जीविकेँ ? सामने
अहिमसँ आँ तऽ नृग टाह रैनाँ । दीपककेँ की गडन अछि
? आँग हमरा घबसे अछि, काहि दोसब घबसे छल जखत
।

पेसा कतऽ रैतेत अछि ? हमर तनरै अछि, दोकानकेँ पेसा
अछि ह्मन एकठो छोटको रीगावीमे कर्जा लेबाक अरुआ छल
आएन । लोक ओतरे अछि । गहल पकज अछि । पहिल
नमामे प्रथम कबेत हुन । शिक्षककेँ प्रिय हुन । आरै हेल
होरै नमन अछि । कतेक उँदाम बहेत अछि गता नहि
ककवा सतकेँ सड़ी रैना लेल अछि ?

'की भऽ गेल अछि एहि दशे रर्यमे,' जीतेन्द्र प्रसाद मोटेत
बहनाह, रैगु जखिते बहन । ओ कबोछ हेलेत बहनाह ह्मन,
साधना सिफिक्रिब सुतन बहनीह ।

भोवमे साधना दीपककेँ रैजाव गठाकऽ घबक लेल समान
मगरैओलेहि । घबकेँ ठीक कएलेहि । लहा, बीना, पकज सत
साधनाक आगाँ कतेको समझा नृनओनक । साधना किछ देव
नृलेत बहनीह, किछ कानक रौद ओकवा सतकेँ किछ कहनीह
ह्मन, रौतक अस्तु लेल लहाक सिधोगन ।

'आथिब अहाँ कोन तमगी रैना बहन जी ? की भऽ गेल अछि
? अहाँ कतऽ अरैत जागत बहेत जी ? किछ देव घबोमे
बह्न आ रौदक देखेन भान कक,' जीतेन्द्र प्रसादकेँ तामन
रैतेत जावरन हुन ।

तऽ की कक ? अ सत काज रैदकऽ दिओ ? आरै जखन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैजावमे कण्ड १ रिकाए लागल अछि, दोकाण चन२ लागल अछि,
त२ की रैन्दक२ दिअ दोकाणकेँ ? यवमे रैसन बहरै त२
सभ काज ठप्प भ२ जअत ।

‘हुदा यवो त२ नहि छलैत अछि । यवमे कम पैसा त२ नहि
अछि । यव चनएराक लेन रैछि तनरै भेटैत अछि । एहिमे
कम तनरै भेटैत हुन तहिया अ हाज नहि हुन । एतेक
मायि पीछै, एतेक सगड १ नहि लागत हुन ।’

‘हम त२ अहाँकेँ किछु कबहोके लेन नहि कहैत छी, हम स्वयं
क२ बहन छी । यव रौलव घुमि बहन छी । मुकमे त२ अहाँ
मदति कएल हुनहुँ, रैछा आरै त२ छेँ नहि बहि गेल अछि,
अगस काज स्वयं क२ सकैत अछि । यवमे एकछी लाकवो
अछि । की हम लाकवणी रैनिक२ बहू सभ दिन ?’

‘ओह, अहाँ गेलो त२ मोटु जे हम रिगार छी । उँठिक२ स्वयं
चलि फिब नहि सकैत छी । रैजावमे सगाव नहि आनि सकैत
छी । रैछाकेँ पठाग सेहो रैछियाँ नहि चलि बहन अछि ।
एहिमे रैछिक२ त२ पैसा नहि अछि । जखन हमरी सभ नहि
बहरै त२ की हएत पैसा न२ क२ ? नडका गुस्ता आरावा भ२
जअत त२ की हएत ? अहाँकेँ रैन्द कब२ गडत अ सभ
काबोराव । अ यव अछि कोलो रैजाव नहि, छेँ नहि ।
याद बाथ, यव अछि ।’

‘छाह जे त२ जाउँ, हम दोकाण रैन्द नग कवरै । कण्ड १
रागाव नहि रैन्द कवरै । छाह रैछाकेँ होम्मेनमे पठाउँ रा
यवमे गड १ । अहाँकेँ रैगावीएमे कतेक थरि भेल अछि,
किछु रूमन अछि अहाँकेँ ? यवक थरि कतेक रैछि गेल अछि,
किछु रूमन अछि अहाँकेँ ?’

‘जीतेन्द प्रसाद छूँ सभ गेल हुनाह, हम की देखु ? रैछा
होम्मेन जअत त२ थरि रैछत की छैत ? हमरा रिगावीमे
पैसा लागल त२ की हमर पैसा किछु नहि रैछन हुन ? अहाँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

की कहत छलित छी ? की मतनर अछि अहाँके ?
दुनूके सबक आराज रँछैत जा बहन छन । रातति आँ
मगड । क कप धाकाक जेल छन । तखन बीना छलक कप
नकक कममे पहुँचन । दुपारी ।
साधना छलक कप जीतेन्द्र व प्रसाद दिस रँढ । देवीह । किड
देवक मोष्टि । दुनू एक दोसबकेँ देखैत बहन रुदत किड नहि
राजत ।
साधना कपड । नकक राखकम छल गेलीह । जीतेन्द्र प्रसाद
दुपटाप गडन बहनाह । पाएव नग लला रँसत छन ।
एखनधरि पत्रिका नैहो छल अएन छन । मोष्ट अकबमे महिना
दिस मसएराक कार्यक्रम डगन छन । गेहबक लेडिज नगरमे
महिना रब मसएराक पूवा कार्यक्रम छन । साधना कार्यक्रमक
संयोजक छलीह ।
कनरेन राजि उठन । लला गेष्ट खोजनक ।
मन्नी अछि, लौरा ?
हँ, छैक । अगले के ?
'कहियौन्ह मिश्री जी आएन छथि ।'
मिश्रीजीक नाग सुनिते साधना जल्दी जल्दी राख कमस निकनलीह
।
लैली, एक कप छल गियरियौन्ह, कनी जल्दी ।
साधना कपडा रँदलि जेलीह । बीना छलक कप कममे बखनक
साधना नैहो मिश्री जी सँग छल गेलीह आ रँग उठा जेलीह
। 'हँ, त२ हम जा बहन छियौ । जल्दीए अएराक कोसिस
कवरौ । बीना, भोजन रँगलिहँ । कपेया अगवाबीमे छौ
।' जीतेन्द्र प्रसाद दुपटाप सुलेत बहनाह, साधना मिश्रीजीक
कुठेवगव रँसि रिदत भ२ गेलीह ।

बिन्दु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२

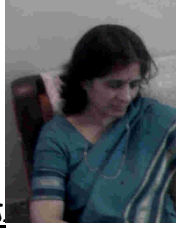


(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

এ বাচসপৰ খণ্ডৰ ফটো ggajendraa@videha.com পৰ
পঠাওঁ।

২. পঢ়



২.১.১

কামিনী কামাখ্যা- কামীক ঘৰ



২

ভোম্বা বৃক্ষ

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ३ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



३.२.१

बाबागण सा



जगदाश्व



सा३

रौचन ठाकुर-रमभोज



३.३.१

उमेश पासराण



किशोर कावीर



३.४

बाबुलाल साहू

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly Journal बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



इ.उ.स.

अनन्तरी एसाद मडव २
क्याव सा "अनो"



नवीन



इ.उ.

शिरक्याव सा 'एम्'



इ.उ.

डा. गेनिधव क्याव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ॐ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



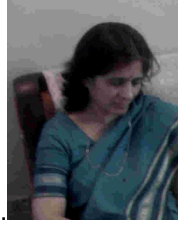
(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



३.५ टंडन कृपाव मा- गजल/ करिता/ हागकु



१. कालिनी कामायनी- कालीक घाट २
शुभल सुभल



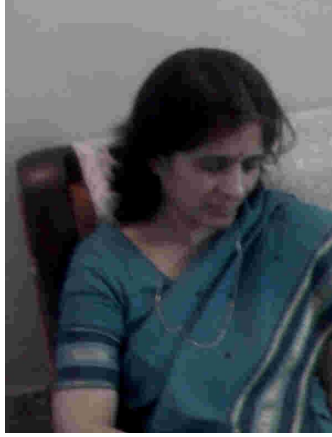
१



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA



कामिनी काश्यापनी

कशीक घाटे

बौरल ठी घाटे म
छयलैत बौरत
बुरैत . . . फूकैत
ऐठैत . . . डमकैत
मुयेत . . . ललैत
छनि बहल अछि नाह
मद्विम मद्विम . . .
डुंगरि
आकामि केव
अगल बौरागलि मै लल
कावी कछेव मेघ
डिठकौल सरैठा जङ्घा
बैलौल रैडका डौहवि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

देत

जेठक जेत तौद म
रैचरा के अमीवरौद
पानि कम छै
दुब दुब धरि सुखन कछाव
भगभगति. . . अमथा रौनक झव
पर्यारकाक अयोगतिक
पमावए छैत अछि थिम्मा
झुदा
हुनकव पठाउन हकाव
हुनक दवरौव
बहि सुनरौ आजू हम
केकरो आनक रिनाप
बहि देखरौ हम
मडिन के दुश्मति
पडा सरैक कुष्ट थमोष्ट
बृद्ध आ नगव रबु. . . प
रिभसे बस क लेपन
रा छद्म दिस पमवन
कुडा कचरा के मायाजा
थमत त अरम्भ लाव हमर आग
झुदा रिश्नाथे के मडिन मे जाए
दीरोदाम क बाजा मे
उघड के त्रिशूण प रसन
जे धाम
रएह त हमर कशी
हमर प्राण
रएह
त हमर स्रग्वक टिब प्रतीकित



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

गाथा । ।

2सावनाथक संत

तपस्वी

अरुव एकति मे

प्रपति सुमरि के कण नारण निहारी

एतेक अंगुलि पाणि

कतेक आर्षद भेठन

अगलक दूध मंडन म तगत होरि बहन अछि

मनषि छी ध्यानमग्न

अगल पाँट शिखर संग

गाढक नीचा तीतेत

अरिचन .. . कान रा योमगक प्रहार म

रिजय रा पवाजयक आस म गृथक

एकमवि गढेत अगला म

रैठेत जा बहन छी सिद्धि .. .

सहस्री रैवथ पहिल देन ओ प्ररचन

अवगुजित भ बहन अछि

शेखनाद रैनि

मह मह करैत अछि

रातारवनी टाककात

अगलक दैहिक सुरास म

ओहि दिन म रिनमान समान

.. . टकित .. . दित

सोथा बहन अछि

अष्टांगी माझक चरम दुंदुष्ट

समेष्टल अगल रौबिया रिस्तवा

लल हाथ मे.

छडी कमाउन .. .



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ओहि चिबतन रौठ के रौठेली
जेकर पाथेय मात्र मर डै
जीवनक कष्टम मर । ।

२.



श्रीमान स्वामी

तखल जियरै मोन सँ

मगस के सँग मे डेग रौठ री तखल जियरै मोन सँ
किछु डुंगव सँ बोज कमारै तखल जियरै मोन सँ

काका, काकी, पिमा, पिसी बिस्ता भेल धुवान यो
कहूना कहूना दुब तगारी तखल जियरै मोन सँ

मठिया गेला रूठ लोक मरै कहूना रातक मोन की
कहूना करका पाठ पठ री तखल जियरै मोन सँ

मानसुब अप्पन कनिया, रौठा एतरेँ छी पब धान दिय
रौकी मरै सँ पिछु छोड़ री तखल जियरै मोन सँ



मातृ-पिता के च्या ठूठन कपड़ । ड्य सेलो फाँटन
कनिया नय नित मोन गठ ।री तखल ज़ीयर मोन सँ

पिड्डन लोक रँमन गिथिना मे धिया-पुता सँ कहियो
अंगरेजी मे बीति मिथारी तखल ज़ीयर मोन सँ

सुमन दहेजक निन्दा कहियो रँम रँटी रियाह मे
रँटी रँव मे खूँ गलारी तखल ज़ीयर मोन सँ

आँखि के लाव सँ

भेठेय डै फल अणन कर्मक ज़खन माणय डी
फूँटन नमीर तखल कहिकय कियो काणय डी

खेनहूँ नय नीक-निकत कहियो ककब दोष कछ
थाय डी कुँठि केँ ओतरेँ नित वृष्टि आणय डी

बहन डी मान कतेक संगे आरौ टिन्ह नयन
रूमिकय थाँ कियो हमरा नित गताणय डी

लोक मे पाणि भन बहन कम आँव दूनिया मे
आँखि के लाव सँ नित आँठा हमहूँ साणय डी

नगन डी लोख प्रशिसा मे जिनका ठाँका डै
हूँक खवार डूवय नीयत ज़खन ज़ाणय डी

बूँठ केँ त्रान रिसवि कहनहूँ रौन भन गेना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

मोण सँ मोटि कइ हूँका के गदगद डी

छुँन प्रतिभा सुम जखन तखन छरै छैन
कक प्रीति खरै मँ किछु ठाँव डी

जतरैय अछि ठाँव कवय डी

कतक सुन्दर रात कवय डी
पाछाँ सँ आघात कवय डी

जखनहि स्मृति सधन जिनका सँ
तखनहि हूँका कात कवय डी

मगल देख बहन डी प्रीति:
मगल । हम रौनत कवय डी

ठाँका सरैठाँ गेल दहेजे
डीह रौति रैग्यात कवय डी

कनिका दुख नहि सुम छदय मे
जतरैय अछि ठाँव कवय डी
खरै मोण सँ सतक सुम डी

कनिये कनिये लोख निथय डी
छाँव एखन, माहिँ निथय डी

भाँवी भवकम रात निथय नहि
घर-आँगन केँ रात कहय डी



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

रौमी रञ्जा, कम छै श्रोता
करिता सँ सम्राट कवय छी

करियो नहि मन-दर्शन देखन
रौहव दर्शन लोख देखय छी

छी असंगव छे तार तीड मे
रौमिकर पाणी संग रहय छी

एहि जौरण मे दुख ककवा नहि
दुख मे नित मजबूत बहय छी

कियो सुन के सल सुनन नहि
थुरै मोन सँ सतक सुनय छी

ए बचनगव अंगन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA



१. नावायनी सा २. जगदीश सा ३.



लौकिक- करिता- रसभोज

१



नावायनी सा

कृष्ण संश्रम

करिता-

कर्ता उजले, पौजाया उजले । कल्पव गमडा उजले दनाल-
दनाल झतथि अगरे गग । कवथि रादा हुनकासँ नप्पवक-गग
दोग-दोग सभ लना मालीत दुहिम गर्छ
बाँछेमे ले नलीत डेक कोला थर्छ ।
की ले रुथिया काका, की हेते हात रुगी रौतन की कबते



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एहूँले कमान । अहूँ सुनलै, तहूँ सुनलक एकव जर्जब तान
देखलक ।

अनाज, किवामन, गदिवा आराम

जकब भेटैतैक बाखन रिसराम । अ गग मावि फुटैकरीक डै
कोला की कवरौक डै । समाजक मेरा पवम मेरा दिन-दिन
भेटैतैक एकव मेरा । फुर्ता उजले, पौजामा उजले काह
पवक गमछा उजले । ।

२



जगदानन्द मा

गजब-१

हाथी दाँत थे कै आव, देखाँलै कए डै आव
लता कै कहैक तँ रात आव कलै कए डै आव

केनक भोज जे ले दाँत रँड सुडके, अ जग-जालीव
भोजक रात आवो डैक, रात किलै कए डै आव

दोसब कै फुटैत मै ठाँग, सरँ कीयो अडाँलै डैक
फाँटैत अगल सारँजनीक देखाँलै कए डै आव

साम्ब कै मजा रँहते होग डै, अगल रूमन सरँ नीक
कनियाँ सन्न साम्ब मै मजा तँ बहै कए डै आव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ताँगा धर कए गौबरँ तँ गौबरँ रँताहे डैक
आ सँभत-गौबरँ राँग जँ कमेलै कए डै आव

(दीर्घ, दीर्घ, दीर्घ, ह्रस्व SSSI, चाँचि-चाँचि रँव सत पाँति सँ)

गद्य -२

रँथी नहि लोग दुँखा सँ, कहूँ रँथी नाँवरँ कतए सँ
जँ दीग सँ राँती नहि तँ, कहूँ दीग जगँवरँ कतए सँ

आँरँ दियो जग सँ रँथी के, के कहे ओ प्रतिभा, गँद्रा लोग
झूँ-हवा कवरँ तँ कँपना, सुनीता पाँवरँ कतए सँ

माँह-मँह, राँमेनके ममाता, रँथी छोरि केँ दोसब दैत
रिँग रँथी रव केँ कनियाँ कहूँ कोणा नाँवरँ कतए सँ

धवती रिँग उँगजा कतए, घब रिँग कतए घवावी
रिँग रँथी सगला सँ, नर सँसार रँसाँवरँ कतए सँ

हमब कनियाँ, माँ राँरी हमब किनको रँथीए डुधि
रिँग रँथी एहि दुँखा सँ, मँह हम आँवरँ कतए सँ

(सबन राँरिक रँहब, रँ-२५)

गद्य-३

आँगा कालि तँ बाँजनीतिक बाँजाव रँहूत गर्म अँछि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

देखु लता सभलक तान रँगन रँडु रँगन अछि

टाँगन छिका नगा कऽ ओ रँगन रँडका-रँडका भुञ्ज
नहि पँडु एहि सँभाव मै केल कतेक कर्म अछि

जए अछि कर्मयोछा धीव रीव, ओ रँडेत नहि अछि
दृष्टा तऽ करैत सदिखन अगन-अगन कर्म अछि

तेय्याबी आ सञ्चारना ग तँ सरँसँ रँडका थोरा अछि
जे नडाँए एक दोसर सँ ओ नहि कोला धर्म अछि

हम छी मैथिल, आ नहि कोला आन हमर धर्म अछि
सगला मै एकबा लागि, सरँसँ रँडका अर्ध अछि

(सबन राँसिक रँहव, रँ-२०)

गद्य - ४

नवनीया तँकैए हमर घबार्डी पव
रँसलौ पवदेमि मै हम थोरौडी पव

दुध-दही पाष मथान सरँ छोवि एलौ
छी पोष्ट पोसल तऽ दु-दुक स्वर्गी पव

जे किछु कमेलौ हाथ-पएव तोरि कय
सँम पलैत खट भेल छुछे तारी पव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैछेजौ रैथं भवि प्छे काति-काति कय
गमेजौ गाम जे-आरक सरावी पव

जोक दोसबक आमा अपन रैसाहु यौ
घुवि आहु मल्ल मोनमल्ल घवाडी पव

(सबन राप्तिक रैहव, रप्-१३.)

गजब-३

कित्तु-कित्तु मै जिनगी रिताले जेन मजबूब डी
माछे पानि छोवि अपन, किएक एतेक दुब डी

आरै जे-जे घुवि-घुवि अपन-अपन घव
घव मै रोछी ले, बखल माछ-भात भवपुव डी

तिमल-तबकावी रोट-रोट कक ले गुजवा यौ
घुवि आहु अपन गाम, एतका अहाँ हजुव डी

पवदेशे मै रैनि कतेक दिन बहर पवरा
अपन घव आहु, एतए के अहाँ तऽ गकव डी

अपन लोकक मल-मल मै मल्ल अहाँ रैस्यौ
पवक ह्वावि पव रैसन किएक मजदुव डी

(सबन राप्तिक रैहव, रप्-१४.)

गजब-३



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कित्तु-कित्तु मै जिमगी रितारै जेन मजबूब डी
माष्टि पानि छोरि अगन, किएक एतेक दूर डी

आरै जाए जाउ घुबि-घुबि अगन-अगन घब
घब मै रोटी ले, बखल माड-भात भवगुब डी

तिम-तबकारी रौट-रौट कक ले गुजवा यौ
घुबि आहु अगन गाम एतका अहाँ हजुव डी

पवदेशे मै रैनि कतेक दिन बहरै पवरा
अगन घब आहु, एतए के अहाँ तऽ गकव डी

अगन लोकक मन-मन मै मग्न अहाँ रैसुयो
पवक द्वावि पव रैसन किएक मजदूर डी

गजब - १

कवेजा मै अहाँक डूरी रैसन, मोन हमर हँसैत नहि अछि
अहाँके म्हर मागव मै नहेजौ, एकव पानि घँसैत नहि अछि

सुते-जातीत ध्यान अहीक केल, हम सदिखन कमल बहै डी
अहाँके अछि सुनव काया कतेक, कतौ मन हँसैत नहि अछि

सगव संसार देनहुँ लागि हम, केल रक्वा डी आरै अही के
अहाँके संग छोरि कतौ, मिसीयो भवि उमास अरैत नहि अछि

अहीके नाम निखन अछि, मग्न कए एक-एक धवकन पव
गुडुले हमर तान अहाँ, रिग्न अहाँ जिरैत कँसैत नहि अछि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

(वर्ष-२४, रैहवे-रजज)

गजव-१

अहाँ कथला तँ रौं छै हमर घबक धवरौ
अहाँक हाथे ओहि दिन हम रबक धवरौ

मानी मेश्वर धुँकनी त्रुँगाव हमर सरौं
अहाँ रिग्न एकवा हम कोला सबक धवरौ

एही जिरैण मै मिलाहिया अहाँ बहि भैरौ
जिरैते जिरैत हम तँ रूँम् नबक धवरौ

अहाँ हमर जिरैणक पुर्णियाक गजोविया
अही हमर मोण मै गजोत भोवक धवरौ

अहाँ आर त हुँसीयो सँ आरियो घब जाड यौ
मय कथला त कनिको कोला सबक धवरौ

गजव-२

खुब देनथिन्ह ओ
मोहि जेनथिन्ह ओ

देख मोका नीक सँ
टाँति पैनथिन्ह ओ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

माय-रौंठी के देखू
हुं केनथिहूँ ओ

नीक-नीक साडी मे
होई केनथिहूँ ओ

गाम-गाम घुमी क
नाम केनथिहूँ ओ

गखव-१०

धूप-आवती हम कएनहूँ नहि
जग-तग कवरौ जगनहूँ नहि

सिद्धखन कर्तव्यक रौन उठौल
अहाँक ध्यान किछ धवनहूँ नहि

की होगत अछि माय-पुत्र के नाता
एथन तक हम जगनहूँ नहि

हम रिसवनहूँ अहाँ के लेकिन
अहूँ एथन तक देखनहूँ नहि

आरौ हमरो ध्यान नियअ हे माता
मरु अहाँक हम पएनहूँ नहि

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

३



बैरव ठाकुर

कविता

रसभोज

सगव बाति रसभोज भ२ गेन

मिथिलाचन छोड़ि दिग्री चलि गेन ।

साहित् अगमान भ२ गेन,

कथा गोष्ठीक किन्नी२ तोड़ि देन ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हस्तिक गराही स्वप्न देन

दू पङ्क्ति क२ जगन गेन ।

जगनमे मगन भेन ।

हिम्नदावक हिम्ना कष्ट गेन ।

जे भेन से नीके भेन,

जेना बयाफा महाभावत भेन ।

बुद्धिमे रियाफा भ२ गेन,

कएन-धाएन पानिमे छति गेन ।

এ বচনগৰ আপন মতৰ ggajendra@videha.com পৰ
পঠাও ।



১. উমেশ পাসৱান ২.



কিশোর কাবীৰ

১.



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA



उमेश पासराणक पद-

मनक रिसरास

भेन अछा बि नगन जेना सभ निपता रैन पढौ चमन हरा
छुटन पता छन्द रा। हन मननक आनि दोड़-दोड़
भेन ले ठौव कथला सफलता कथला असफलताक डव दृढ
मनक अछि रिसरास जिरनमे आनि जेन मनक रिसरास देखि
बहन डी स्वयं पथ उमोहनक बथ एक दिन जकब पुरा हेलत
मनक मलावथ ए जेन पीरए परैए कोना घटक पाणि किएक ले
उगडए पडए खता भेन अछा बि नगन जेना सभ निपता ।

केहेन रिषा ।

निखनि रिषाता कनजुगमे मेठी बहन मानरता अप्पगन-अप्प न
हितक जेन गाबि क२ बहन अछि पलापकावक ले अता-पता
केहेन रिषा निखनि रिषाता आरि एिक भ२ बहन अछि मयथ
चरित्र निपता मेरास सभ निबनित माता-पिता केहेन रिषा
निखनि रिषाता नित दिन मयथ-मयथ कले हवाक केकवा दोध
दी जेहेन थक तेहेन चरिया असनी-नकनीमे अस्तुगव की माष्टिक
करत रैन अछि

भाग्य रिषाता ।

अगलके की कले

समाजक अगला कले कि हाथेहाथक आहमव कले कि पत्रकाव
करि कले कि बचकाव अहमव कले कि रोजगाव अतिभारक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

कही कि दोकानदार पठे छी बोज अगलक निखन समाचार खुनि
जागए हमर बुद्धिक सब द्वाब ठक-ठकी नगेल बहे छी पठराक
जेन हिन्दुनताक समाचार सरहक मसकेँ भारे अगलक
रौरहा डले अछि घुसथोर कमी तेन भ्रष्टाचार सदिकथन अछि
छुमि अहाँ सफलताक निखन-पहाड़ कोन नाम केव सगुनि धन कबी
अगलक जेन अचबजमे पड़न अछि करि टोकीदार ।

हुमि-हस्तिका

हे आरि बुद्धि रौं दम थम देखै छैन छैन टोकीदार-दरदरकर
आरि बहन अछि ओ सब कियो आरि दिने निमित्त कमावकेँ घुस
नगए तब-तब निर्देशकेँ भितर दोषकेँ रहर कसिकेँ न
कह लगान त कहियो घबराव खानी हुमि हस्तिका हे आरि बुद्धि
आरि बहन अछि ओ सब कियो डिग्री कम-सम खानी दुष्टी मोन
जे गवामत गुनीनकेँ त गगा देत गुनिस नागलमे डिग्री कि
बुद्धि छिं द्रुता व-द्रुती, दुनु पाठिस
कले कसहुनकी थानकेँ जोडा दे छिं जे.पी राबू आव.आव
निहण हे आरि बुद्धियो ।

हकिकत

आरि रैन डिग्री गायर अते हकिकत अछि जेव चले
नरैड 1-ट्टा क जे मल्ले द 2 दियो ले देर त जाणव
मोशिरत अछि लोक रैन अछि रहुकिया
वग तेवम केकवा छिंर मोसकिन अछि एतए मल्लक कसमे
मोतल छिण अछि के की छी ले किलको माथणव निखन बहे
आग मानरतकेँ क बहन अछि कर्कित जे अप्पतन सार्थ
भारमे दुमन अछि मल्ल तन पारि क
प्रभुक भजन जोडा क
अहित काममे नागन अछि आरि रैन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

डिजिटल गायन एतेक हकिगत अछि ।

पारण भूमि

बिहावक पारण भूमिमे सदा रैहैत अछि गंगा, कोसी कमाना रैना
एकव निर्माण जन्म सिखबन अछि एतका खेत ओ खरिना
रिफ्रेशिना रिफ्रेशिना रूख स्तुत गिनिना पेष्टिग अतितक अछि
स्वाभिमान महा करि रियापति आर्यभट्ट, आयाटी मंडन जतए छथि
महा एतए अतिथि प्रजन जागत अछि मतकेँ हागत अछि
सकोव स्वागतमे बैठैए पान-मथान भाया मयू ति मदिथन
सतकेँ मममोहन अछि कना मयू ति केँ अलग-गहिटा एतए
श्रीराम आन छथि रणक मेहमान एतए हम कन रिसनौ जे कहि
छोन महारि रूख भगवान अगन माँ पाँसि जूझन छी हम
अग्नौ केँ जगै छी गजे छी श्री राम
छुटि, जद ममरौ छी एक मग गिनि क
हिन्दू ओव हसनमान देशे हमर हिन्दुस्तान बिहावक पारण भूमि
सदा रैहैत अछि गंगा कोसी कमाना रैना ।

एना ले कब

रौशनी लौ एना ले कब स्रन हमर रात किदु मोटी जखन म
बहै गितन सुख-दुख बाखी क मोनमे रिसरि क सत
रात रितन रौशनी लौ एना ले कब स्रन हमर रात अरौव तक
ले बह सुतन बोले छुटि क कब माँ-राबूकेँ प्रणाम तकबरौद
धूम-धिर ठहन म बहतौ टहन रौशनी लौ एना ले कब स्रन
हमर रात अग्नौ जेष्ठरौ किछ सिथी ले रात कबी बहन
खेली-फदी पढ़ी-लिखी कबी सरहक कहन रौशनी लौ एना ले
कब स्रन हमर रात ।

सुतला मोछ

मित दिन हागा नर-नर छैना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मन हम हवा गेलो ।

गावन हृदय

शेनिशमे गावन हृदय छुटपछा बहन अछि भितवसँ अ १०वी
अप्प न उठा बहन अछि कहलैत श्रवमे राजन आबूक मल्लख
अस्तिमल्ल कि अछि मानवताक गुण रिश्यास पवसअबरा सत किछ
रिसवि गेल अछि आग मल्लखक दुखरन मल्लख रैनन अछि सत
लौत-लौत मोह-माया केव जानमे ओमवा गेल अछि गावन
हृदयक प्रेमसँ हमर हृदय कापि गेलि एकव उतव हमरा नग ले
डन अनायास हमरो हृदय निकलि गेल आबूक मल्लख अस्तित्वक
कि बहि गेल ।

२



रिशन कारीगर

अगिला एक मे छगत

(होश करिता)

बचसा भेटैन अहाँ के

हृदय अगिला एक मे छगत

रौसी होल हल कवर त



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

सामाजिक आन्दोलन का ज्वार ।

अहाँ के निखन कहाँ होगए
तयगा हमरा अहाँ तंग करैत छी
हमरा त निथैत निथैत आँखि टोहबाएन
अहाँक बचन हम सुबीय कहाँ देखैत छी ।

बचन कोना क सुबीय हेतैस मेहो त
हविडा के अहाँ किएक नहि कहैत छी
हम बचन पब बचन पठैत छी
रूदा अहाँ त कोना प्रवृत्त हो दैत छी ।

हम त कहलहुँ अहाँ के निखन ल होगए
नरसिंहुआ के ल निखन तंग अछि
कोना पत्रिका मे त छैलै जेएत
गहए छी एकछा भ्रम अछि ।

छा भ्रम नहि सटाछा थिक
नरसिंहुआ एक दिन नीक निखत
नहि दुगरीक अछि त नहि डागु
निखनार के कतेक दिन के बोकत ।

सगादक छी हम अहाँ की कए जेँ
मोह हेत त नहि त लै डागर
रैनी रौजरी त कहि दैत छी
अहाँ के कनि दिन ओव छैकाएँ ।

बचन बुकाँ आ की हमरा छैकाँ
आँखि तलेक अहाँ खुम थिमियाँ
काबीर ल अछि डरैए रना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

किएक ल अहाँ पढेती रैसाड ।

हे यौ रबीय बढाकाव महोदय
पहिले अहूँ त भरमिथुन बनी
आ कि एकर आध ठाँ बढा लिखी
समाकालीन सरलश्रेणी रैनि गेल बनी ।

सट गगन सृनि अहाँ के तामस उठत
तहि दुखाले किड ल कहँ करिता हम लिखँ
आग्रिसन भेटैत गेल त आर की
उ त अगिला अक मे डगत ।

ई बढाकाव अगल मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाड ।



बाबुराम साहूक पद्य-

धनबागनी

मारणक बाति

गजोबिया जलैत पुवरी हरा दोसैत आसन नगोलै रैस अकाम
निहालैत मोटेत डल आनि नगोलै मारणक रूम कहिया खसत जे
भविष्य
धनबागनी हएत किड दुब नभमे रिजनी चमकैत ठगसागत



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

दस्तुजक दैत रौदन उमरि गेन धवतीगर रौंगक रौजा निवतव
रौजेत मिश्रवक सनकावस
धवती धमकारैत मेघक रविगती मज्जए नागन कारी काजव सन
मेघ उमरि पड़न रिजनी छिठकैत छिठकैत मेघक बाहु।।
देखरैत पसरि गेन टाककात घनघोब रैथी भेन डरवा-थता
भवि गेन खेत चानी सन चमैक गेन खेतक पामिस
धुव तछपेत उडलैत गच्छा-पेगी-पेगवा चान दैत रुदकैत
देख गामक रौदाद रौदक कुदि-कुदि माड पकड़ैत रिवाहन
गज्जव कदरौ हुआ नगन खेत हव जौतेत हवरौह रिबन
गारैत गामक माए-रैलिन धावक रौज उपावैत भुनन रिसवन
सोहव समाडन गारैत धनबोगनी करैत खेत
हवि कसै कहैत- “हवक नमि आ
खेतक दामन पेट भवरौक अछि सभकै आनि।”

महंगा

फाँटन पोती फाँटन अंगा पएवक झुता छुँटन फाँटन आँखि
छगाग दुर्बगा टोँकैत छलैत अछि रौठ गारात करैत जना
महंगा
महङाँत छनि दविभंगा रात-रातमे हंसारै दंगा सरान-झरारै
करैत अरुंगा जखेन भ२ जागत दंगा मोका पारि फलैत नंगा
रात-रातमे कहैत महंगा मस टंगा तँ कठौतीमे गंगा साँट
मुठक दोहरी अंगा एकवंगा पहिब रैलारै हंस मुठक खेतीमे
उगजारै रूँटी फाँटन जेरौमे वखनक मोती बाम-नाम कठनास
ले मिनत बोठी नीक काज क२ रैलारै कसैछी
जखन किररै माँछ-मोछ पोथी उवाक प्रकाश मिनत अलाखी
निकासक गंगा रैहत टोँकथी।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

कपेश्वर देवी

कपेश्वर देवीगव कलेए खेन दुनियाँके नचलेए छैन-छैन
कपेश्वर मानदमे रैनन अछि पागन दानर रैन मानरगव कलेत
बाज सुथक त्रुथ छिऐलेए कपेश्वर दीन दुथियाक तौलेए
कपेश्वर मयवथक छानि छोडि छलेए
नाच कलेए थंजल छिँ सन सुथक छारमे भठकि गेन बाह
सोमबसमे समाए गेन मन रिटाव नंगा नाच कलेए कपेश्वर
देवीगव जेहिमे होमि उँछि गेन नचलेयाकेँ जखन कपेश्वर
देवी अत भ२ गेन जिनगीक दु किनारा रीच सिमाए गेन दुथक
धावमे रहि गेन कपेश्वर देवी जहिना मयथ झुँठी रैन
जन्ममे हाथ पसारि समावसँ छनि जागए कपेश्वर देवी उँछिना
बहि जागए ।

आम रसभु

आम रसभु भागन जाड

हुनसँ सजन धवती दुनलिन समाज हुनक सुगन्धर छट्ट आसमान
आम मजबुन महुआ पमबन तौवा कवए गुणगुण सेवसौँ रौजए
मिहनाग समाज रसभु रंगमे रंगएन सभ एक समाज छोन, मज्जीवा,
ठाक, डहनी रँजलेत गरैत हाथनक गान रंग अरीवमे नहएन
समाज भेद-भार छिँ गेन सभ नलेए एक समाज आमक गाढगव
कोठनी रँजैत सभकेँ दैत प्रेमक रवदान धवती रैनन सुवसा
समाज आम रसभु भागन जाड ।

अपना-पवाया

अपना जेन सभ मरी छै पवाया जेन ली कोठ जे पवायाकेँ
अपना न रूने छै तँ जग सुन्दर व होग अपनागन तँ अपना न



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

होगा है पचाया किअए होगा है सत धवतीपव जलम नग है
एकूठाम ज़िरे-मारे है जाति भेदक अतव किअए होगा है
अपन कवम अगल करे है
दोसबके अहित किअए होगा है जखन मनुषिक जाति एक
होगा है सत तँ अल-पानि थाए-पीर ज़िरे है तखन रिचावमे
किअए अतुकव होगा है सरहक रिचाव जँ एकू हेते सत-
आला-रिवाला अप्पान हेते एकूवगा समाज रणते सरहक विकास
समकग हेते अप्प न-पचायक भेद मेठेते

जग सुन्दर रँगि जेते ।

राँठे राँठे

डेग-डेगव राँठमे मोड़ होगा है तैयो बाली राँठ चले है
तलिा जिनगीमे मोड़ होगा है राँठक मोड़ करोठ ले नग है
झुदा जिनगीक मोड़ करोठ नग है राँठपव राँठेही सत दिन
चले है जिनगीक मोड़ कठिन होगा है राँठक राँठेही रँदलेत
बहे है तलिा जिनगीयो रँदले है
जलिा राँठक दिना होगा है उलिा जिनगीक दिना मेहो होगा
है मली राँठ पकड़ा राँठेही
अप्परन-मजिन पँहटे है गनत राँठ पकड़ा राँठेही भठकि-
भठकि चलि थके है राँठक ओव-डोड़ ले होगा है राँठेही
चलेत थकि मले है झुदा मली राँठ चलेत राँठेही अप्प न
जिनगीक मस्रह पले है ।

हठक चाँदव राँठक पानि

हठक चाँदव राँठक पानि

रँगियाँ घबक तबजुकेँ

ले होगा है कोला मागल जामि-मानि होगा है हानि जिनगी

चले है उरँगि

उजवत रणमे हुन-हुड थिलेत-हुडेत केशा ठेनि-ठेनि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

जिन्गी चलोत केना फाँटन रम्तु ठुँठन घबमे जिन्गी बहे छै
अन्हावे-अन्हाकब सुखन जिन्गी केना पोषगत
पोषणि-पोषणि सुखि-सुखि जाए केना मिटर ले हवाए सत दिन
जिन्गी अन्तुबिये रित्तए गजोरिया कहियो ले देखाए सुख तन
उँजवन मन रन-रन भैले मृग समान हाँक चाँद राँते
रिनएन घाँक पानि घाँते सुखाएन रिन पानि ले पियाम रूमन ।
तन राँतेत चनु
निथेत पठेत बद्ध जिन्गीकेँ सज्जैत बद्ध निथन पठा
तनी रन निथि-निथि तन राँतेत चनु अपन तन अपन ले
दुनियाँमे राँतेत चनु निथेत-पठेत बद्ध तनक गीबन ले
राँतु खोनि-सज्जाम राँतेत बद्ध तनीक तनसँ दुनियाँ सजे छै
आतनी रिनानि करै छै जोत-मोह-माया-झोडा
दुनियाँकेँ सज्जैत चनु तन राँतसँ थर ले होग छै निवतव
तन रँतत बहे छै तनसँ अतिमान मेठाग छै मान-सम्मान
सत दिन भैले छै तनक काज बाजा-बँककेँ पड़ छै रिन
तन दुनियाँ ले चले छै तन राँतेत चनु.... ।

प्रेम आकि पैंसा

अन्हाँकेँ की चाली ? प्रेम-

प्रेम आकि पैंसा प्रेमसँ सुख-गीति भैलेत

दुख हवत कन्याक कवत रिनवन काज अमान कवत दिनक
दबद अमान कवत एकताक पहिचान रनत यनि रँतत गज्जत
भैलेत रिनिक कन्या क कवत । पैंसा-

पैट हँसाएत

प्रेमसँ दूब बाखत दुखक पेटैवी निवगन नादत

डूँट-नीटक भेद रँत एत धर्म-गमान मेठाएत अपन रँतसँ
गवीरगव अवरैदाव रँत एत धाक जमाएत जेनि रँत एत नीन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बरन्दा ISSN 2229-547X

VIDEHA

उड़ एत दुनियाँमे अर्शाति रँठ एत अहाँकेँ की चली ।

कानक पहवा

कानक पहवा चहुँव पड़ैए टटन टित मन छेव रँगन अछि
किना रीट दुआरिगव पहवा पड़ैए नगर मेहरमे छिटोवा पड़ैए
बाजा रँसम सिंगरामन छोलैए प्रजा सुतन नील थिटेए तली रीट
छेव छेवी करैए कानक पहवा चहुँव पड़ैए ।

आह व बाजा मेरक रँहव भुखन प्रजा होग छै अथीव मंत्री-
मन्त्री छेव रँगन अछि अधिकारी खजाना नुष्टैए
आहवव बाजा भुजा हँकैए

मन्त्री मनाग छैए भवन खजाना नुष्टै-नुष्टै नीत होली-दिराली
मनलैए देखि प्रजा भुखन सुतैए

कानक पहवा चहुँव पड़ैए । खजानाक मान रिदेस भेड़ैए
बक्क भक्क रँगन अछि निरन बाजा छेव सरन अछि जगतक
मह टोरैष्टियागव रिक्कैए सिंगरामन सँ सँन बाजा मोत-मोह-माया
रीट हँसि म

धुँकव-धुँकव तलैए खाली खजाना देखि बाजा मोगमे मोगएन
वहैए कानक पहवा चहुँव पड़ैए ।

पियामन मन

मनमन तन कवियाएन मन पियामन मन महसुआएन मन सुखन रन
उजवन उगरन तपि-तपि धवती जवन मन रिष मेघ तडमए
नगन कनेजा कापए त्रमकम मन कि हएत रँखी हरित मन लै
नोग ज्ञान ज्ञाहयौनि मन मन उदम देखि डोनए परन मेघकै
रँज्रैए सिहकि परन रातारका भेन मेघौन नवमव रँवमए
रँज्रै ठगठग सुखन धवती नवमाएन रन उगरन भेन हरिअव
कटन मुनि-मुनि नाछ मेघ रंग परन

रिजूवी चमकए डलै तन-मन पाथि थोनि नाछ मोव-मोवनी



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

संग सरहक तन-मन जुवाएन गियासन मन धवतीकेँ सुमाएन ।

दहेजक खेन

दहेज- रिश्राह रिगाड़त गच्छ । ति उताड़त तैयो लोक
कबैत अछि दहेजसँ मेन जखन दहेजक खेन शुक भेन रिश्राह
भेन गवमेन समाजमे भेन रैड़-रैड़ खेन रिश्राह सन परिय
रैधनकेँ रिगाड़त दानर दहेजक खेन रिश्राहक शुभ फलुर्तमे
दहेज दिखै अवचन-धोखा रिगाड़त समाजक नाता परिवार आ
समाजक

तोड़ि देत दिनक नाता आँउ हम सब गिनि दहेज दूज

समाजक निर्माण कक भेद-भार मेथी क२

रिश्राहक रैधन मजगुत कक । घब गवदेमे

कतेक दिन रौद एलौं हान-दान दुखद सुनलौं बाति-दिन दुख
किश्रए सनलौं घबमे बहिनौं धीबज देतौं सब गिनि दुख सहितौं
अधो बेथी खाए क२ ज़िरितौं गिया-श्रुता संगे बहिनौं अगल
समाजमे कमेतौं गवदेमे गवाया होग छै दुख-सुख कियो ले
रौंछै छै कपेया लेन दुखुर्म करै छै ले कपेया बुखे मरै छै
दूदा अगल समाजमे प्रेम होग छै पौट उधाव सेहो भेटै छै
अगल कि आलोकै

रिपण्डिमे मदति करै छै सब गच्छातसँ ज़िरै छै घब डोड़
गवदेमे किश्रए गमेलौं रान-रैछातकेँ रिगछेलौं विगिया महाजन
सेहो भेन कब-कहुँमेती सब डूँछै गेन एहेन कवम किश्रए
कवर जे गवदेमेमे खैर

काज ले देत मरितो गवदेमे आर एहेन काज ले कवर

ज़िरैले समाज सतसँ पेश समाजमे बहि ज़िखर मवर

गहूमक कछनी-दोली

अधबतियेमे नील छैछ

कछिमडाग सुतन गछन गहूमक कछनी माथगव चछन काछि-थोछि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

घब ले नएरै तँ भवि मान रौन-रौन
की खेत केना ज़िन्दगी खली मोहमे पड़न छलौ
एकएक मसमे हवाएन सभ मिया-पुताकेँ उठैलौ आँखि मिड़ैत
हँसबा लेलौ सभ मिति खेत पड़ैलौ गहुँक खेतक नसब
कित्ता सभ मिति काँटैत छलौ अकठैनी भेल दूदा टैतक रौद
झूठग पड़न आरि कि काँटै गहुँ रौदमे मूँसि गेलौ खाली
गहुँमे कठैरै मे केना बुख-पियाससँ रहए पसिना दूदा हिसा ति
हावि ज़ाएर केना सभ गहुँ काँटै खेत खसैलौ टैतक रौदमे
देह सबकेलौ घुमि घब एलौ सुसतेलौ भास-भात भेल
नलेलौ सभ मिति खेतौ आवाम केलौ पाणि पीर ज़ुझा रौनलौ
मिया-पुता सग खेत गेलौ गहुँक रौम राहिग-राहि
उँघि-उँघि ब्रैसब नग पड़ैलौ बाति भवि दौनी करैलौ गहुँक
दावा कोठीमे भवेलौ बुझैलौ तसकैवमे ठगियेलौ
दावि मासक गहुँक हसनि दिन-राति खष्टि क२ घब केलौ मान-
भवि लोठयो खा ज़िन्दगी तग टिन्ना-सँ दूब भेलौ ।

बिबाह की धिक ?

बिबाह की धिक दु आँखि मिनस कि दु बन्नि मेन कि दु देहक
सगम कि दु रंगिक गठरंधन कि स्त्रीक-पुरुषक प्रेम रंधन कि
मनख जातिक फ़मि: मुजलामेक सहन प्रयाससँ कि बिबाह
समाजक बीति-विराज बिबाह की धिक ?

आखि कि

समाजक रँदनन स्र कग ल ओ गाम ल ओ नगब ल पहिबका
ठाठ-राठ ओ पुवना विवासतमे भैठेन धवोहब भेल विनिष खाल-
पखल्लै त२ छुँछि गेल रौरी सयैक गाम-समाज पोथवि गलाव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

पवती-पवाँत सत किछु रँदनि गेन ले अछि कोन देथिरेया
समाजक धेग ठुँठ गेन रँडका दनाष रँडका परिवार ठुँठ क२
टकनाटुव भ२ गेन कतेको पड १०१ भेन तँ कतेको रिकामक
होड़मे गाम-घब जोड़ि छनि गेन समाजक मर्यादा पानिमे रँहि
गेन आजुक दिन ले बहन भाय-भैयाबीमे धेग सत अगण
बागक डहली अगण-अगण रँजरेथे रँदनेन समाजक सुनकपमे
अगण जिनगी रितरेथे खान-पान रँदनि गेन पानकी-महफा ठाव
नगन कठली गाड़ि रितनि भ२ गेन डहवा-रँसुली कठयोड़ १क
नाट आग समाजसँ उमरि गेन गामक पट्टेती गामेमे रँडका
दनाष रँस करे डन रँडका-छोठका सत गिनि दुध-पानि रँडरे
डन राय-रँकबीकेँ एकठाँय एकहि घष्ट नमारे डन आजुक दिन ०
बीति-बेराज
गामसँ उमरि गेन रँदनेन लोक रँदनेन समाज हित कम अहित
रेसी भेन आजुक दिन देखे डी ।

पुत्र अपुत्र

आशीर्वाद हम दग डलो अहाँ ले उचित समझ सकलो माए-
रागक अवगणकेँ अहाँ पुवा ले क२ सकलो पुत्र ले अपुत्र डी
अहाँ

खनदानक मर्यादा ले रँटा सकलो माए-रागक बीनकेँ अहाँ
जिनगीमे ले सठा सकलो स्रास सन सृजन घबकेँ अहाँ नंका जकाँ
जवा देलो भवत सन भउव भाएकेँ अहाँ अगण प्याव ले द२
सकलो देमेतउष डी अहाँ दूदा अगण घबकेँ जवाकेँ जवा देलो
जवन घब उँजवन परिवार समाजोकेँ अहाँ ठोकवा देलो आरँ
रँना मयेमे अहाँ केकवा की जराँ देरे दूह डगा अन्हावेमे
अहाँ आँखि लाव रँहेरे मस्रथ की मस्रथताकेँ जोड़ि
अनिक धन-सुख जेन अदानी जिनगी गमा देलो असन जिनगी
स्रास जोड़ि नवकक जिनगी अगणाए जेलो आशी रँहूत डन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

अहाँसँ सबकेँ निवास रैना देहो की उदेशे अछि अहाँक
हम सब ले जागि सकसो की नर कर एहो अहाँ की नर कर
जएँ सब अवसामकेँ अहाँ फलमे जबाए मेछी देहो अहाँपर
रहूत गरि हुन सबकेँ माछिमे गिना देहो पूव ले अग्रवक
बाँसँ दुनियाँमे जागन जएँ अहाँ धन पनी मित्र रहूत भेटैत
माए-रौप सहोदर भाँ जिनगीमे एकरेव भेटैत दुष्टन दिन
कहियो ले जूठन अग्रवक करक ले छुटत सब किछ बहिनो
जिनगीमे आशीर्वाद ले भेटैत ।

ए बचसपर अपन मतिर ggajendra@videha.com पर
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



१. खगदीने लसोद मडव २.



नरेश कुमार सा ' ' श्रीगो ' '

१.



खगदीने लसोद मडवक पद्य-

शुद्ध शब्द

))((

জে জলকক সঁতাল কহিয়ো প্রথি বৃত্তি কিসাশ ভুনাহ ।
 প্রথি কশেন কহি-কহি দিশ-বাতি মগড'ত ভুনাহ । তুমকম
 রীড়া বৌদীক ভাব সহি জীরণ-যাগণ কবৈত ভুনাহ । রেদ-
 ঝাখাশ মিত-প্রতিদিশ সোঁস-ভাবে বঠৈত ভুনাহ । গতি সম্য
 কেব রীচ-রীচ দোবস হরা ঔগক্য মগন । শর-খুবাশ রীচ-রীচ
 বঁগ-কগ রীদম্য মগন । বঁগ-কগ রীচ বঁগ ভেদ গনপি-গনপি
 গনগ্য মগন । মোহবি-মোহবি ঔট্ট-ঔট্ট ধন-গর্জন কব
 মগন । সাহোব-সাহোব মত্র জপি উকা-ঠলকা রীচ মগন ।
 মাশক মাশ সমাশ লিখএ সড়কি-সড়কি সড়ক্য মগন । কহবি-
 কহবি কনপি-কনপি ডাউব-আগি খম্য মগন । জেশা-জেশা



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

आमि माछि आएन मेडिम त्रिम घटेन नगन । घटेनी प्रबले पाछु
लेहान वीन-पेगट हँसए नगन । वीन्याक वीन करीन रँनि-रँनि
तरे-तरे घुमकए नगन । गहुँटसँ रौँति पकड़ि धोरिया खेन
खेनए नगन । दमक दाह सन्ता वि पारि ले मल-मलतब मथए
नगन । जे कहियो मिथि कहारै छी मेडि कहारै नगन ।
)((

हुमि गेन

हुमि गेन सत खेन खेनोना हुमि गेन सत मल-रिटाव ।
जोरन मग जिनगी पिछुछि समवि गेन गजोत-अन्हाडव ।
अन्हासरे उँगकि अन्हासरे । अन्हासरे केना अन्हासरे नगते ।
गजोत-अन्हासरे तेद रँनि रँनिमल वाति-दिन भजए नगले ।
जेकरे दिन तेकरे वाति वातियेक दिन कहारै नगले ।
दहिया-रागा वंग-मियाही नर-नर मेद, गदए नगले । जहिया
मियाह मियाही रँनि हविअव-नान कहारै नगले । कोवा कागज
हुँगव समवि हवि-जीत निथए नगले । हुँगव उँगा, उँगा हुँगव
खेन धोरिया खेनए नगले । घुमा-घुमा, नटा-नटा घाँट धाव
पठकए नगले । माछु-अन्हासरे रँनि-रँनि घुमा-घुमा हँसकए
नगले । गाछीक अन्हासरे पछुछि पकड़ि जूझि जोति थिछए
नगले । वंग-रिवंग जूझि रँनि-रँनि खेन-खेनोना कहारै
नगले । हुमि गेन सत खेन खेनोना
हवि-हवि मल तड़पए नगले ।

अन्हासरे । जिनगी

अन्हासरे । जिनगी सन्हासरे । रँनि-रँनि शुद्ध-अशुद्ध तेद विनीन
भेन । मेडि चढ़न जहिया शीमा नयन जाति रँदनि टनि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

गोन । आशि-आशि नजोला मसमे हन-हन रँदनि केना
गोन । ले रूमि सममि ले पोलो रौंछे-घाछे रँदनि छनि गोन ।
अथछ । जिनगी सथछ । रँनि-रँनि शुछ-अशुछ तेद रिनीन
तेन । जन तवन लोछी अछीजन शक्तिन म्नीन लोगत केना
गोन । शक्तिन म्नीन लोगत हरीगत अरगुन-गुन रँदनि केना
गोन । मनि मान समरि सामन खाली-खाली रँनि केना गोन ।
अथछ । जिनगी सथछ । रँनि-रँनि शुछ-अशुछ रीच रँदनि केना
गोन मानल देर ले तँ पाथर जुग-जुगम स्वलेत एलो । पाथर
रीच देर रिवाजए
पानि-हरा ब्रह्मकेत एलो । उँछि धवती-अकाम रीच उँछि -
उँछि उँछि आगत लोलो पूर्वी-पडुरी सन्तति पारि ले छिन्म-
पहच्छिन्म रिमलेत लोलो । अथछ । जिनगी सथछ । रँनि-रँनि
आशि-निबानि थथवागत पोलो ।

गीत-

जेहल शक्तिरक वंग बहे छै, पकिया वंग तेहल धर छै ।
जेहल शक्तिरक वंग बहे छै । जेहल पकिया वंग बहे छै, देर
मिब तेहल छर छै । जेहल शक्तिरक वंग बहे छै, पकिया
वंग तेहल छर छै । दुनियाँक उँवर जान रीच, मित्र-गुष्ट
रिज्जने तेछै छै अशुष्टक, गुष्ट । , जानमे सोमर ओमर
लोगत छलै छै जेहल शक्तिरक वंग बहे छै नीनाक तेहल
दृष्टि रलै छै ।

))((

गीत-

थेन थेनोला थेन थेनो छी मल-मल रंगरवि कछै छी । थेन
थेनोला थेन थेनो छी । एक थेनोला छी मल रंजन दोसर



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जीवन धार रहरै कदम डारि मुनि मुनि

जहना धार महार कहारै । ले हँसि कानि ले पारि मल-मल
करैत बहे छी खेन खेनोना खेन देखे छी मल-मल रंगारि
कठै छी ।

))((

गीत-

मट-मट बहए कहाँ दगए याव यो, मट-मट बहए कहाँ दगए
मकड़ि फड़ खूँ-खूँ ठीक पकड़ि थिँटैत बहए भज्जव यो,
मट-मट बहए कहाँ दगए । टिड़टिड़ि छी छी-छी कथला ओमरी
ठीक नगलै । पौमरी पकड़ि-पकड़ि खेन नाच नगलै ।
याव यो, मट-मट बहए कहाँ दगए । कहियो बग कहियो
कानो मल-मल मल हलै । बग-मिगरी रदनि अथि दुगव
करै । याव यो..... ।

))((

गीत-

प्रीतिक वीति करीति रंगन छै सुखी सुखी त सुखि केना
पेरै । थान-कीट घब-दुखी मज्जन छै हन वृक्ष कपी कहिया
देखलै । हे रंजिना, सुखति केना रंजन छै प्रीतिक वीति करीति
रंगन छै सुखी सुखी त सुखि केना पेरै । जहव भवन
हुँकार छोड़ि-छोड़ि गहम-नाग नगलैत बहे छै । कवम-
भाग मल-मलतव बछि-बछि अगुआ-गडुआ धड़त बहे छै ।
मल-मल मल मल केना रंजलै प्रीतिक वीति करीति रंगन छै
सुखी सुखी त सुखि केना पेरै ।

))((

गीत-



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रौठि मे सभ किछु दहा गेल, मीत यौ, रौठि मे सभ किछु
दहा गेल । झूठ-दुआवि पबदा दहा गेल दहा गेल सभ झूठ-
परिवार हित-अपेक्षित सेहो भूमिया गेल भूमि गेल सभ
अ चाव-रिचाव । रौठि मे सभ किछु दहा गेल मीत यौ,
जिन्गीक संग जिन्गी हवा गेल । ग्लोबल-डिस्टा, खेन दहा गेल
दहा गेल दुआवि दुआवि

टिहना पहिने सेहो दहा गेल कथनी घुमते दुआवि-
दुआवि ।

कानि कनषि केकवा के कहलै अगल रौठि सभ रौठाएन ।
सुगत केकव के दुख नचावी अगल मसमे सभ रौठि एन ।
मीत यौ, रौठि मे सभ किछु दहा गेल ।

))((

२



नरीन कयाव सा ' ' अनी ' '

यौ भाग दहेज प्रथाक अत कक
किछु अरुष्ट यडगाँव बटु
कतेक दिन झूठ बाथरै रौठि
कथला तय कक अकव अत



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैथी तेनाग अतिबाग ले थिक
नक्षीक होय ओ दोमर कप
ओकर सेहो अछि स्रग्न सजन
दहेजक कीड एक कक शिकाव
जूमि पालि बाथु ग रिभाव
यो भाग दहेज प्रथाक अत कक ।
किड अरथ यडाव गढ़
जै अहाँ रैथी के गठलो
कि ओहि मे निज स्वार्थ देखलो
रैथी जै अछि अहाँक लीवा
त रैथी अछि रैड रैहूना
दुसुक जै कवि रिगाह
दहेजक अतहेनना कवि यो भाग
दहेज प्रथाक अत कक..... ।

ई बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA



शिरक्याव सा - छिन्नु -

करिता- कर्मयोगी

है भगता योगी आ है डनरौह हवथक तबंग है, है रिपतिक
आह पतिव्रत दर्शन कहिया भेन है अछि मोन जहियामँ देखेत
डियनि रएह गतीव दूखी .. ककरो उगहाम है ककरो परिवाम
है है ठोवणव रसभुत गाव है हिअमे ग्रीष्मक मसाल हैना सतक
हिय अथा गिक कर्मयोगी- अगकन कोना भेननि पितामह
दूकि ?

बीतिक कानधुनक नाउ- कामदेव ! ! !

कोना है काम भनमाग्य निश्चालन तेसर पहवक रिमणीक राद
जगतधारीक मितक दर्शन तामनामक गाममे बहिनो

बिगुडमँ दूजत डुडक हाथे तर्पण आरँ की मल्लोत डुधि रौरा ?

मरवण अंगणमे शिखिड सहचरी जाग बरि-शिकि किबणै

आमेवसात् कवरौक लेन लोक कलेड अलखन प्रनाग रा थ

फुटिछानि बटेड छेनि क२ आडरव कलेड तणयक कणमे ओ दूनु

रौराक अंगणक श्रैण क्माव "अचना" टटना रैनि देननि कन्याक



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उपहार दुःखक मोतीमे जखन अफनागत ठेक मन्त्रवचन तखन
आस्तिककता जलौछ तुख म्हा ! तिवलित राँरा ले करैत छथि
भगवानसँ छन सुबधामे जन मन निवमन.... समाजमे छलिव
शीतलताक आन सदेह करि ले तखन रौदेहीक छान ?
अपल लपथा मे बलि नष्टकक कथननि निदेशन देमिन रमनाक
प्रति कर्मक गति अर्पण एकाध प्रहसन लिखि अकथाग करिता
गढ़ि

कतेक आजाद भ२ गेल छिन्ना व म्हा ! गजोतक म्हा तक
शिवनी अन्हा व कोला ले छलिव छोह सरहक उकेरव ह्वा
यएह आनि, यएह मोह की छलिव की अछोप की धावक की गोप
सरहक राँरा..... जे गाछ, छिन्ना छलिव रएह उठंग रएह छेँ ग
सिक्का छिन्ना रा नवकछि
स्त्रीमेकाव करैए गढ़तनि समाजकेँ राँरा मन चेतनशील मन्त्रवचन केँ
जे सँकावे बूझलैए सरहक कलातक लेन अन्तु म्हासँ मोहव
गारैए... ।

ई बच्चापन अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA



डा. नैशिव कर्म, एम.डी.(आय.) - कायचिकित्सा, कानेज ऑफ
आयर्लेट एंड किम्ट मेन्टल, निगडी - प्राधिकरण, पुना (महाराष्ट्र)
- ४११०४४

**आगामी जानकी नरमी / मिथिला दिवस / वैश्वी दिवस पर
विशेष**

**भज् धविसुता
(किर्तन)**

भज् धविसुता, तनुजा - मिथिला,
जय बागमना दमेवथ नन्दन ।
जय लोवि - महेमि, गणेशि, रिबो,
जय परमपुत्र माकति - नन्दन । *



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

तज् धवसिन्धता । ।

तज्जि लोभ मोह, धक बास चष ।
तज्जि भर माया, गद्ध बास चष ।
धक धास सदा गिथिलेने - स्वता,
कक बास - कमा सादर रन्दन ।
तज् धवसिन्धता । ।

सत कथ - नरेश - सन्ताप लवधि ।
निज तउक रौड़ । गाव कवधि ।
कवधि गवज स्वधा, कन्दुक-रस्वधा,
हिय रन मे कक हुनि अतिगन्दन ।
तज् धवसिन्धता । ।

श्रीबास मिया डुधि कष - कष मे ।
ओ रैसथि सतक अस्तुमि मे ।
रैस धास धक, सङ्कास कक,
कक हुनिकहि मे तन-मन अर्पण ।
तज् धवसिन्धता । ।

माँ ज्ञानकी रन्दना
(किर्तन)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जगत जननी, कमल नयनी, जनक कथा, स्वता धरणी ।

अरध बानी, बमा - बग्नि, जनक आसन कमल - नलिनी । ।

जनक चरणवज्र पारिषद भवन,

मिथिला केव पारस धरती ।

मिथिलाक मास रैठ १०८ जग मे,

मिथिला केव रैनि सुन रैछी ।

कृति तनया, श्री मिथिलापिनी, जनक कथा, स्वता धरणी ।

अरध बानी, बमा - बग्नि, जनक आसन कमल - नलिनी । ।

सुब नव नूनि गङ्गा आ कल्लव,

जनकव महिमा पारिषद ।

सृष्टि मे कथनहू ल श्री रिंग,

श्रीपति पूर्ण कहारिषि ।

माँ रैदेही, श्रीवाम नलिनी, जनक कथा, स्वता धरणी ।

अरध बानी, बमा - बग्नि, जनक आसन कमल - नलिनी । ।

जग जेनहि नाबी रैनि जग मे,

आदर्शहि जेन अर्पित ।

जिनगी रिताउन समय रिपिन मे,

बामहि जेन समर्पित ।

नरक माता, नरक जननी, जनक कथा, स्वता धरणी ।

अरध बानी, बमा - बग्नि, जनक आसन कमल - नलिनी । ।

किए मैथिलीक आर्जन उद्देश्य वलै ?

(गीत)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

थन आरि केउ कान मे ङा रौत थुँडेए ।
किए मैथिलीक आरक्षण उद्देश नलेए ?

किए रौसम दुधि मैथिल आवाग सँ ?
किए ठुँठगुछ ल धववा हलक गाय सँ ?
किए लिह मे थुँजथुँज अन्हाव नलेए ?
किए मैथिलीक आरक्षण उद्देश नलेए ?

कतए जोगाह शिरमिह, रिद्यागति, जनक ?
किए गढ़न अछि मन्द आग माथक तिनक ?
किए मिथिला मे उन्नी रौसात रौहए ?
किए मैथिलीक आरक्षण उद्देश नलेए ?

कहू ! कनगुछ के रौसम एहि कोन मे ?
की ल रौँटन अछि मिह एकहु रौँन मे ?
किए पीयब सनि थेतक जज्जाति नलेए ?
किए मैथिलीक आरक्षण उद्देश नलेए ?

हए रौसम प्रण, कल धीले तौँ चन
(गौत)

हए रौसम प्रण ! कल धीले तौँ चन ।
कल धीले तौँ चन
ल माटा हनचन ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

हए रैसन्ती परन । कल धीले तौं छन । ।

देखु कनगत अछि नगव - नगव,
मिसकेत अछि गाय ।
रैसन पारन बिदेह,
अपनहि केव ग्राम ।
हे, सुन, सुन गे सरित ।
ल तौं कब डन-डन ।
हए रैसन्ती परन । कल धीले तौं छन । ।

पूजा जलकक अ धवती,
मशान रैसन अछि ।
लोक बहिरहू जेना अ
बिबास रैसन अछि ।
सुन गे कोसनी कल ।
ल तौं गा छयन ।
हए रैसन्ती परन । कल धीले तौं छन । ।

जतए गुँजय डन सदिखन,
बिद्यापति केव गीत ।
आग नचगत अछि तान्दर,
आ गुँजेत अछि टीथ ।
नेत्र आगल अ तूनि,
अछि रैसन मकथन ।
हए रैसन्ती परन । कल धीले तौं छन । ।

हुँ मैथिल हरक,
कहु मैथिलीक जय ।
होहू आरहु सतर्क,
कक मैथिलीक जय ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

युँक मैथ ले मङ्ग !

छन छोट मैतदन ।

हए रैमञ्जरी परन । कल धीले तौँ छन । ।

शैक्षिक सङ्गत संग्राम कवय (गीत)

काशीर रैमञ्जरी, आसाम रैमञ्जरी ।
शैक्षिक सङ्गत संग्राम कवय । *
बन्धिः दोष हुनिक एहि मे कनिष्ठा,
जै मिथिला - भू पञ्चरै रैमञ्जरी । ।

हम मैथिलि डी - मिथिलारानी ।
सम अधिकारक डी अभिवादी ।
जहिला तामिल ओ गुजराती,
तहिना हमरूँ मिथिलाभाषी ।
हमरूँ गढा, हमरूँ मिथिला,
कान्टिक ओ रैमञ्जरी रैमञ्जरी । ।

हम माझय डी बन्धिः किछु रिशेय,
मिछ माझय डी अधिकार रैमञ्जरी ।
हमरूँ प्रगतिक अछि हक ओहिना,
जहिला कवगढ आबहुँ प्रादेशी ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

जयेंग नमि, तँ दोष हुनिक ले कहै,
यदि आशुतिक कतहु मनीन जवय । ।

नमि: तीथ, अगल अरिकाव मझै डी,
कोशी - कमना धाव मझै डी ।
जम-थम नभ मे सखाव मझै डी,
शिक्षा - रोजी - रागाव मझै डी ।
नमि: कहै ह्येव, जयेंग आग एथल,
हव मैथिल, हव - रिकवान रँषय । ।

हव प्रदेसे, भावत केव हिम्सा,
सतहक दर्जा एक समाज ।
तथल किए केओ अमृत नुष्टल,
ककरो भैष्टल रिय - अपमान ।
नमि: ह्येव कहै - हुनिका सँ केओ,
जयेंग कोसी कमना नान रँहय । ।

* स्वतार सँ मिथिलाक सगुत / मैथिल / मिथिलारानी /
मिथिलानी शक्तिप्रिय ओ महनीन लोगत अछि । ओ ककबहु सँ
अनारथक हछ नमि: चाहित अछि । गतिहास साक्षी अछि कि
मिथिलाक कोनहु बाजा रा कोनहु राष्ट्रि सिर्फ अगल बाजाक
सीमारिस्ताव रा अगल महोदयकषिक पृथिक लेन कहियो ककबहु
पव अनारथक हछ नमि: पोषनक । ओकवा नंग मे जतरैहि
तु - भाग रा सम्पदा छलै ततरैहि मे सभुष्ट बहन ।

पवहु आग लोक ओकव शक्तिप्रिय ओ महनीन स्वतार कै गनत
स्वकप मे ग्रहण करैछ । ओकवा आधुनिक बाजलैतिक तन्त्र र
आन रिभिन्न सखाव माध्या सँ रँव रँव उदाहरण देन जागछ कि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“क्या आप तेरंगाना की तबले निरोध प्रदर्शन कर सकते हो ?” ओकर शान्तिपूर्ण माँग सब केबे प्रति प्रेरणा नष्टि देई आओव संगहि पूर्ण दमामेक कार्यवाही करई संस्था अस्तित्व थिक । ओकरा जरूरदस्ती अपन शान्तिपूर्ण वास्ता केँ छोड़राक जेन उँकसएई थिक ।

स्वतंत्र सँ मिथिलाक संप्रति / मैथिल / मिथिलारानी / मिथिलानाथी एखन शान्तिपूर्ण ओ सहनशील छथि । तेँ एहि गीतक माध्यमेँ भावत सबकार ओ तथ्याकथित समाचार र सञ्चार माध्यम सँ निरोधन जे अपन अस्तित्व ओ दमामेक क्रियाकलाप केँ विराम देखू; गनत जाणकारी प्रसारित कए रा जाणकारी सब केँ गनत स्वल्प मे प्रचारित - प्रसारित कए मिथिला, मैथिल र मैथिली केँ छोड़रा - फेलावराक प्रक्रिया सँ राज आरंभ ।

कहिया तक शान्ति हो ?
(आरंभ गीत)

शान्ति, शान्ति, शान्ति, शान्ति,
कहिया तक शान्ति हो ?
आरंभ तँ मिथिला आ मैथिली जे शान्ति हो । ।

मैथिलीक उँखान हो,
मैथिलीक सञ्चार हो ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

भावत केव नक्शा पव,
मिथिला केव नाम हो ।
शान्ति नहि, शान्ति नहि, आन्तरिक आन्तर हो ।
आरहु तँ मिथिला आ मैथिली जे आन्ति हो । ।

घब - रातव सरव,
मैथिलीक गान हो ।
मैथिलीक माण हो,
मैथिलीक मोन हो ।
एहि पृथीत गुरु मे, न्यायिक रजिद्वान हो ।
आरहु तँ मिथिला आ मैथिली जे आन्ति हो । ।

हुनहुँ पवतव, तखन
रातहि किछ आठव हुन ।
आरु डी नृतव, रुदा
तगयो ल रात रैनन । *
आरहु किए भ्रष्ट डी, दिशा केव ज्ञान हो ।
आरहु तँ मिथिला आ मैथिली जे आन्ति हो । ।

शेखर सँ ल आन्ति हो,
शेखर सँ आन्ति हो ।
आन्ति, आन्ति, आन्ति, आन्ति,
चेतनाक आन्ति हो ।
एकताक तीव्र सङ्ग, नम्रक सङ्ग हो ।
आरहु तँ मिथिला आ मैथिली जे आन्ति हो । ।

* महान भाषारिद् सब जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक अनुसारा रिहाव
केव अनुसृत मैथिली एकमात्र एहेन भाषा हुन जे रातुर मे



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

भाषा होयबोक सब गैत पुवा कबैत छन । ओ मैथिली केँ
रिहाबक बाजकाजक भाषा केब कग मे स्वीकार कबरौ हेतु
तकोनीन बिष्टिमे सबकार सँ अग्रबोध / अग्रमोदन कएल छनाह
।

पवथ ओहि समय भावतक स्वाधीनता संग्राम अपन चरम पव छन
आ कहन गेल कि ब्रिगर्मेन महोदयक उंगवोड प्रस्ताव ह्ठैकएबोक
नीति सँ प्रेषित थिक - तै नष्टि मासन जएबोक चाली ।
मैथिल लोकनि देशेहित मे (भावतक हित मे) सहर्ष रिना
कोणहू बिबोध केँ मैथिली जेन जिद डोडि हिन्दीक प्रचाव -
प्रसार कबरौक रात केँ स्वीकार कएनहि । एहि क्रम मे अंग्रेज
लोकनि सँ द्विती भाषाबोक रौदहू तकोनीन दडि भंगा महाबाज
सु. नरसिंह मिह देरनागरी (हिन्दी) केब प्रचाव रैठैबोक हेतु
निर्देशि निश्चित कएनहि । एकव मतनरै ग्रा कथमणि नष्टि कि
मैथिल लोकनि अपन मातृभाषा "मैथिली" केँ रिसरि जेनाह
। मोन मे बहनि जे भावतक स्वाधीनताक रौद मैथिली आ
मिथिला केँ स्वतः अपन स्थान भेटै जायत ।

अस्तु १३ अगस्त १९५१ ग्रा क२ देसि स्वाधीन भेल । पव
मैथिली केब संग आशोक एकदम रिपरीय पूर्ण भेल - भार
कएल गेल । भाषाक आधार पव मिथिला बाज्य के कहए
अपिस्त मैथिली केब अस्तित्वहि पव प्रथम चिन्ह नगाउन गेल,
हिन्दीक रौलीक कग मे घोषित कबरौक भविसक दुष्टग्राम कएल
गेल । नहिने सहि अकादमी आ नहिने आठम अनुसूची मे
स्थान देल गेल (जे कि रौद मे कतेकहू संघर्षक रौद भेटेल)
। एतएहि नष्टि मैथिली केँ तोड़बोक हेतु आ मैथिल केँ
पवम्पव नडैबोक हेतु नर नर परिभाषा सब गठन गेल ।
मैथिली केँ भाषाक अधिकार देमए कान अस्सी मोन पाणि
पडैत छनहि पवथ तिवहूतिया, रैबिका, अगिका आदि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मैथिलीक लौनी सब केँ स्वतन्त्र भाषाक रूप मे परिभाषित
कएल गेल । मैथिल लोकनिक देशेहित मे कएल गेल काज
रा देशेभङ्गिक ए केहेन पारितोषिक छल, से नहि जानि
? ? ? ? ? ?

जयति जयति मिथिला (जन्मभूमि स्तुति गीत)

जय हे ।
जयति मिथिला ।
जयति मिथिले ।
जय करि - कोकिल - अमिय - राक्षस,
जयति, जयति मिथिले । ।

जय मिथिला - तु तवण - तारिणी ।
श्रीमते निज गर्भ धारिणी ।
नतमस्तक तोवा आगाँ माँ, जन्मभूमि मिथिले । ।

जय शेठ - सविते अमिय - राहिली ।
मिथिला - तु जीरण - प्रदायिनी ।
अमिय चरणवज्र माँ मैथिलीक, पारि धन्य गंगे । ।

जय मिथिला धन जन रण उपरण ।
जय मिथिला केव प्रजा हलक कण ।
बावझाव कबी स्तुति हम जयति जयति मिथिले । ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

এ বাচসপৰ অংশ মতৰ ggajendra@videha.com পৰ
পঠাও ।



চন্দন কুমাৰ সা

সৰবা, মদলেশ্বৰ স্থান
মধুৱণী, বিনোদ

গল্প/ কবিতা/ লেখক

গল্প-১

কবেজক ঘৰ তৈ খোন্ কল



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिलनक ताग जोक कल
अहिक हिय-रीट चाली रस
जगह रसरीक जोड़ कल
रसन रसन हमर जौरल
अहिये लहरन योक कल
कवय हरियाद "टंदन" सुनु
मजन रसरीक जोक कल
(जान-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ+ जान-दीर्घ-दीर्घ+ जान-दीर्घ)

गद्य-२

आहव रसन सबकार छै नाचाव भेल जगत
रागाव पोषित नीति से कोणा केव एतए समता
गाम भुवन-पेठ देशक खेत उंसव भेल दुग
राठा - लोदीक रीट उगजन दुग मात्र दहिद्रता
कन-कवथा मेहव मे चनगड दिन-वाति जे
प्रगति के अछि मागदण्ड आ एकता भेल जगत
गाम जा रसि बहन मेहव जौरिका केव जोह मे
महाजन केव राज-तव हुना बहन निर्धनता
ग्राम-रामिनी भावती कियेक गेलीह रस नगव
कलित दुधि आग तैग ए केहन केननि मूर्धता
"टंदन" कक आह्वान, सुवाज के एकरीव खेव
हंसतीह एही मँ देने खुशियान रसन जगत

गद्य-३

लहक सुत राहि बखनिये कलेजक कोण ओकवा
रिसवन नग भेल जकवा ओ रिसवि गेल हमरा
जिगगीक राठ जकले आह्वान ध चनर मिथेनिये



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्त, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह बिदेह मैथिली पारिषद पत्रिका बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२

गद्य-4

घोष हुनकब उतवि गेलै
जोत सगरो पमवि गेलै
रहन प्रवरी जखन शीतल
हुनक आँचव समवि गेलै
देखि हुनकहि ठोठ-नाली
आगि भाती गजवि गेलै
लेन नाजे हुनक मुकल
अछि हमारो नजवि गेलै
कग योरन निवधि "टन्स"
मोष मरुव मनवि गेलै
| -U-| -| +| -U-| -|

गद्य-5

जिनगी केव बिदेह पब काँठ सौमै गाड़न छै
नियति केव छै छै सगरो दफाइन छै
माय-बाप, भाय-बहू, छै सुठि सँध सभ
मोह-जान ओमबायन जिनगी गतान छै
कनियो जूँ छै छै सँध सभ कियो मल के
छुतलव सँध सँध सँध सँध सँध सँध सँध
बुद्धि-बुद्धि जिनगी भवि आनन से बिदेह देन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

खानी हाथ आर देखि पवित्रण थोमागन डे
रूठ भेल, दूबि गेल फकरा रैनि रैसन डे
"टंढ" कहय केहन दुनिया अभागन डे

गद्य-6

मुबख रैड । महान ओजे अपना के कारिन रूने डे
अपन माथक छेठव ठीक ककबहु नहि सुने डे
आपन नीको अधनाह तारै करिनताग कहारै
अपन अधनाहो केव जग मे सरैस नीक रूने डे
डूह-पाँट नहि किडु रूने नहि मोल कमडपण
डूह-नीट के भेद ल जाल मुय सरैके एक रूने डे
डूह-प्रगट आ बाग-द्वय तः कारिन केव गहना डी
छलैत रैष्ट तग ओकरे सत के तिथिगो रूने डे
पव-उपकारे नीन वहे जे सैह अछि अस्मन जाली
"टंढ" असनी जाली जगमे ओ जे नहि खुर रूने डे

गद्य-7

नेह, संग थोमाएरै हमरा नीक नलीत अछि
नेह, ओमराएरै हमरा नीक नलीत अछि
मोनक टिनरौव पव डी बाहैत जे मीठ-तीत
भारहि मे मोराएरै हमरा नीक नलीत अछि
सुखक-गीत दुखक-ठीस जिनगीक कथा-रैथा
जगभवि सुनाएरै हमरा नीक नलीत अछि
सुकजक किवीण चट्टी सुखा केव रिहाव कवी
धवती मे मोराएरै हमरा नीक नलीत अछि
रिहग-गीत गारंग डी आ रिबरुनि सुनाएरै डी



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

"टंढर" ३ रौवाएर हमरा नीक नछौत अछि

गजव-८

लौआ कुटबन भोले अँगना सँम गलेत ठुथिह सजना
डम-डम-डम-डम गायन रौजे खनकि उठन कंगना
मासुक रौनी नछे पियवगव ननदि रँगन रँहिना
गम-गम-गमकय तुनसीक टोवा टाणन मन अँगना
बटि-बटि साजन कप मल्लारव कतरैव देखन एना
छिन्नी-काजव जूझी-थोपा नरका-बुआ टाकय गहना
गहिनहि सँम राबन दीप-रौती जगमग घब-अँगना
उंगन टाण असमान छदय मे उठन रिबन रेदना
सेज सजौल रँछ तकेत छी एताह कथन घब सजना
"टंढर" सजनी ग्रन्थ रँसनि की मांगरि अह रँजना

गजव-९

हमरा गजोते सँ नगगत अछि आरि डब
टुप भेन तेँ रँगमन छी हम अछार घब
नहि मोन अछि हमरा नाम आ पविटन
अनजान छी समाव मे तेँ घुमेत छी निडर
तकेत अछि लोक नाम मे पहिटाण लोक के
ग्रन्थ-मीनक आरि समाज मे छे कहाँ मोजव
सँरि नहि जकवा सँ रँगन सेह समाग
तोड़नक भरोस ओ भरोसे डगह जकव
"टंढर" जगके बीति ओमवाँ नहि जिगगी
सुनु खरबदाव ! हबदम बद्ध रँखरव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

गद्य-10

प्रियमक वाति केव टास मण चमकैत छी अहाँ
अँगना केव तुलसी टोरा मण गमकैत छी अहाँ
कखनहुँ मायक ममता रँगि मरुलैत छी अहाँ
कखनहुँ आगिक धधवा मण धरकैत छी अहाँ
कखनहुँ मँगी-रँगिण रँगि हँसलैत छी अहाँ
कखनहुँ ज़ीरण मँगिणी रँगि रूमलैत छी अहाँ
कखनहुँ अरँगना के कण धवी हकलैत छी अहाँ
कखनहुँ काली केव कण धवी डबलैत छी अहाँ
कखनहुँ प्रेमक झुवति रँगि मिथलैत छी अहाँ
“टप्प” नावी केव कण अलक देखलैत छी अहाँ

गद्य-11

बहि ह्रुलैछ हमरा आर प्रेम गीत
अतब बहि किछु हारि हो रा ज़ीत
छकछकी नगोल बहेत छी वाति-भवि
मगला बहि आरँग केयो मगगीत
गुणगुण रँगन अछि कनेज हमर
पैसत के एहिमे मभ का भयभीत
ज़ीरैत छी ह्रुदा रँगन छी ह्रुदाधर
ह्रुदा मँग ज़ीरण कलैत छी रँगीत
“टप्प” ज़ीरण मँ नलैछ आर डब
मूँ मँ हमरा अछि भयगत पिबीत

गद्य-12

टनु एकलैव ह्रुद वँगमट मजारी
रँगकणिया-कण धवी आ नाट देखारी
दूनियाँ रँग रूमत रँगलैले हमरा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हमरा अछि सथ जे दुनियाके हमारी
सुन्दर अतिशयता त जगभरि भेटैत
हमर मोन जे पाठ लेखबाक खेनारी
दुनिया के बगल जे नालोछ निबस
आँउ एकबा ज़ीरन-बस रौब डुरारी
"चदन" जे जे थमसुम रैसन ज़ीरन
छनु अगल पब हँसि एकबा हमारी

२

करिता

आकाशवाणीक दूरदर्शन केन्द्र सँ दिसाक १०-०३-२००८ के तर्का-
कस्म कायफ़ेमा मे प्रसारित

लेख हेतु लेख

लोगत छैक सँम जखन
महिमा भ२ जागत छैक सुर्यक प्रकाश
मान भ२ जागत छैक पक्षि भव आकाश
टिड सत जाग नालोछ अछि अगल-अगल आवास
रौद भ२ जागत छैक कस्मगत कमल
रौद भ२ जागत अछि तहि मे ज़मर ।

एतरेहि मे भ२ जागत छैक अन्धकार
भ२ जागत छैक सत छिन्न अन्धकार
सृति बहैत अछि थाकन समाव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

झुदा, सुतेत नहि अछि झुमर ।

सोटेत अछि झुमर-

हेब हेतग भोव

हेब पसवतग टूँदिने सुर्गक आकाशि

हेब हेतग नान पुरैक आकाशि

टिङ्क जोड़त हेब अगन आराम

नहि बहतग कतहु अहाव

जागत ग सभाव

हेब हुनेतग कमल, आ ताहि पब नाचत ओ "झुमर" ।

३

हाथकु

सगरो गीत

गुमकी पसवत

आफन मन ।

मिः मोह, रण

टिङ्क हर्ष-हर्ष

टुप्पी तोड़न ।

उठलै रिङ्क ।

प्रलय मचाउन

सकछे प्राण ।

अत-रिक्त

धवती खसलन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

VIDEHA

टिडक थौता ।

अँडा छुँछन
उँजबन दूनिया
मोण उँदस ।

सोचि-रिचारी
धवती उँतबन
थव रिँडिजे ।

नरका थौता
टिडक चहकरै
नर नलीए ।

हागकु (बाम-कथा)

टैत्र-नरगी
अरध नगर मे
बामक जग्य ।

मिथिला भुमि
धनुष के तोड़न
मिया रिराह ।

दू रवदाँष
मगनथि कैकेयी
दमेवथ सँ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक बर्षिक ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाज्जा भवत
बायक रणरास
मगरो शोक ।

स्वर्णक मृग
मोहित मल सीता
पकक बाय ।

पर्णकृष्ठी म
रौदेली हवनक
बारण दूध ।

किष्किंधा देशे
स्वर्णीर के ताड़न
रौलि मावन ।

ताकय सीता
चमन चहुँओव
राणव मेला ।

मागव- पाव
कपीणि हनुमान
नका जावन ।

पाथव डारि
नन-नीन दू भाज
रौहन मेतु ।

रुंभकवण

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बारा के बाबन

जीतन लका ।

घुसना बास

अरध नगरिया

बासहि बाज ।

এ বচনগৰ অংশ মতৰ ggaj_endra@videha.com পৰ
পঠাও ।

बिदेह नृत्य अंक मिथिला कला संगीत

१.

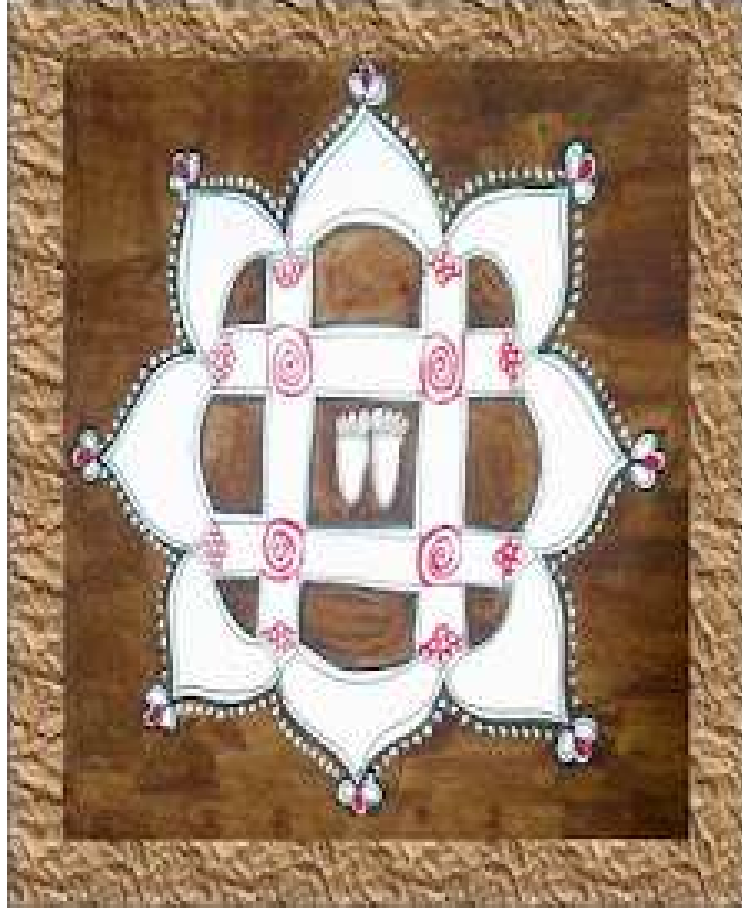
रणीता अमावी

बि एन ए सिद्धे *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly Journal* विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका विदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् **ISSN 2229-547X**



बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्वागत शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



उमेश मंडल

मिथिलाक रसपति स्वागत शो



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिथिलाक जीर-जुड़ झागड मो

मिथिलाक जिनगी झागड मो

मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीर जुड़/ मिथिलाक जिनगी
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ए बचापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाऊ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-गद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय शंकर (मुल हिन्दीसँ
बैथिलीमे अगुवाद लिखित उपेव)

मोहनदास (बैथिली-देरनागरी)

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेहदस (बैथिली-बिथिली)

बिदेहदस (बैथिली-बैथिली)

२. बिदेहदस- प्रभा बिदेहदस हिन्दी उगनासक अशीदा मा
द्वारा बैथिली अग्रद

बिदेहदस

३. कसकमा दक्षित मुव लगीवीस बैथिली अग्रद बिदेहदस
प्रथम)



बिदेहदस देस-अग्रद . बिदेहदस डरवान- हिन्दीस



बैथिली अग्रद बिदेहदस बिदेहदस



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



मंगलेश डरवान- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद



बिनीत डंगेल

१

रैब-रैब कहैत डनहुँ हम

जोब मँ नहि ह्रदा
रैब-रैब कहैत डनहुँ हम अप्पण गग
ओकब सभठा दूर्जनताक संग
कोला उन्नीद ये रैतारैत डनहुँ निवाशि
रिग्रास राउ करैत डनहुँ रिना
आमेरिग्रासक
निथैत आ काठैत जागत डनहुँ आ राका
जे टीज अप्पण सरैमे खबारि दौब मँ गजबि
बहन अछि



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रिखवत कागज के संभावित डनहू
धुवा पौछित डनहू
ऊनठैक-पनठैत डनहू किछ फिया के
अहिल जेना भेल, होयत बहन
एना हेराक चाहि, भ२ सकैत डन
हेतिये ते की हेतिये।

(1994 मे बचित)

२

दिल मे एकठा दिन

ओहि छेठे सन मेहब मे एकठा भोव
रा सय रा कोना डष्टिक दिन
हम देखनहू गान्धक जड
मजबूत स धवती के पकडन बहेत
हरा डन जेकर चनहि स आरो एकठा
बहनु रचन डन
सुनसान सडक पव
एकाएक कियो थकैत भ२ सकैत डन
आरि सकैत डन कोना दोस्तक आराज
कनि कानक रौद
अहि छेठे सन मेहब मे आयनहू
शोब कानिथ पसीना आ नानक पौग मेहब।

(1994 मे बचित)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिनाशा प्रते



बिना गज्जल टंडन कमार सा डा. शशिधर
कमार "बिदेह" - लेखन (बिनागीत)



बिना गज्जल



टंडन कमार सा

सबका मदलयेव अल

मधुबनी, बिना

बिना-गज्जल-1

बिना गहिवनक मोन गहना,
बिनाके डाँव मुले नान हृदना ।

साजि-बाजि दुनु जेना मेना देखे,
हाथ मे पाग डले बिना अना ।

मदली-कटवी, आ बिनासा-नहु



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैंग-बैंग किशक शुकना ।

मुनक मुना नाट देखक,
"टदल" घुमन घब मोना-छना ।

बैंग-गजव-2

साम पवन, बैंगि पिपव पव टिड कवग पंटेती,
सुगा-मैना रौन बटाओत रैगना कवग घंटेती ।

हुदकि-हुदकि के हुदी नाचय होव हेते रणभोज,
कोआ पिजरेडु लोन कोगनी गारि बहन डग टैती ।

रैगवा-पवरी अपनाँत अछि गंतजाम ये नागन,
डकल बैंगन मोटि बहन कोना हेते फंटेती ।

सोवकी पिपनी रैजा बहन छे छैली पिछे ठोनक,
मोव नटेछे ता-ता-बैना "टदल" अडुत अ फंटेती ।

बैंग-गजव-3

गरका फती गरके सगराव
पहिल कय रूटी भेल तैयार

मनका यणीतक गहनक झुंझी
रौजे कनमून पागन मन्काव

हाथक रौना थन-थन-थनके



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

धर्म-धर्म छटि के गेन रैजाव

ठोकर-पिपली आ तमाशो-वाट

सुनन देखन हवथ अगाव

बौराक हाथ पकड़ि कए बूँटि

प्रकटित घूम्य छै-रैजाव

२



डा. गेष्मिब कमर - बिदेह

मिथिलाक सिया

(बौरा करिता)

हम सिया मिथिला सैथिन केव,

सैथिनी हमार नाम ।

हमारी ज्ञानकी, हम रैदेही,

मीता हमरहि नाम । ।

भावतर्कक पूर दिशो से,

मिथिला हमार नाम ।

संग लगानक पूर ओ दक्षिण,



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हमबहि रौस स्रुठास । ।

कहियो हम मिथिलाक माष्टि पव,
तलक दीप जवओल छी ।
की मिथिला ? सौंसै तूतल कै,
हम रिक्तास सिखओल छी । ।

हमली कहियो डनहुँ गागी,
हमली मैथिली रँगनहुँ ।
मल्लस शैकव रागुछ केव,
सुत्रधाव हमली रँगनहुँ । ।

ब्रह्मज्ञान लौकिक - पबलौकिक,
हम भागति, सष्टित कयनहुँ ।
पव की भेल ? आग हमरा अहँ,
शिक्षा सथे रचित कयनहुँ । ।

एहना दिस बहन जहिया,
बन्धि टिप्परी - पत्नी हम जहिया । *
मिथिला केव रैछी रँगि क२,
हम खुशी मगारी, रा कानी । ।

एथनहुँ रैड - रैड गप्प हँके छी,
मिया - मिया कहि पड़तारी ।
पव की अतरँहि अछि दुनाव,
की अतरँहि केव हम अधिकारी ? ?

तिनकक बाँर सँ हकल कलै छी,
छी सतु अ मलगावी ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पब राबू ! की कहियो मोचन,
अपन केव की जिन्दगी ? ?

की अपनक अ मोच उटित,
जे रैती अनकहि घब जयतीह ? **
पठ १ - लिखा क२ की होयत,
जै कमा - खैती अनकहि देतीह ? ? **

अनकव दोष कहु हम की,
जै अपनहि लोकक मोच एहेन ।
गप्पक डुडु दुनावहि की,
जै बारहावहि मे लोक एहेन ? ?

मोच कक्का ! अपनहु घब मे,
कहियो तै अनकहि धी अउतीह ।
जै अनकहु मोच अही मन हो,
तै भोजी पठन कोना अउतीह ? ?

झी किछ लोक तै आओरो रैठि क२,
तथाकथित सञ्जल समाज ।
कोथि मे थेलेत अपनहि धी केव,
रध कबैछ, सविपह ल जाज । ।

हमवहु गछा दुमिग देखी,
आ दुमिग केव संग रैठि - चली ।
हमवहु गछा थेली - कुदी,
आ संगहि संग हम पठि - लिखी । ।

झुप्टी भवि मैथिल नज्मा केव,



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाँर गना जूनि रैलठाक ।
अगन ह्रदय सँ अगनहि गुठु,
मुँह घुसा, जूनि गप्पा ठाक । ।

* सन्दर्भ देखु श्री “अकू” जौक गीतक पाँती
सथी गिया केँ पत्र आग हय कोणा क२ निथरौं हे ?
ककरा सँ अ - आ - क - थ - ग - उ निथरौं हे ?

पाँटे रैवय सँ फुलडानी लए, तोड़रै सिथनहूँ फुल अवहल ।
जानी ल हय छिपी - पत्नी, छी रैली मिथिना केव मुन ।

** अ रिदाव हमार अप्पन नयि थिक, पवथ अपनहि मैथिल
समाजक देन थिक । केउ गोठे जखन अपन रैली केँ
अजिनिमविग केव पठ अ केव जेन पठाए बहन डनार तँ
हूनिह किछु सन्धानणीय सब - सङ्गरीक अ कठोरक सब डनहि
। सतसँ दूधक रौत जे अ सब अपन समाजक ह्वर्थ -
अशिक्षित लोकनिक नयि अशिक्षित किछु अति रिदाव, अतिथित
लोकनिक डनहि ।

अ बचनपन अपन मतिवर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैद्य लोचन द्वारा स्वीय श्लोक

१. प्रातः काल ज्योतिर्गर्भे (सूर्योदयक एक घंटा पहिल) सर्वप्रथम
अंग धनु हाथ देखबौक छली, आँ अ श्लोक रँजबौक छली ।

कवाग्रे रसते लक्ष्मीः कवमया सबसती ।

कवमूले हितो ज्ञाना प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रँसते छथि, कवक मयाग्रे सबसती, कवक
मूलमे ज्ञाना हित छथि । भोवमे ताहि द्वाले कवक दर्शन
कवबौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जलबौक काल-

दीपमूले हितो ज्ञाना दीपमया जलदर्शनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकृतः संध्याज्योतिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मूल भागमे ज्ञाना, दीपक मयाभागमे जलदर्शन (शिखर) आँ
दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे संध्याज्योति ! अहाँकेँ
नमस्कार ।

३. स्वतंत्र काल-

वाम कर्ण हनुमन्त रौनतेय बृकोदवम् ।

शेखर सः सारस्वतं दुःस्वप्नस्तु नश्यति ॥

जे सब दिन स्वतंत्राँ पहिल वाम, क्मावस्वामी, हनुमान्, गकड
आँ तीमक स्वरण करैत छथि, हुनक दुःस्वप्न नष्ट भँ जगत
छथि ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

VIDEHA

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

४. बहैरौक समय-

गङ्गा च यद्गङ्गा तैर गोदारवि सबस्रति ।

बर्मदे सिङ्गु कारेवि जलैऽसिन् सल्लिर्षि रुक ॥

हे गंगा, यद्गङ्गा, गोदारवी, सबस्रती, बर्मदा, सिङ्गु आऽ
कारेवी धाव । एहि जलमे अपन सल्लिषा दिअ ।

३. उतुवै यमद्वन्द्व हिमाद्रश्टेर दक्षिणम् ।

वर्य तत् तावत नाम तावती यत्र सप्ततिः ॥

सद्गङ्गक उतुवमे आऽ हिमाद्रक दक्षिणमे तावत अछि आऽ
उतुका सप्तति तावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रौपदी सीता तावा मन्दोदरी तथा ।

पञ्चक ना सल्लिषि महापातकणिकम् ॥

जे सत दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मन्दोदरी, एहि
पाँच सल्लिषि-सल्लिषि सब कलैत छथि, हुनकर सत पाँच नष्ट भऽ
जागत छहि ।

१. अग्निथोमा रैलिर्मानो हनुमन्ट रितीयाः ।

प्रपः पञ्चवामन्ट सप्तते चिक्कुरिणः ॥

अग्निथोमा, रैलि, राम, हनुमान्, रितीया, प्रपाचार्य आऽ पञ्चवाम-
न्ट सात ठाँ चिक्कुरी कहलैत छथि ।

+साते भरत स्वर्गीता देरी शिखर रामिणी



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

नगबक लहलह कबरौमे सकस होथि आ हरक सभामे ओजपूर्ण
भाषा देरैयरीना आ लहलह देरौमे सकस होथि । अपन
देशमे जखन आरथक होय रया होथि आ ओयभिक-बूँठी सरदा
परिपूर्ण होगत बहए । एरुँ हमे सभ तबहै हमरा सभक
कन्या होथि । शत्रुक बूँछिक नहि होथि आ त्रिक उदय
होथि ॥

मन्याके कोन बस्तु गढा कबरौक चली तकव रनि एहि मनेमे
कएन गेल अछि ।

एहिमे राटकबस्तुपमानइ काव अछि ।

अग्रस-

बैल - बिद्या आदि प्राप्त परिपूर्ण बैल

बाइछे - देशमे

बैलरुनी-बैल बिद्याक तेजस हकत

आ जायत- उपेक्ष होथि

बाइछे:-बाइछे

शुले:-बिद्या डब रनि

गहरा- रनि चेरौमे निष्ठा

भतिरानी-शत्रुकें ताका दय रनि

महाबो-पेघ बथ रनि रीव



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दोस्त्री-कामना(दुव पूर्ण कवए रानी)

प्रेमरोंठमडरागः प्रेम-लौ रा रानी रोंठमडरा- पौघ रैवद
नागः -आगः -हवित

मष्टि:-मोड़ ।

पुर्वप्रिया- पुर्वप्रि- रारहावले धाका कवए रानी यौरा-रनी

जिष्टु-शेकुले जीतए रानी

वप्रेष्टा:-वथ पव हिव

मन्त्रेष्टा-उत्तम मन्त्रे

हराष्ट-हरा जेहण

मज्जमानष्ट-बाज्जक बाज्जमे

रीनो-शेकुले पवाजित कवएरनी

निकामे-निकामे-निश्चयकत कार्गमे

न:-हमर मन्त्रक

पुर्वप्रिया-मेघ

रयिष्ट-रयिष्ट हेध

मन्त्रेष्टा-उत्तम मन्त्रे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उपस्थापक:- उपस्थापक

पाठ्यक्रम:- पाठ्यक्रम

योगेश्वर-अनन्त नन्त कलकत्ता हेतु कलकत्ता योगेश्वर कलकत्ता

न:-हमारा सतक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभिन्ना अन्तराद- हे अन्तरा, हमरा राज्यामे अन्तरा नीक धार्मिक
रिप्या रीना, राज्या-रीव,तीव्रदाज, दुध दए रानी गाय, दोगय रीना
जन्तु, उन्तुमी नारी होथि । पार्श्व अन्तराकता पडना पब रिया
देथि, फल देय रीना गाछ पाछा, हम सत सन्तति
अर्जित/सर्वकित कबी ।

8.M DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words - GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium-

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha
chaudhary



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA

VERMA translated by Dr . Rajiv Kumar Verma
and Dr . Jaya Verma

बिदेह नृत्य अंक भाषागत बचना-लेखन

Input : (कोशिकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-
रोमनमे षांगण कक । Input in Devanagari ,
Mthilakshara or Phonetic-Roman.)

Output : (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर
आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे । Result in
Devanagari , Mthilakshara and Phonetic -
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि बरन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ग्लिनि-मैथिली-कोय / मैथिली-ग्लिनि-कोय प्रोजेक्टके आगु
रैद डि, अगन सुमार आ योगदान ज-मेन द्वारा
ggajendra@videha.com पब पठाडु ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोय (गैबलपब
पहिल रैब सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्व आधारित -
Based on ms-sql server Maithili-English
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मैथिली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मैथिली

१.१. लपावक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव
मानक उठावण आ लेखन मैथिली

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक पाकाके पूर्ण कपसँ सञ्च नः
निर्धारित)

मैथिलीमे उठावण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरानुसार ७, ए३, ए१, ए२, ए३ ए२ म
अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षक
अक्षर बहैत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-
अक्षर (क रक्षक बहैक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)
पञ्च (च रक्षक बहैक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)
खण्ड (छ रक्षक बहैक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि ।)
सञ्चि (त रक्षक बहैक कावणे अक्षरमे ए२ आएन अछि ।)
खण्ड (प रक्षक बहैक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उपहार रौत मैथिलीमे कम देखल जागत अछि । पञ्चमासक
रौतनामे अधिकनि जगहगव अनुसूचक प्रयोग देखल जागछ ।
जेना- अक, पट, थंड, मरि, थंड आदि । राकवारिद पडित
गोरिन्द माक कहै छनि जे करखा, टरखा आ ठरखामँ पुरि
अनुसूचक लिखल जख तथी तरखा आ परखामँ पुरि पञ्चमासके
लिखल जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अतु तथा कसण ।
झुदा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रौतकेँ नहि
मालैत छनि । ओ लोकनि अतु आ कसणक जगहगव सेहो अत
आ कसण लिखैत देखल जागत छनि ।
नरीन पछति किछ सुविधाजनक अरथ डेक । किछक तँ एहिमे
समय आ सुखक रौत होगत डेक । झुदा कतोक रौव
हनुलेखन रा झुदामे अनुसूचक डेठ सन रिन्दु स्पष्ट नहि
लेनामँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखल जागत अछि ।
अनुसूचक प्रयोगमे उटका-दोयक समुदाय सेहो ततरै देखल
जागत अछि । एतदर्थ कमँ न२ क२ परखा धरि पञ्चमासके
प्रयोग कवरै उचित अछि । यमँ न२ क२ उ धरि अक्षरक
समूह अनुसूचक प्रयोग कवरौमे कतहु कोना रिवाद नहि देखल
जागछ ।

२. ठ आ ट : ठक उटका ~ व हँ जकाँ होगत अछि । अतः
जत२ ~ व हँक उटका हो उत२ मात्र ठ लिखल जाए । आन
ठाम खाली ठ लिखल जाएँक छली । जेना-
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठर्र, ठेवी, ठाकनि, ठाठ
आदि ।

ठ = गढाग, रौठर, गठर, मठर, रूठर, माँठ, गाठ, बीठ, टाँठ,
मीठ, पीठ आदि ।

उपहार शिष्ट, सबकेँ देखनामँ ज स्पष्ट होगत अछि जे
साधारणतया शिष्टक शुक्रमे ठ आ मर तथा अतुमे ठ अरौत



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अछि । ओह नियम ड आ डक सम्बन्ध सेहो लागू होगत अछि ।

३.२ आ रै : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रै कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रै कएने नहि लिखन जखनक छली । जेना-
उच्चारण : रैनूनाथ, रिनू, नरै, देरैता, रिङ्ग, रैनि, रैन्दना
आदि । एहि सभक स्थानपर एमने: रैनूनाथ, रिनू, नर, देरता,
रिङ्ग, रैनि, रैन्दना लिखनक छली । सामान्यतया र उच्चारणक लेन
ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.४ आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत
देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखनक छली ।
उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जङ्गना, जुग, जारैत, जोगी, जद्दु, जम
आदि कहन जखनक शिष्ट, सभकेँ एमने: यङ्ग, यदि, यङ्गना, यग,
यारत, योगी, यद्दु, यम लिखनक छली ।

३.१ आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनू लिखन जागत
अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।
नवीन रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।
सामान्यतया शिष्टक श्रुतिमे ए मात्र अछैत अछि । जेना एहि, एना,
एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थानपर नहि, यना, यकव,
यहन आदि प्रयोग नहि कबनक छली । यद्यपि मैथिलीभाषी
थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्यतामे “ए”केँ य कहि
उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण कबन
उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि ।
किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुकलताक रीति नहि
अछि । आ मैथिलीक सरसभाषिक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एम
रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

लेख, लेख आदि कथमे कतह-कतह लिखल जाएत सेहो “ए” क प्रयोगले लेखी समीक्षण प्रमाणित करैत छि ।

३. हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रकबामे कोला रातपव रैन दैत कान शिद्धक पाछाँ हि, हु नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहु, ओकवहु, तकौनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । ह्रदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरै हुक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत छि । जेना- हुनके, अगला, तकौले, छेष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उच्चारण थ नोगत छि । जेना- यडल (थडल), योडमी (थोडमी), यष्टकोण (थष्टकोण), वृषेण (वृथेण), सन्धाय (सन्धाय) आदि ।

+ ध्वनि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे शिद्धसँ ध्वनि-लोग भऽ जागत छि:

(क) फिनायणी प्रत्यय अगमे य रा ए वृत्त भऽ जागत छि । ओहिमे सँ पहिल एक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत छि । ओकव आगाँ लोग-सूचक छि रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेलाह, क लेल, उठ पडतौक ।

पठऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पडतौक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत्यय आ (आ) प्रत्ययमे य (ए) वृत्त भऽ

जागछ, ह्रदा लोग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेल, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएलाह ।

अपूर्ण कप : था गेल, पठा देरै, नहा अएलाह ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

VIDEHA

(ग) स्त्री प्रत्येक एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीन्नुमे
ब्रह्म भन्ना जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : दोसरि मानिनि छनि गेलि ।

अपूर्ण कर्ण : दोसरि मानिनि छनि गेलि ।

(घ) वर्तमान प्रदत्तक अन्तिम त ब्रह्म भन्ना जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : गेटैत अछि, रैजैत अछि, गलैत अछि ।

अपूर्ण कर्ण : गेटै अछि, रैजै अछि, गलै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमान एक, उँक, एँक तथा हीकमे ब्रह्म भन्ना
जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : छियोक, छियोक, छीक, छोक, छैक, अरितैक,
होएक ।

अपूर्ण कर्ण : छियो, छियो, छी, छो, छै, अरितै, होए ।

(च) क्रियापदीय प्रत्येक, ह, हु तथा हकावक लोप भन्ना जागत ।

जेना-

पूर्ण कर्ण : छहि, कहनि, कहनहुँ, गोनह, नहि ।

अपूर्ण कर्ण : छनि, कहनि, कहनौ, गोन, नग, नगि, नै ।

६. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अर्थात् जगहसँ छुटि
कऽ दोसर ठाम छनि जागत अछि । खास कऽ क्षण ग आँ उँक
संज्ञकमे ग रौत नागु होएत अछि । मैथिलीकवण भन्ना गोन
शेदक मया रा अन्तमे जँ क्षण ग रा उँ आँ तँ ओकव ध्वनि
स्थानान्तरित भन्ना एक अक्षर आँगाँ आँरि जागत अछि । जेना-
गनि (गेनि), गनि (गाँनि), दानि (दाँनि), माँष्टि (माँष्टि),
काँड (काँड), माँस (माँस) आदि । क्रमा तन्मै शेद, सन्तमे ग
निश्चय नागु नहि होएत अछि । जेना- बगिँकेँ बगिँ आँ
स्वर्णकेँ स्वर्ण नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. लक्ष्य ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया लक्ष्य ()क
आवृत्तता नहि होएत अछि । कावण जे शेदक अन्तमे अ
उच्चारण नहि होएत अछि । क्रमा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मैथिलीमे आधुनिक (तन्त्र) शैली, सभमे हननु प्रयोग कएल जागत
अछि । एहि पौथीमे सामाजिकता सम्पूर्ण शैलीकेँ मैथिली भाषा
संस्कृति निम्न अन्तर्गत हननु रितीन बाखन गेल अछि । अन्त
र्याकबन संस्कृति प्रयोजनक लेल अन्तरगत स्थानक कतह-कतह
हननु देल गेल अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति
आ नवीन दुनू शैलीक सवन आ समीक्षा पक्ष सभकेँ समेटि क
रूप-रिगाम कएल गेल अछि । स्थान आ समयमे रचितक सर्जक
हननु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसे सेहो सवन होइरना हिमालय
रूप-रिगाम गिनाएल गेल अछि । रतिमान समयमे मैथिली
मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसेँ मैथिलीक उन्नति
पडि बहन परिश्रममे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव
धान देल गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ
कथित नहि होएक, ताहू दिस लेखक-संस्कृत सचेत अछि ।
प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहने छनि जे
सवनताक अनुसंधानमे एहन अनुसंधान किछह ल और देरीक चली
जे भाषाक विशेषता छैने पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसेँ स
न निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शैली, मैथिली-साहित्यक प्राप्ति कालसेँ आग धरि जाहि
रतिनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रतिनीमे लिखन
जाय- उद्देश्यार्थ-

प्राप्त

एखन

ठाग

जकब, तकब



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

तनिकब

अडि

अग्रह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कपेँ ग्राह)

अड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कपेँ रैकपिकतया अग्रहण ज्ञायः
तय गेन, तय गेन रा तय गेन। जा बहन अडि, जाय बहन
अडि, जाए बहन अडि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा
कबए गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय
सकैत अडि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत स्पष्टतः 'अ' अथवा
तथा 'उ' सद्दी उच्चारण गथ्र हो। यथा- देखेत, डलोक,
लौआ, डोक गरादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कपेँ अग्रहण होयतः जेह,
सह, गह, उह, लोह तथा देह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्रहण
थिक। यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेनि (मह्यया मात्रमे)।

७. स्वतंत्र रूप 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे
त यथारत राखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कपेँ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

‘ए’ रा ‘य’ लिखल जाय । यथा:- कयन रा कयन, अयनाह
रा अयनाह, जाय रा जाय गलदि ।

५. उच्चारणमे दु स्रवक रीट जे ‘य’ ध्वनि स्रतः आरि जागत
अछि तकरा लेखमे स्थान लेखनिक कर्षे देल जाय । यथा-
धीआ, अठेआ, रिआह, रा धीआ, अठेआ, रिआह ।

६. सावर्णमिक स्रतत्र स्रवक स्थान यथार्थतर ‘ए’ लिखल जाय रा
सावर्णमिक स्रव । यथा:- मैआ, कनिआ, किवतनिआ रा मैआ,
कनिआ, किवतनिआ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कष ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ,
हाथेँ, हाथक, हाथमे । ‘मे’ मे अस्वभाव सरथा लज्ज थिक ।
‘क’ क लेखनिक कष ‘केव’ राखल जा सकैत अछि ।

११. पुरिकानिक प्रियागदक रौद ‘कय’ रा ‘कय’ अस्वभाव
लेखनिक कर्षे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा
देखि कय ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलदि लिखल जाय ।

१३. अर्छ ‘न’ ओ अर्छ ‘य’ क रौदना अस्वभाव नहि लिखल जाय,
किंतु भाँगक स्रविधार्थ अर्छ ‘उ’ , ‘ए’ , तथा ‘ण’ क रौदना
अस्वभावो लिखल जा सकैत अछि । यथा:- अर्छ, रा अर्क, अरुन
रा अर्छ, कर्छ रा कर्छ ।

१४. हनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिक सँग
अकावाँत प्रयोग कयल जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छि मोहमे स्रष्टा क लिखल जाय, लष्टा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

VIDEHA

क' बहि, संग्रह रिताञ्जिक हेतु फवाक निखन जाय, यथा घब
पवक ।

१७. अन्वयानिककेँ छन्दरिन्दु द्वावा राउ कयन जाय । पर्वत
रुद्राक स्वरिधार्थि हि समाज जठन मातागव अन्वयानिक प्रयोग
छन्दरिन्दुक रैदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव
रैदना हि ।

१८. पूर्ण रिवाज पामिसँ (।) मुटित कयन जाय ।

१९. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हागहणसँ जोडि क'
, छै क' बहि ।

२०. निख तथी दिख शिष्टमे रिवाजी (२) बहि नगाउन जाय ।

२१. अंक देरनागवी कयमे बाखन जाय ।

२२. किछ धनिक जेन बरीन छि रैगरोउन जाय । जा जा बहि
रैगन अछि तारैत एहि दुनु धनिक रैदना पुरिबत् अय/ आय/ अय/
आय/ आउ/ अउ निखन जाय । आकि ए रा ओ सँ राउ कयन
जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/०५/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/०५/१७ अन्वय मा
"अन्वय" ११/०५/१७

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हक्य

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौलेड कयन कय ग्राह):-

दन्त न क उच्चारणमे दौतमे जीह सँ- जेना रौजू नाम,
रुद्रा न क उच्चारणमे जीह मुर्धामे सँ- (ले सँ- तँ उच्चारण
दोष अछि)- जेना रौजू गणेश । तानरा शिमे जीह तानसँ,



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

समय मुसलमान आ दल सभे दाँतसँ मल्लत । मिश्र, सत आ मोयषा
राजि कइ देखु । मैथिलीमे स केँ ऐदिक सभूत जकाँ थ
सेहो उँचवित कएन जागत अछि, जेना रया, दोय । य
अलको स्यामनव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ
(यथा संयोग आ गणेशि सज्जोग आ

पडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचाका र, ने
क उँचाका स आ य क उँचाका ज सेहो होगत अछि ।
ओहिना द्रव्य ग रेशीकान मैथिलीमे पहिल राजन जागत अछि
काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रव्य ग अक्षरक पहिल
लिखला जागत आ राजला जयराँक चाली । काका जे हिन्दीमे
एकव दोयपूर्ण उँचाका होगत अछि (लिखन ठँ पहिल जागत
अछि द्वाद राजन राँदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक
दोयक काका हम सत ओकव उँचाका दोयपूर्ण ठगसँ कइ बहन
छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचाका)

डुथि- ड ग थ डैथ (उँचाका)

गँडि- ग हँ ग च (उँचाका)

आरै अ आ ग जा ए अँ ओ उँ अँ अः म अँ सत लेन गला
सेहो अछि, द्वाद अँमे जा अँ ओ उँ अँ अः म केँ संश्रुषक
कगमे गगत कगमे प्रश्रुष आ उँचवित कएन जागत अछि ।
जेना म केँ बी कगमे उँचवित कवरै । आ देखियो- अँ लेन
देथिओ क प्रयोग अछि । द्वाद देखिअँ लेन देखियो
अछि । क सँ ह धवि अ समितित लेनासँ क सँ ह रँलेत
अछि, द्वाद उँचाका कान हमसु हाउ गेदक अक्षरक उँचाका
प्रवृत्ति रँउव अछि, द्वाद हम जखन मलाजमे ज् अक्षरमे रँजेत
छी, तखना प्रवणका लोककेँ रँजेत स्रवरँहि- मलाज२, राउरमे
ओ अ हाउ ज् = ज रँजे डुथि ।

हमव त्र अछि ज् आ ए३ क संश्रुष द्वाद गगत उँचाका होगत

अछि- गा । ओहिना अछि क् आ य क संश्रुष द्वाद उँचाका



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

होगत अछि छ। हेब न् आ व क स्याउ अछि छै (जेना
ऐमिक) आ म् आ व क स्याउ अछि छ (जेना मिस)। ए भेल
त+व ।

उठाकाँक आँडियाँ फाँगल गिदेह आँकल

<http://www.videha.co.in/> पर उँगल्लै अछि। हेब लै
/ सँ / पर पूर्ण अक्षरसँ सँ क२ लिखू दूदाँ तँ / क२ लै
क२। एमे सँ ये गलि सँ क२ लिखू आ रौदरनाँ लै क२।
अकक रौद ठी लिखू सँ क२ दूदाँ अन्त ठी लिखू लै क२
जेना

डलै दूदाँ सभ ठी। हेब उअ म सातम लिखू- डठम सातम
लै। घवरनाँमे रँव दूदाँ घवरनाँमे राँव प्रयोग कक।

बहए-

बहै दूदाँ सकैए (उठाकाँ सकै-ए)।

दूदाँ कथलाँ कान बहए आ बहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना
से कयाँ जगहमे पाँकिंग कवरौक अन्तस बहै ओकवा। पृष्ठनाँपर
पता नाँगल जे टुंगटुंग नामाँ आ डाँगरव कनैत सभक पाँकिंगमे
काज कलैत बहए।

डलै, डलए मे सेहो ए तबहक भेल। डलए क उठाकाँ डल-ए
सेहो।

संयोगल- (उठाकाँ संयोगल)

लै/ क२

लेव- क (

लेव क प्रयोग गद्यमे लै कक, पद्यमे क२ सकै छी।)

क (जेना वाक)

वाक आ सँगे (उठाकाँ वाँक लै / वाँक क२ सेहो)

सँ- स२ (उठाकाँ)

चन्द्रबिन्दु आ अन्वय- अन्वयमे कँठ धरिक प्रयोग होगत
अछि दूदाँ चन्द्रबिन्दुमे लै। चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

देखियेक/ (देखियेक ले- तहिना अ ये दान्न आ दीर्घक मात्राक
प्रयोग अति)

झर्का / जेका

तैग/ तै

रुधत / रुधत

नमि/ नहि/ नैग/ नग/ ले

सौमै/ सौमै

रैच /

रैच (सोवाउन)

गाए (गाए नहि), रुदा गाएक दूध (गाएक दूध ले।)

बहलै/ गहिलै

हमलै/ अलै

सरै - सभ

सरैरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रौत

रुसरै - सगसरै

रुसलै/ सगसलै/ रुसलै - सगसलै

हमलै आब - हम सभ

आकि- आ कि

सकेहु/ कबेहु (गद्यमे प्रयोगक आरिष्टकता ले)

लोगल/ लोनि

जागल (जागि ले, जेना देव जागल) रुदा **जागि-रुसि** (अर्थ
गविरुतन)

गगल/ जागल

आड/ जाड/ आड/ जाड

ये, कै, सँ, गव (गिहँसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (गिहँसँ सँ
क२) रुदा दूरी रा लेनी रिभक्ति संग बहलैगव गहिल रिभक्ति
एकै सँ सँ। जेना एये सँ।

एकरी, दूरी (रुदा क२ एरी)

मानुषिंह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

, आ/ दिय , आ, आ ले)

এখন/ প্রথম/ অগতঃ

টে/তগ জেনা- টে দুখারে/ তগমে/ তগনে



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

जै/जग जेना- जै कावना/ जगना/ जगले

ए/अग जेना- ए कावना/ अगना/ अगले/ अगना एकव एकटी खास

प्रयोग- नावति कतेक दिसा कहैत बहैत अग

लै/वग जेना लैना/ वगले/ लै दूखाले

नहै/ लो

गेलो/ ललो/ ललै/ गेलहुँ/ ललहुँ/ ललै

जग/ जाहि/ जै

जहिगा/ जाहिगा/ जगगा/ जैगा

एहि/ अहि

अग (वास्तव अतएव अग) / ए

अगहुँ/ अहि/ अहुँ

तग/ तहि/ तै/ ताहि

उहि/ उग

सीहि/ सी

जीहि/ जीरी/ जी

बनेही/ बनहि

तै/ तैग/ तै

जगै/ जगै

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

डहि/ डहि ...

समय गेबैदक संग जखन कोना रिभक्ति जूठै ठै तखन समै

जना समेगव गत्यादि । असंगवमे दन्द आ रिभक्ति जूठल

दन्दे जना दन्दै, दन्देमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

जे

जहिराग/ जाहिराग/ जगौराग/ जेरौराग

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगहु/ अछि/ अहु

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

झीर

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तै/ तै

झापरै/ जपरै

नग/ नै

हुग/ हु

नहि/ नै/ नग

गग/

ले

डहि/ डहि

हुकन अछि/ होव गछि

२.२ मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हस्थ्य

गीटाँक सुटीमे देन विकल्पमेसँ लेखक एडिटर द्वारा कोष कए

हुनन जेरौक चाली:

रौन्ड कएन कए ग्रह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरीरीना, हेमरीना/

होयरीक/होरीयरीक/होमरीक

२. आ/आ२

आ



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्त, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३. क' लेल/क' लेल/क' लेल/क' लेल/क' /क' /क' /क'

४. भ' लेल/भ' लेल/भ' लेल/भ' लेल/भ' /भ' /भ' /भ'

लेल

५. क' लेल/क' लेल

लेल/क' लेल/क' लेल/क' लेल

६.

लिख/लिख लिख, लिख, लिख, लिख /

७. क' लेल/क' लेल/क' लेल/ क' लेल/क' लेल/क' लेल/क' लेल /

क' लेल

८. र' लेल/र' लेल (र' लेल), र' लेल (र' लेल) ९

आइव आइव

१०. आइव: आइव

११. दु:ख दु:ख १

१२. लेल लेल लेल लेल/लेल लेल

१३. देवलिह देवलिह, देवलिह

१४.

देवलिह देवलिह/ देवलिह

१५. लेलिह/ लेलिह लेलिह/ लेलिह/ लेलिह

१६. लेलिह/लेलिह लेलिह/लेलिह

१७. एलिह

एलिह

१८.

र' लेलिह र' लेलिह र' लेलिह

१९. ३ / ३२(र' लेलिह) ३

२०

२१. ३ (र' लेलिह) ३ / ३२

२२. र' लेलिह/र' लेलिह र' लेलिह/र' लेलिह

२३.



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

४४. गहुँटा छै जागत छव छै जागत छव गहुँटा छै जागत छव

४५.

खरौन (हरा)/ खरौन (होली)

४६. वय/ वय क / कय/ वय कय / वय कय/ वय कय

४७. व / वय कय/

कय

४८. एथन / एथन / एथन / एथन

४९.

अखिल अखिल

५०. गखिल गखिल

५१.

धव गव कनका धव गव कनका/कनका

५२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव एकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौ/ कवरौ

६०. त/ त २ तय/तय

६१. तैयारी मे छै-ताय/तै, जेठ-ताय/ताय

६२. गितीमे दु भाग/भाग/भाग

६३. गीतोमे दु भाग/भाग/ भाग/ भाग। गीत गीत

६४. गाय मे / गाय दू गाय गाय

६५. देहि/ दगा दगा/ दगा/ दगा/ दगा/ दगा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

७७. द/ द२/ द३

७८. उ (संयोजक) उ२ (संयोजक)

७९. तका कय तकाय तकाय

८०. गोल (on foot) गोल कयक/ केक

८१.

तहुमे/ तहुमे

८२.

प्रतीक

८३.

रंज कय/ कय / क२

८४. रंजनाय/रंजनाय

८५. रंजना

८६.

द्विका द्विका

८७.

ततल्लि

८८. गवरौवहि/ गवरौवहि/

गवरौवहि/ गवरौवहि

८९. रौव रौव

९०.

तेह तेह(अथवा)

९१. जे जे

९२.

मे/ के मे/के

९३. एथका अथका

९४. भुमिहव भुमिहव

९५. सुयव

९६. सुयवका सुयव

९७. सयवक सयवक +७.

९८.



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

+१. कवगयो/उ कवयो ल देवक /कवयो-कवगयो

++ **पुत्रादि**

पुत्रादि

+२. सगड १-साँटी

सगड १-साँटी

२०. गधे-गधे गेले-गेले

२१. खेदयौक

२२. खेदयौक

२३. वगा

२४. लो- लो - लो

२५. सुमव सुमव

२६.

सुमव (सुमव अर्थमे)

२७. योह योह / योह/ योह/ योह

२८. तातिव

२९. अयाय- अयाय/ अयाय/ अयाय

३०. निम्न- निम्न

३१.

निम्न निम्न

३२. जाँ जाँ

३३.

जाँ (in different sense)-last word of sentence

३४. उत गव आँ जाँ

३५.

ल

३६. खेदाय (play) -खेदाय

३७. शिकायत- शिकायत

३८.



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मानक बिहारी संस्कृतान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ठ- ठ

१०९

. गठ- गठ

११०. कसिअ/ कसिये कसिये

१११. बाकस- बाकने

११२. लोअ/ लोय लोअ

११३. अडवन्त-

उवन्त

११४. बुँसेवहि (different meaning - got
understand)

११५. बुँसएवहि/बुँसेवनि/ बुँसयवहि (understand
himself)

११६. छवि- छव/ छवि लव

११७. खयाअ- खयाय

११८.

मोन गाँवविहि/ मोन गाँवविनि/ मोन गाँवविहि

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग न ग

१२१. जखेनाअ

१२२. जखेनाअ जवनाअ- जखेनाअ/

जखेनाअ

१२३. लोअत

१२४.

गवरेवहि/ गवरेवनि गवरेवहि/ गवरेवनि

१२५.

टिखेट- (to test) टिखेट

१२६. कबखेना (willing to do) कबखेना

१२७. जेकवा- जेकवा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२४. तकवा- तेकवा

१२५.

बिदेसब झलमे/ बिदेसब झलमे

१३०. कबरैगनहूँ/ कबरैगनहूँ/ कबरैगनहूँ कबरैगनहूँ

१३१.

हाथिक (उठावण हागवक)

१३२. उझ रज्ज अथमोच/ अथमोच कागज/ कागज/ कागज

१३३. आषे भाग/ आषे-भाषे

१३४. पिछा / पिछा/ पिछा

१३५. नए/ ल

१३६. रैछा नए

(ल) पिछा जाय

१३७. तखन ल (नए) कहेत अछि। कहे/ सुले/ देखे तब दूदा

कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतेक लोटे

१३९. कयाग-धयाग/ कयाग- धयाग

१४०

- वग न ग

१४१. खेवाग (for playing)

१४२.

डबिहा डबिहा

१४३.

लोखत लोख

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

254



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

. रौनगाँव/ रौनगाँव/ रौनगाँव

१४५. छत्रगाँव

१४६. ककरी कसी

१४७. छत्रा छत्रा

१४८. कर्म कर्म

१४९. डूँगाँव/ डूँगाँव/ डूँगाँव/ डूँगाँव/ डूँगाँव

१५०. एखनका/

खनका

१५१. वन/ विन/ (राकाक अतिम मोह)- वन

१५२. कनका/

कनका

१५३. गवरी गरी

१५४.

. खनका खनका

१५५. नगा नगा नगा/नगा/नगा

१५६. एनगा-नगा

१५७.

नगा नगा नगा/ नगा नगा नगा

१५८. नगा / नगा

१५९.

नगा नगा

१६०. कनका/ कनका/ कनका

१६१. उमगा-उमगा उमगा

१६२. नगा

१६३. नगा/नगा नगा

१६४. गगा/गगा

१६५.

क क

१६६. दगा/दगा/दगा

१६७. गगा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१११.

धवि तक्र

११२.

धुवि लोष्ट

११३. खोबखेरु

११४. रैड

११५. रौ/तु

११६. रौहि (गुमे ग्राम)

११७. रौरी / रौहि

११८.

कबरौआ कबरौआये

११९. एकैठा

१२०. कविता / कवति

१२१.

गुँटि/ गुँट

१२२. बाखनहि बखनहि/ बखनि

१२३.

वगवहि वगवनि वागवहि

१२४.

बुनि (उँटाका बुनि)

१२५. अछि (उँटाका अछि)

१२६. एवनि लोवनि

१२७. रिउल/ रिउल/

रिउल

१२८. कबरौआहि/ कबरौआहि

कबरौआहि/ कबरौआहि

१२९. कबरौआहि/ कबरौआहि

१३०.

आहि/ कि

१३१. गुँटि/

256



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

पुस्तक

१०२. रौतौ जवाय/ **जवाय जवाय** (श्रीनि गंगा)

१०३.

मे मे

१०४.

हौ मे हौ (हौमे हौ रिबक्तिमे लै कए)

१०५. **खेव खेव**

१०६. **खेव(peaceful) खेव**

१०७. **खेवतहि/ खेवतहि/ खेवतहि/खेवतहि/ खेवतहि**

१०८. **खेव मछियाएँ/ खेव मछियाएँ/खेव मछियाएँ**

१०९. **खेव खेव**

२००. **देखाए देखा**

२०१. **देखाएँ**

२०२. **सुख सुख**

२०३.

सालेँ सालेँ

२०४. **सालेँ/ सालेँ/ सालेँ**

२०५. **सालेँ/ सालेँ/ सालेँ**

२०६. **सालेँ/ सालेँ/सालेँ/ सालेँ**

२०७. **सालेँ न सालेँ/**

सालेँ न सालेँ

२०८. **सालेँ/ सालेँ/ सालेँ/ सालेँ**

२०९. **सालेँ/ सालेँ**

२१०. **सालेँ/ सालेँ**

२११. **सालेँ**

सालेँ (अर्थ-परिवर्तन) २१२. **सालेँ/ सालेँ**

२१३. **सालेँ/ सालेँ**

२१४. **सालेँ/ सालेँ**

२१५. **सालेँ/ क**

२१६. **सालेँ/**



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA

छा

२५१. श्री२/ श्री

२५२. भ२ / भ (फॉन्टिक कगीक आतक)

२५३. निधय/ निधय

२२०

.लेखक/ लेखक

२२१. गहिव अक्षर ठा रीदक/ रीदक ठा

२२२. तहि/तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कलि

२२४. तै/

तै / तग

२२५. नग/ नग/ नग/ नग/ तै

२२६. तै/ तै / एवै/

२२७. तै/ तै/ तै/ तै/ तै

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. श्री (come)/ श्री (conjunct ion)

२३०.

श्री (conjunct ion)/ श्री (come)

२३१. कला/ कला/ कला/ कला

२३२. गोलै/ गोलै/ गोलै/ गोलै

२३३. लेखक/ लेखक

२३४. कला/ कला/ कला/ कला

२३५. किड न किड- किड न किड

२३६. कहै/ कहै/ कहै/ कहै

२३७. श्री (come)- श्री (conjunct ion-and)/ श्री । श्री-

श्री / श्री-श्री

२३८. तै/ तै/ तै/ तै

२३९. दृष्टि/ दृष्टि- दृष्टि/ दृष्टि

२४०. एवै/ एवै/ एवै/ एवै

260

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३५०.

बहल (डव)/ बहल (डव) (meaning different)

३५१. तागति/ ताकति

३५२. खवास/ खवास

३५३. रौगि/ रौगि/ रौगि

३५४. जाग/ जाग

३५५. कागज/ कागज/ कागज

३५६. गिले (meaning different - swallow)/ गिले

(थस)

३५७. बहल/ बहल

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year - 2011-12)

(१४१९ मव)

Marriage Days:

Nov.2011 - 20,21,23,25,27,30

Dec.2011 - 1,5,9

January 2012 - 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012 - 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012 - 1,8,9,12

262



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

April 2012 – 15,16,18,25,26

June 2012 – 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012 – 2,3,24,26

March 2012 – 4

April 2012 – 1,2,26

June 2012 – 22

Dviragaman Din:

November 2011 – 27,30

December 2011 – 1,2,5,7,9,12

February 2012 – 22,23,24,26,27,29

March 2012 – 1,2,4,5,9,11,12

April 2012 – 23,25,26,29

May 2012 – 2,3,4,6,7

Mundan Din:

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

December 2011- 1,5

January 2012- 25,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami -20 July

Madhushravani - 2 August

Nag Panchami - 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami - 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 29 August

Hartalika Teej - 31 August



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Chaut hChandr a-1 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -8 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 9 Sept ember

Anant Catur dashi - 11 Sep

Agast yar ghadaan- 12 Sep

Pi t ri Paksha begi ns - 13 Sep

Mahal aya Aar ambh- 13 Sept ember

Vi shwak ar ma Pooj a- 17 Sept ember

Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a-20 Sept ember

Mat ri Navami - 21Sept ember

Kal ashst hapan- 28 Sept ember

Bel naut i - 2 Oct ober

Pat ri ka Pr avesh- 3 Oct ober

Mahast ami - 4 Oct ober

Maha Navami - 5 Oct ober

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Vijaya Dashami – 6 October

Kojagara – 11 October

Dhanteras – 24 October

Diyabati, Shyama Pooja – 26 October

Anakoota/ Govardhana Pooja – 27 October

Bhratri dwitiya/ Chitrakuta Pooja – 28 October

Chhatih-karna – 31 October

Chhatih – sayankalika arghya – 1 November

Devottana Ekadashi – 17 November

Sama Poojarambh – 2 November

Kartik Poornama/ Sama Bisarjan – 10 November

Ravi vratarambh – 27 November

Navanna parvan – 29 November

Vivaha Panchmi – 29 November

Makara/ Teela Sankranti – 15 January



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Nar akni var an chat ur dashi – 21 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a – 28
Januar y

Achl a Sapt mi – 30 Januar y

Mahashi var at ri –20 Febr uary

Hol i kadahan –Fagua –7 Mar ch

Hol i –9 Mar

Var uni Yoga –20 Mar ch

Chai ti navar atr ar ambh – 23 Mar ch

Chai ti Chhat hi vr at a –29 Mar ch

Ram Navami – 1 April

Mesha Sankr anti –Sat uani –13 April

Jur i shi tal –14 April

Akshaya Tritiya –24 April

Ravi Br at Ant – 29 April

Janaki Navami – 30 April

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Vat Savitri -barasait - 20 May

Ganga Dashhar a-30 May

Somavati Amavasya Vrat a- 18 June

Jagannath Rath Yatra- 21 June

Har i Sayan Ekadashi - 30 June

Aashadhi Gur u Poor ni ma-3 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.बिदेह ई-पत्रिकाक सब्धी प्रवाण अंक ब्रैल, तिवहुता आ देवनागरी कगमे *Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions*

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड *Maithili Books Download*

३.मैथिली ऑडियो संकलन *Maithili Audio Downloads*

४.मैथिली वीडियो संकलन *Maithili Videos*



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुबनि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

३. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहयोगी विकसित सेहो एक लेब जाई।

३. बिदेह मैथिली क्रिडा :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अर्बुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्ब-कग "भाबसविक गाछ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गौडक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फाँगल :

<http://videha123.wordpress.com/>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२. बिदेह: मदेह : पहिल तिवहुता (मिथिला-संस्कृत) जानबुत
(बैनांग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-brainle.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ पत्रिका मैथिली पोथीक
आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

बि एन रु मिहै *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly Journal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४, **माधुमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X**
VIDEHA

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मिथिला चित्रकला,
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA केब सदस्यता लिख

अमेन :

एहि समूहक जाल

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VI-DEHA/>

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद अ बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

Subscribe to VIDEHA

enter email address

Powered by us.groups.yahoo.com

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendratthakur123.blogspot.com>


२४. लषा लुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल प्रोडक्शन्स
साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  [Videha Radio](#)

२७.  [Join official Videha facebook group.](#)



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

२५. बिदेह मैथिली नाट्य उद्देश

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६. समादिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार अथवा

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

<http://www.shrutipublication.com/> পাব।

274

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

कुरुक्षेत्रम् अन्तरमनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निवेद्य-शैव्य-समीक्षा, उपासना (सहस्रवैठानि) ,
पद्य-संग्रह (सहस्राधिक टोपडगव), कथा-गल्प (गल्प ग्रन्थ),
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मरुद्र आ अमरुति महा) आ
बौद्धधर्मी-किशोवयुगत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशित बौद्ध लिखित
कर्मणि । कुरुक्षेत्रम् अन्तरमनक, खण्ड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's
KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-
criticism, novel, poems, story, play, epics and
Children-grown-ups literature in single
binding:

Language: Maithili

७२२ पृष्ठ : मूल्य डा. १००/- (for individual
buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/-per copy for
Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside
Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद बिदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,
VIDEHA

मासिक संस्करण, **ISSN 2229-547X**

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print –
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti -
publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिवरुता : देवनागरी 'बिदेह' क,
छिटे संस्करण : बिदेह-प्र-पत्रिका

(<http://www.videha.co.in/>) क छव बला समिति ।



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

संपादक गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print -
version publisher's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

२ संदेश-

[बिदेह ई-पत्रिका बिदेहसभसँ मिथिलासभ आ देहासभ आ गजेन्द्र
ठाकुरसँ सात खंडक निबंध-शब्द-समाधि-उपनिषद्
(सहस्रवर्षीय), पञ्च-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपिचण्ड, कथा-गण (गण
गुह), नाटक (संस्कृत), महाकाव्य (द्वयचरित्र आ अष्टावक्र) आ रीति-
रिवाज-किसोस जगत-संग्रह ककषेत्र आ अतिरिक्त मादें ।]

१. श्री गोरिन्द मा- बिदेहसँ तबगजानन आ उतासि रिश्रितबिसे
माहताया मैथिलीक नहरि जगाउनु, तेद जे अगलक एहि
महातिथिसभमे हम एखन धरि संग नहि दए सकनहुँ । खुलैत छी
अगलसँ समाधि आ बचनमेक आलोचना प्रिय नलीत अछि तै
किछु लिखक मोन भेल । हमर सहायता आ सहयोग अगलसँ
सदा उपनद्ध रहत ।

२. श्री बालकृष्ण मा- मैथिलीमे ई-पत्रिका पारिषद कसँ बना क
जे अगल माहतायाक प्रचार कइ रहन छी, से धन्यवाद । आगाँ
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दइ
रहन छी ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३. श्री विद्यानाथ सा "रिदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्राहक युगमे अगल महिमामय "बिदेह"केँ अगला देहमे एकठे देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोय भेल, तकरा कोला उपलब्ध "मिथिल"सँ नहि बागल जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक मुलाकिस आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ एकठे छैत ।

४. श्री. उदय नावाण सिंह "नटकेता"- जे काज अहाँ कए बहन छी तकर चवटा एक दिन मैथिली भाषाक गतिहासमे लेखत । आनंद भए बहन अछि, ई जानि कए जे एतेक छोटे मैथिल "बिदेह" ई जर्नलकेँ पढि बहन छथि । ...बिदेहक टाजीसम अंक प्रबरीक लेल अतिमदण ।

५. डा. गणेश गुज्जर- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत बैग, गतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्याय आविर्भूत कबत, हमरा विश्वास अछि । अमेरिका श्रुतकामला आ रंधागक सज्ज, सम्वह...अहाँक पोथी कुरुक्षेत्रम् अतिमदण प्रथम दृष्ट्या रूत भर तथी उपयोगी रूमागछ । मैथिलीमे तँ अगला सुकसक प्रायः ई पहिले एहन भरा अरतावक पोथी थिक । हर्यगुनी हमर हार्दिक रंधाग स्वीकार करी ।

६. श्री बागेश्वर सा "बागेश्वर"(आरंभ श्रुत)- "अगला" मिथिलासँ संपर्कित...रिषय रतुसँ अरगत भेलहुँ । ...मेरु सभ कर्मेर अछि ।

७. श्री अजय प्रिया- साहित्य अकादमी- गठबल्ल पब प्रथम मैथिली पारिषद पत्रिका "बिदेह" केर लेल रंधाग आ श्रुतकामला स्वीकार करी ।



मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

4. শ্রী প্রফুল্লকুমার মিত্র "মৌলি"- প্রথম মৌলিগী পাশ্চিক পত্রিকা "বিদেহ" ক প্রকাশনক সমাচাৰ জাণি কলক চকিত স্কদা লৌমী আছাদিত ভেদে। কামচক্ৰে পকডি জাৰি দুবদৃষ্টিক পৰিচয় দেদে, ওৰি জেৰ হমৰ মংগলকাৰা।

১০. শ্রী আদ্যাচরণ মা- কোলা পত্র-পত্রিকাক প্রকাশিত- তাদ্রমে
মৈথিলী পত্রিকাক প্রকাশিতমে কে কতেক সহযোগ কবতাহ- ঙ
ত২ ভবিত্য কহত। ঙ হমব ++ র্যমে ৭৩. র্যক অম্বতর
বহন। এতেক পৌষ মহল যতমে হমব শ্রীক্ষাপূর্ণি আহুতি প্রাপ্ত
হোয়ত- যারত ঠীক-ঠীক জী/ বহর।

১১. শ্রী বিজয় ঠাকুর- মিশিগন বিশ্ববিদ্যালয়- "বিদেহ" পত্রিকাক
 ঐক দেখনহু, সম্পূর্ণ ঐম বঁধাঙ্ক পাত্রে ঐচ্ছিত। পত্রিকাক মগন
 ভরিতা হেতু হার শ্রুতকাশা স্বীকার কখন জ্ঞাও।

১২. শ্রী স্বভাষচন্দ্র যাদব- ঙ্গ-পত্রিকা "রিদেহ" ক রাঁবেমে জাণি
 প্রসন্নতা ভেদ। 'রিদেহ' শিবস্তুব পন্নরিত-পুশিত হো ঞ্গ
 চতুর্দিক ঞ্গপন স্বর্গণ পসাবয় মে কাম্ণা ঞ্গতি।

୧୩. ଶ୍ରୀ ଯୌତୁକୀଶ୍ଵର ପ୍ରାନ୍ତ- ଶ୍ରୀ-ପତ୍ରିକା “ରିଦେହ” କେବଳ ସହଯୋଗୀକ
ଭଗବତୀୟ କାମନା । ଯେଉଁ ଶ୍ରୀ ମହାଯୋଗ ବହତ ।

১৪. ডা. শ্রী ভীষ্মাখ মা- "রিদেহ" গুণ্ঠবল্গুণ পব ঞ্চি তেঁ
"রিদেহ" নাম উঁচি ঞ্চব কতেক কপেঁ একব রিরকণ ভএ সন্কৈত



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अछि । आग-कालि मोनमे उद्वग बहैत अछि, दूदा शीघ्र पुर्ण
सहयोग देबै । कर्मक्षेत्र अन्तर्गत देहि अति प्रसन्नता भेल ।
मैथिलीक लेन अ गठना छी ।

१३. श्री बागबनोम कागडि "ब्रम्ह"- जनकप्रबन्ध- "बिदेह"
आगनागन देहि बहन छी । मैथिलीक अन्तर्गत अन्तर्गत
पहुँचैत तकरा लेन हार्दिक रक्षा । मिथिला बने सभक सँकलन
अपूर्ण । लोकोत्तम सहयोग भेटैत, से विनियम करी ।

१३. श्री बागबनोम बागबनोम- "बिदेह" अ-पत्रिकाक माध्यम सँ रैड
लीक काज कए बहन छी, नातिक अहितास देखैत । एकव
वार्षिक अक अखन छिट्टि निकालैत तँ हमरा पठावैत । कनकतामे
रैहैत छोटैकै हम मागैत पता लिखैत देखैत छिहिन । मोन
तँ होगत अछि जे दिदी आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, दूदा उमर
आरि रैशी भए गेल । शुभकामना देने-बिदेहक मैथिलीक
जोडबैक लेन । .. उक्त प्रकाशन कर्मक्षेत्र अन्तर्गत लेन
रक्षा । अन्तर्गत काज कएन अछि, लीक प्रवृत्ति अछि सात
खण्डमे । दूदा अहाँक मेरा आ मे निःस्वार्थ तखन बुझल
जागत अँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभक दाम लिखल नहि
बहैत । ओहिना सभकै रिनहि देन जागत । (स्पष्टीकरण-
श्रीमान, अहाँक सुचार्थ बिदेह द्वारा अ-प्रकाशित कएन सभक
सामग्री आर्काइभमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/> पर रिला मुक्त डाउनलोड लेन उपलब्ध छै आ
भरियामे सेहो बहैत । एहि आर्काइभक जे कियो प्रकाशक
अन्तर्गत नर क२ छिट्टि कएने प्रकाशित कएन छथि आ तकर ओ
दाम बखल छथि ताहिपर हमर कोला निराला नहि अछि । -
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अन्तर्गत शुभकामनाक संग ।



११. डा. प्रेमचन्द मिश्र- अहाँ मैथिलीमे गूँठबलठगव पहिल
पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अगल अछुत मातृभाषावागक
परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषावागसँ प्रेरित छी,
एकर निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ मुचित करी ।
गूँठबलठगव आद्यापति पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल ।

१२. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह ग-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ
भरि गेल । रिक्ता कतेक प्रगति कऽ बहन अछि...अहाँ सब
अणु आकाशिकेँ भेदि दियो, समस्त रिक्ताक बहसकेँ ताब-ताब
कऽ दियो... । अगल अछुत पत्रक ककषेत्रम् अतर्किक
विषयसभक दृष्टिसँ गावमे साग अछि । रैवाग ।

१३. श्री हेतुकव मा, गठना-जाहि समर्पण तारसँ अगल मिथिला-
मैथिलीक सेराकेँ तनेव छी से खुब अछि । देशक बाजवाणीसँ
भय बहन मैथिलीक शिखर मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली
चेतनाक विकास अरु कबत ।

२०. श्री योगानन्द मा, करिनप्रव, नहेरियामबाय- ककषेत्रम्
अतर्किक पोथीकेँ निकटसँ देखैक असब भेटेल अछि आ
मैथिली जगतक एकटा उद्भूत ओ समामासिक दृष्टिसमूह
हस्ताक्षरक कनसँ परिचयसँ आनंदित छी । "बिदेह"क
देखनागरी सँकषण पठनामे क. ८०/- मे उगल्लै भऽ सकल जे
रिचित लेखक लोकनिक डायटि, परिचय पत्रक ओ बचनारणीक
समाक प्रकाशिसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे
रहूत बास करिता, कथा, विमोह आदिक सच्चि संग्रह देखि आ
आव अगल प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रैवाग श्रीकाव कएल
जाओ ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

२२. श्री जीरकांत- बिदेहक हृदित एक पठन- अद्भुत मेहनति । चरम-चरम । किंतु समालोचना मबखाह..हृदा सल ।

२३. श्री तानचंद्र मा- अगलक ककफेल्स अतर्लिक देखि रूमाएन जेना हम अगल दुगलहुँ अछि । एकव रिशानकाय आगुति अगलक सरसमारेशेताक परिचायक अछि । अगलक बढना सामर्थ्यमे उतबोतब वृद्धि हो, एहि शुतकामनाक संग हार्दिक रूपांग ।

२४. श्रीमती डा नीता मा- अहाँक ककफेल्स अतर्लिक पठनहुँ । ज्ञातिबन्धुव शेट्टारनी, प्रथि मउअ शेट्टारनी आ सीत रसनु आ सत कथा, करिता, उगनास, रान-किशोव साहिव सत उतम डन । मैथिलीक उतबोतब विकासक नम्र दृष्टिगोचर होगत अछि ।

२५. श्री मायाशब्द मिश्र- ककफेल्स अतर्लिक ये हमव उगनास स्त्रीधनक जे विरोध कएन गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी । ... ककफेल्स अतर्लिक पौथीक जेन शुतकामना । (श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२६. श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककफेल्स अतर्लिक पठि मोष हर्षित भ२ जेन..एथन पुवा पठनमे रहूत समय लागत, हृदा जेतक पठनहुँ से आनंदित कएनक ।

२७. श्री केदावलाथ टोषवी- ककफेल्स अतर्लिक अद्भुत लागल, मैथिली साहिव जेन अ पौथी एकठा प्रतिमान रूणत ।

२८. श्री सलशब्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक डनहुँ । एकर अहाँक लिखन - ककफेल्स



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

अतिरिक्त देखनहूँ । मोन आह्लादित भऽ उठन । कोना बचना
तब-उगरी ।

२९. श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्शनी । *ककषेत्रम्*
अतिरिक्त छिष्ट फार्म पठि आ एकव ग्रन्थता देखि मोन प्रसन्न
भऽ गेल, अद्भुत शिल्प, एकव लेन प्रशस्त कऽ बहन छी ।
बिदेहक उन्नतता प्रगतिक शुभकामना ।

३०. श्री नरेन्द्र मा, पठना- बिदेह नियमित देखेत बहैत छी ।
मैथिली लेन अद्भुत काज कऽ बहन छी ।

३१. श्री बामनाथ ठाकुर- कोनकाता- मिथिलाक्षर बिदेह देखि
मोन प्रसन्नतासँ भवि उठन, अकक रिशोन पविदृष्ट आनन्दकारी
अछि ।

३२. श्री तारानन्द रियोगी- बिदेह आ *ककषेत्रम्* अतिरिक्त देखि
टकरिदेव नागि गेल । आश्चर्य । शुभकामना आ रैवाङ्ग ।

३३. श्रीमती प्रेमनता मिश्र “प्रेम”- *ककषेत्रम्* अतिरिक्त पठनहूँ ।
सब बचना उच्चकोष्ठिक नागन । रैवाङ्ग ।

३४. श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रैगुमवाय- *ककषेत्रम्* अतिरिक्त रैव
लीक नागन, आर्गाक सब काज लेन रैवाङ्ग ।

३५. श्री महाप्रकाश-सहकमा- *ककषेत्रम्* अतिरिक्त लीक नागन,
रिशनकाय संगहि उन्नतकोष्ठिक ।

३६. श्री अग्निप्रकाश- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर बिदेह पठन..ङ्ग प्रथम
तँ अछि एकव प्रशिक्षण द्वा ह्य एकव द्वाहसिक कहै ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिथिला चित्रकलाक सुन्दरै रूप अगिला अंकमे आवि रित्तु
रैनाहु ।

३१.श्री मञ्जव स्वर्णमाल-दरभंगा- बिदेहक जतेक प्रशिक्षा कएन
जाए कम होएत । सत टीका उत्तम ।

३२.श्रीमती प्रोफेसर रीणा ठाकुर- ककषेत्रम् अतिरिक्त उत्तम
पठनीय, रिचार्जनीय । जे का देखेत छथि पोथी प्रान्त कबराक
उपाय प्रदेित छथि । शुभकामना ।

३३.श्री दुर्वाणन्द सिंह मा- ककषेत्रम् अतिरिक्त पठनहुँ, रित्तु नीक
सत तबहै ।

४०.श्री ताराकाशु मा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-
बिदेह तँ कण्ठेष्ट प्रारागडवक काज क२ बहन अछि ।
ककषेत्रम् अतिरिक्त अद्भुत नागन ।

४१.डा वरीन्द्र कुमार टोषी- ककषेत्रम् अतिरिक्त रित्तु नीक,
रित्तु मेहनतिक परिणाम । रैनाहु ।

४२.श्री अमरनाथ- ककषेत्रम् अतिरिक्त आ बिदेह दुनु सावनीय
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३.श्री पद्मलक्ष्मी- बिदेहक रैरिध आ निवृत्तता प्रभावित
कबैत अछि, शुभकामना ।

४४.श्री केदार कान्त- ककषेत्रम् अतिरिक्त लेन अलक धन्यवाद,
शुभकामना आ रैनाहु स्वीकार कबी । आ नटिकेताक भूमिका
पठनहुँ । शुभकामना तँ नागन जेना कोना उपन्यास अहाँ द्वारा



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सृजित भेन अछि ह्रस्व पोथी उगथौना पब ज्ञात भेन जे
एहिमे तँ सब रिधा समाहित अछि ।

४३. श्री धनकव ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन छी । फोछे
लौनबीमे छि एहि शिताईक जगतिथिक अगुमार बहेत त२
नीक ।

४३. श्री आशीष मा- अहाँक पुस्तकक सँधमे एतरो लिखरो सँ
अपना क२ नहि लोक सकनहुँ जे जे कितारो मात्र कितारो नहि
थीक, जे एकछा उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सभ पुत्रक सेरो सँ
निर्वतव समूह होगत टिबजोरन क२ प्राप्ति कवत ।

४१. श्री शम्भु कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ फिवाशीनता देखि
आह्लादित भ२ बहन छी । निश्चितकषण कहन जा सकैछ जे
समकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिहासमे बिदेहक नाम स्थापितमे
लिखन जाएत । ओहि ककषेत्रक घटना सब तँ अर्थावहे दिसमे
थतम भ२ गेन बहए ह्रस्व अहाँक ककषेत्र तँ अशेष अछि ।

४४. डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन ज२
कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेन काज
शग-शगानुब धरि पूजनीय बहत ।

४५. श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ककषेत्र अतुल्य आ
बिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेन । अहाँक स्नातृ ठीक बहए
आ उन्नीह रँगन बहए से कायना ।

३०. श्री कुमार बाधक- अहाँक दिशो-निर्देशमे बिदेह पहिन
मैथिली ज-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेन । हमर शुभकायना ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३.१.श्री हुनचन्द्र मा- *प्रसी-* बिदेह:सदेह पठन बनी हूदा
ककफेवम् अन्तर्गत देखि रूढ १३ देरी लेन बाधा भ२
गेनहू । आरि विद्यास भ२ गेन जे मैथिली नहि मरत । अमेय
शुभकामना ।

३.२.श्री विभूति आनन्द- बिदेह:सदेह देखि, ओकर रिस्तार देखि
अति प्रसन्नता लेन ।

३.३.श्री मालेश्वर मन्त्र- ककफेवम् अन्तर्गत एकव भयता देखि
अति प्रसन्नता लेन, एतेक विमान ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि
देखल बनी । एहिना तबियामे काज करैत बनी, शुभकामना ।

३.४.श्री विद्यानन्द मा- आग:आग:एमकोनकाता- ककफेवम्
अन्तर्गत रिस्तार, उगाडक संग श्रारता देखि अति प्रसन्नता
लेन । अहाँक अलक धनराद, कतेक रैवधर्म हम लयावेत हुनहू
जे सत पैघ मेहबमे मैथिली नागबैबीक स्थापना होअ, अहाँ
ओकरा रैवधर्म क२ बहन डी, अलक धनराद ।

३.५.श्री अवधन ठाकुर- ककफेवम् अन्तर्गत मैथिली साहित्यमे
कएन गेन एहि तबलक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.६.श्री कमाव परम- ककफेवम् अन्तर्गत पठि बहन डी । किछ
नयकथा पठन अछि, रूढ मार्गिक डन ।

३.७. श्री प्रदीप रिहारी- ककफेवम् अन्तर्गत देखन, रैवाड ।

३.८.डा मणिकान्त ठाकुर-कैनिहोर्निया- अपन रिक्का नियमित
मेराम हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भ२ गेन अछि ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३.९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय । दूध
होत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क
परोत छी ।

३०.श्री देवर्षिकव नरीन- बिदेहक निवृत्तता आ रिशोन स्वक-
रिशोन पाठक रक्षा, एकवा एतिहासिक रँगरेत अछि ।

३१.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रँहूत नीक ।
एखन किछ परोशनीमे छी, झुदा शीघ्र सहयोग देई ।

३२.श्री फजलुर रहमान हामिनी- ककषेत्रम् अत्रुर्गिक मे एतेक
मेहनतक लेन अहाँ साधुरादक अधिकारी छी ।

३३.श्री लक्ष्मी मा "सागर"- मैथिलीमे चमकौक कर्पे अहाँक
प्रवेशे आनन्दकारी अछि । ..अहाँकेँ एखन आव..दुव..रँहूत दुवधवि
जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न बनी ।

३४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन- ककषेत्रम् अत्रुर्गिक पठनहूँ ।
कथा सत आ उग्यास सहस्रौठनि पूर्णकर्पे पठि लेन छी ।
गाम-घबक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रौठनिमे
अछि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उग्यास मैथिली
लेखनमे विविधता अवनक अछि । समालोचना शीघ्रमे अहाँक
दृष्टि ऐतिहासिक नहि रवन् सामाजिक आ कलाकारक अछि, से
प्रशंसनीय ।

३५.श्री अशोक मा- अर्धमास मिथिला विकास परिवर्तन- ककषेत्रम्
अत्रुर्गिक लेन रँवाङ्ग आ आगाँ लेन शुभकामना ।

३६.श्री ठाकुर प्रसाद झा- अत्रुर्गिक प्रयास । धनरादक संग
प्रार्थना जे अग्न माष्टि-पानिकेँ ध्यानमे बाधि अकक समायोजन



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कएन ज्ञाए । नर अंक धरि प्रयास सवाहणीय । बिदेहकेँ रूत-
रूत धरि जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सदाव (आलेख) नगा बहन
हुनि । सभैसँ प्रहारीय- पठनीय ।

३१.बृद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित
'बिदेह'आ 'कवचक'अर्थात् 'बिदेह' पत्रिका आ बिदेह
सोपान । की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रश्न मे
मैथिली क विकास होयत,बिदेह ।

३२.श्री वृद्धिनाथ मिश्र- गजेन्द्रजी, अहाँक प्रत्येक
'कवचक'अर्थात् 'बिदेह' पत्रिका मे गदगद भय होत, हृदय
अवगत होत । हार्दिक प्रतिक्रिया ।

३३.श्री प्रेमेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी । 'कवचक'
'अर्थात्' पत्रिका मे गदगद आ ललित होत ।

१०.श्री वरिन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठित रहैत छी । प्रेमेश्वर
प्रेमेश्वर मैथिली गजबगब आलेख पठनहुँ । मैथिली गजब कत
मै कत छी होलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन ज्ञान-
पहिचान लोकक छुट कएल हुनि । जेना मैथिलीमे गुरु
पदवा बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमेश्वर जी ओ
आलेखमे ओ स्पष्ट निखल हुनि जे किनको नाम जे छुट होत
हुनि तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरीक द्वारा,
एहिमे आन कोना कारन नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि
प्रियगब रिक्त आलेख सदाव आमंत्रित अछि । -सम्पादक)

११.श्री प्रेमेश्वर मा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक मैथिली ओपन
'कवचक'अर्थात् 'बिदेह' सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२. श्री हनुमन्त सा- ककच्छेद्रम् अतर्जिक मैथिलीमे अगल तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन लोभन देखबामे आएन जे लेखकक हरीदेवकर्म जूडन बहरीक काव्य अछि ।

१३. श्री स्वकांत सोम- ककच्छेद्रम् अतर्जिक मे समाजक गतिहास आ वर्तमान अहाँक जूड १२ रीत नीक नागन, अहाँ एहि स्फेदमे आव आगाँ काज कवरै मे आशि अछि ।

१४. श्रीहनुमन्त मदन मिश्र- ककच्छेद्रम् अतर्जिक मल कितार मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशान संग्रहक मोध कएन जा सकैत अछि । भविष्यक लेन शुभकामना ।

१५. श्रीहनुमन्त कमला टोपरी- मैथिलीमे ककच्छेद्रम् अतर्जिक मल पोथी आरंभ जे गुण आ कग दुनूमे निम्न होअ, मे रीत दिनसँ आकाँक्षा डन, ओ आरंभ जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँ आशि अछि ।

१६. श्री उदय चन्द्र सा "रिनाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएल अछि मे मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल डन । शुभकामना । अहाँकै एखन रीत काज आव कबरीक अछि ।

१७. श्री प्रमोद कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँकै तेँठ एकठा सक्तीय स्रष्टा रीति गेल । अहाँ जतेक काज एहि रीतिमे क२ गेल छी तहिना हजार गुणा आव लेगीक आशि अछि ।



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

१। श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक्रम प्रशंसा जेन शेर, नहि भेटैत अछि। अहाँक कार्यक्रम अन्तर्गत सम्पूर्ण कर्ण पठि ज्ञानहूँ। इच्छाक रीति नीक लागत।

१२। श्री लालेन्द्र कुमार सा- बिदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-पत्रिका भेटैत रहैत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि रीति गरि होगत अछि। अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकै हार्दिक शुभकामना।

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन। बिदेह- प्रथम मैथिली पारिषद ई-पत्रिका। ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-संपादक: उमेश मंडल। सलयक संपादक: शिव कुमार सा आ मन्नाजी (मन्नाज कुमार कर्ण)। भाषा-संपादक: लालेन्द्र कुमार सा आ पञ्जीकान्त बिश्वनाथ सा। कवि-संपादक: रवीन्द्र कुमार आ वसिष्ठ लेखी सिंह। संपादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रम्या आ डा. राजीव कुमार रम्या। संपादक-नाटक-वार्ता-चर्चा-लेख ठाकुर। संपादक-सूचना-संपर्क-समाद-



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पुन्य मन्त्र आ धिया सा । सम्पादक- अश्वराद बिभाग- बिनीत
उपेय ।

बचनाकाब अपन यौनिक आ अश्रुकाशित बचना (झकब
यौनिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छहि)
ggajendra@videha.com ले मेल अटैचमेण्टक रूपमें
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि ।
बचनाक संग बचनाकाब अपन सफ़िष्ट परिचय आ अपन कवन
लेख लेखे पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमें
छाँटा बहल, जे छ बचना यौनिक अछि, आ पहिल प्रकाशिक
हेतु बिदेह (पारिषद) छ पत्रिकालेँ देल जा बहन अछि । मेल
प्राप्त होसबैक बाद गथासंभार शीघ्र (सात दिनक भीतर) एक
प्रकाशिक अंकक मुद्रा देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली
पारिषद छ पत्रिका अछि आ एहिमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बंधित बचना प्रकाशित कएल जायत
अछि । एहि छ पत्रिकालेँ शीघ्रति नक्की ठाँव द्वारा मासक ०९
आ १३ तिथिलेँ छ प्रकाशित कएल जायत अछि ।

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमें प्रकाशित
संस्था बचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संप्रदायक
नगमें छहि । बचनाक अश्वराद आ पुनः प्रकाशन किरा
आर्काइवक उपयोगक अधिकार किराक हेतु
ggajendra@videha.co.in पर संपर्क कक । एहि
सांगैलेँ शीघ्रति सा ठाँव, मधुनिका टोपरी आ बम्बि हिसा द्वारा
डिजाइन कएल गेल ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह अथवा मैथिली पक्षिक अ विदेह १०४ म अंक १५ अप्रैल २०१२



(वर्ष ५ मास ५२ अंक १०४,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



मिथिला